१९६५ से प्रकाशित

अंक : आश्विन-अगहन

अंक-३१

भोजपुरी वार्ता

आश्विन - प्रतिपदा
२०८३

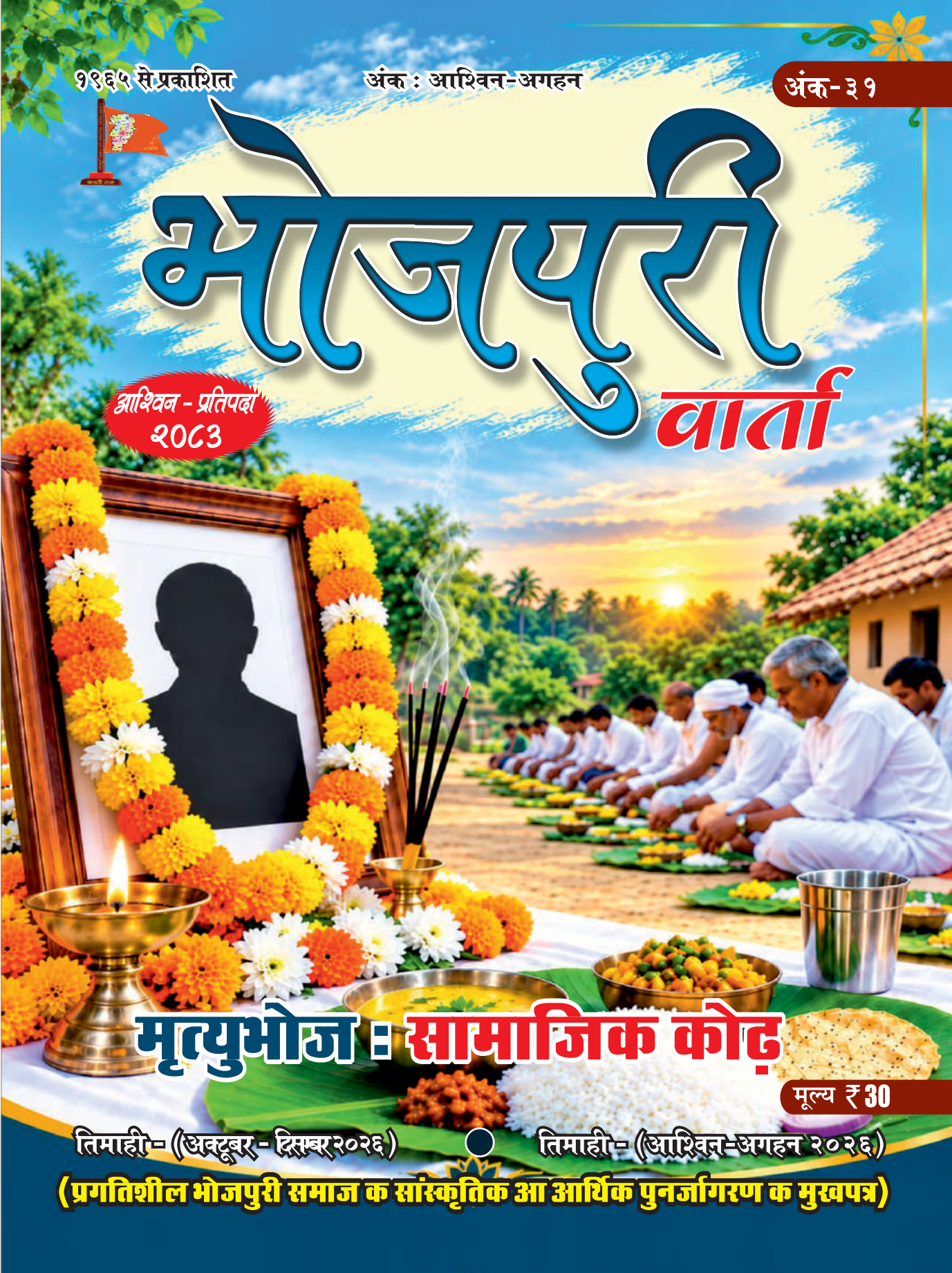

मृत्युभोज : सामाजिक कोढ़

मूल्य ₹ 30

तिमाही- (अक्टूबर - दिसम्बर २०२६) ● तिमाही- (आश्विन-अगहन २०२६)

(प्रगतिशील भोजपुरी समाज क सांस्कृतिक आ आर्थिक पुनर्जागरण क मुखपत्र)

प्रगतिशील भोजपुरी समाज का चाहत बा?

1. समान आर्थिक समस्या, समान आर्थिक सम्पदा, समान सांस्कृतिक विरासत की आधार पर भोजपुरी क्षेत्र के विशेष सामाजिक, आर्थिक इकाई के रूप में गठन।
2. भोजपुरी क्षेत्र के भोजपुरी भाषा, संस्कृति समेत सामाजिक आ आर्थिक विकास।
3. भोजपुरी भाषा के संवैधानिक मान्यता।
4. कृषि के उद्योग कऽ दर्जा।
5. अलग भोजपुर राज्य कऽ गठन।
6. अश्लील गीत-संगीत, विज्ञापन आ शराब पर प्रतिबन्ध।
7. भोजपुरी रेजीमेन्ट कऽ स्थापना।
8. प्रगतिशील भोजपुरी समाज भोजपुरी क्षेत्र के भौतिक, आधिभौतिक आ आध्यात्मिक सम्पदा कऽ अधिक से अधिक उपयोग आ विवेकपूर्ण ढंग से वितरण क के रोटी, कपड़ा, मकान, दवाई आ शिक्षा के गारंटी दिहल चाहऽता।
9. प्रवासी भोजपुरी क्षेत्र के मजदूरन के मौत पर राज्य आ केन्द्र सरकार द्वारा 10-10 लाख रूपया कऽ मुआवजा।
10. 100% रोजगार के सृजन के साथ आर्थिक लोकतंत्र क स्थापना।
11. निःशुल्क अउर एक समान शिक्षा आ चिकित्सा के व्यवस्था।
12. आयकर के खात्मा।
13. परतंत्र से स्वतंत्र।

प्रगतिशील भोजपुरी समाज क सदस्यता लेके ए आन्दोलन से जुड़ी सभे।



www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी वार्ता

अक्टूबर-दिसम्बर २०२६
आश्विन प्रतिपदा
विक्रम संवत् २०८३, अंक - ३१
(भोजपुरी के सामाजिक, सांस्कृतिक आ आर्थिक पुनर्जागरण कऽ मुख-पत्र)

प्रधान कार्यालय
प्रगतिशील भोजपुरी समाज
लेन नं०-३/१४, भक्ती नगर कालोनी,
पाण्डेयपुर, वाराणसी (उ.प्र.) २२१००२
मो० - ८८६३९६९८८८

ई-मेल :
bhojpuriwarta@gmail.com,
bhojpurivarta@rediffmail.com

संस्थापक संपादक
आचार्य प्रतापादित्य

संपादक
रवीन्द्र नाथ यादव
मो०- ७०८१११०९९०, ९४५०७७४२४१

सह संपादक
विकास तिवारी ''विक्की''
मो०- ७९०३९६५३८६

उप संपादक
मनोज भारती
मो० ६३९४०२७९६९

वितरण व्यवस्था
उत्तम कुमार

संचालन, संपादन
अवैतनिक आ अव्यवसायिक

क्षेत्रीय कार्यालय
धर्मेन्द्र यादव
ग्राम - डकीनगंज, पोस्ट - एकइल, जिला- बलिया (उ० प्र०) २२१७११
मो०-७०८१११०९९०

मुद्रक
मेगा प्रेस एण्ड ग्राफिक्स
बशारतपुर, गोरखपुर
मो० 7800333751
संजय कुमार शर्मा
ग्राफिक्स एवं डिजाइन
प्रकाशक - प्रोग्रेसिव फेडरेशन ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली

सहयोग राशि –
एक प्रति - 30/-
बैंक - प्रगतिशील भोजपुरी समाज
खाता नं. **360501010230476**
IFSC - UBIN - 0536059

एह अंक में प्रकाशित लेख आदि में व्यक्त विचार लेखक कऽ आपन मत हऽ। संपादक मण्डल कऽ ओसे सहमति भईल जरुरी नईखे। विवादके भइला पऽ सगरो विवाद कऽ निपटारा वाराणसी न्यायालय के अनतर्गत होई। -संपादक

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी वार्ता - आश्विन प्रतिपदा (एकतीसवॉ अंक)

एह अंक में

क्र.	सूची	लेखक/कवि	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय– पूँजीवाद के पिजरा में कैद आदमी आ मुक्ति के राह	रवीन्द्र नाथ यादव	3–5
2.	महाभारत एगो इतिहास	श्री प्रभात रंजन सरकार	6–9
3.	काहे ना बोलेलऽ भोजपुरी (कविता)	राजनंदन	9
4.	कपरफोरउवल	डा0 आदित्य कुमार अंशु	10–11
5.	जनसेवक (कविता)	लल्लन प्रसाद पाण्डेय 'ट्रेन'	11
6.	लोक–लीला (कविता)	सुशीला पाल	11
7.	मुखाग्नि	डा0 भोला प्रसाद आग्नेय	12–14
8.	भोजपुरी कविता	आचार्य पुष्येषानंद अवधूत	14
9.	दोस्ती में ददार (कविता)	अमरजीत अमर	14
10.	दवाई के रिएक्शन	श्रीमती आशा श्रीवास्तव	15–17
11.	वोटवा के राजनीत (कविता)	कमल सीवानी	17
12.	मृत्युभोज : सामाजिक कोढ़	डा0 रामगोविन्द प्रजापति	18–20
13.	आ गइल फेनु चुनाव	वृजमोहन प्रसाद अनारी	20
14.	चलऽ चली गँउवाँ की ओर	राजेश भोजपुरिया	21–23
15.	खेलि के भीतर क खेला	रवीन्द्र श्रीवास्तव	23
16.	बढ़ावन	कृष्ण देव घायल	24–25
17.	चढ़ाई (कविता)	मारकण्डेय शारदेय	25
18.	भोजपुरी बोले वाला लोगन के सम्मान मिले	बाबा भोजपुरिया	26–29
19.	बागी बलिया	शम्स जमीन	29
20.	(मितवा) स्वतंत्रोत्तर समग्र राष्ट्रीय यशोगान	डा0 जौहर शफियाबादी	30
21.	ट्रम्प बेचिहैं झालर, उहो जबरदस्ती पकड़ के कॉलर	कनक किशोर	31–33
22	जेकर मूड़े मउर बन्हाइल (कविता)	आचार्य रामाधार व्याकुल	33
23.	कहाँ खोतवा लगइबू (नित्यानंद आनंद)	अनजान राही	34–36
24.	गजल	मनोज भावुक	36
25.	दैहिक आ शारीरिक शोषण	आचाये पुण्यषानंद	37–39
26.	बेचारगी लोकतंत्र के : समाधान भोजपुरी समाज के	कालू राम	40–42
27.	भोजपुरी में का बा ?	डा0 संतोष पटेल	43–44
28.	देवता आ राक्षस	गिरजा शंकर यादव	44
29.	दीया तरे अन्हार	रामसोच यादव सोच	45
30.	एगो अनाथ लइका के देवी से गुहार	सुशीला पाल	45
31.	बीच बजारे कबिरा रोई	बलभद्र	46–48
31.	चनवा	अवध बिहारी मितवा	49–51
32.	गीत	; ;	51
32.	आदमी आ आदमी के जीवन	गिरजा शंकर यादव	52–53
33.	तिरंगा चोली	रामकुमार गिरि	53
34.	(समाचार) भोजपुरी भवन नाम वापस हो...		54
35.	(समाचार) भोजन देवे वाला भूखा फिर कइसन आजादी		55
36.	(समाचार) भोजपुरी आंदोलन बनाम असली आजादी		56

www.bhojpurisahityangan.com

सम्पादकीय

पूँजीवाद के पिंजरा में कैद आदमी आ मुक्ति के राह



- रविन्द्र नाथ यादव



माटी से कटल आदमी, बाजार के गुलाम हो गइल। अब स्वावलम्बन के सवाल बा। पूँजीवाद आज खाली बाजार में नइखे। ऊ हमनी के जीवन के रंध्र-रंध्र में समा गइल बा। हम ओकरा के देखत नइखी, बाकिर ओकर कर्मधारा के असर हर घरी महसूस करत बानी। ठीक ओइसहीं जइसे ईश्वर के सर्वव्यापकता के अनुभूति त होला, बाकिर ओकरा के खोजे खातिर आदमी मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर, गुफा आ तीर्थ तक भटकत रहेला।

फरक बस एतना बा कि ईश्वर के खोज में आदमी बाहर निकलेला, बाकिर पूँजीवाद के खोज में बाहर जाए के जरूरत नइखे ऊ त हमनी के घर, शिक्षा, खेती, रोजगार, राजनीति, संस्कृति, खानपान, मनोरंजन आ सोच तक में घुसल बा। सवाल ई नइखे कि पूँजीवाद बा कि नइखे। सवाल ई बा कि हम ओकरा के पहचानत काहे नइखी? समस्या के पहिचान बिना समाधान के राह कहाँ से खुली? पूँजीवादी व्यवस्था के सबसे बड़ ताकत ओकर मशीन, पूँजी अथवा बाजार मात्र नइखे। ओकर असली ताकत बा मनुष्य के जरूरत के धीरे-धीरे इच्छा में, इच्छा के लालच में आ लालच के जीवन-दर्शन में बदल देवे के क्षमता। आज आदमी के जरूरत के हिसाब से बाजार नइखे चलत, बाजार आदमी के जरूरत तय करे लागल बा। जेकरा बिना जिनगी आराम से चल सकेला, ओकरा के जरूरी बना के बेचल जा रहल बा। जे चीज काल्ह तक विलासिता रहे, ऊ आज प्रतिष्ठा के प्रतीक बा। आ जेकरा लगे ई सब नइखे, ओकर भीतर हीनता के भाव पैदा कइल जा रहल बा। एही से भोगवाद बढ़त बा, बाकिर जीवन के सार घटत जा रहल बा।

सुविधा बढ़ल, संतोष घटल। सूचना बढ़ल, विवेक घटल। बाजार बढ़ल, समाज घटल। उत्पादन बढ़ल, बेरोजगारी बढ़ल। संपत्ति बढ़ल, असमानता गहराइल। ई कइसन विकास बा?

भारत प्राकृतिक संसाधन, जलवायु, श्रमशक्ति, कृषि-क्षमता आ विविध सांस्कृतिक संपदा से भरपूर देश ह। बाकिर करोड़ों लोग आजो रोजगार, सम्मानजनक आय, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य आ बुनियादी सुविधा खातिर संघर्षरत बा। हम अंतरिक्ष में जाए के तैयारी कर रहल बानी, बाकिर धरती पर किसान के फसल के उचित मूल्य के सवाल आजो अधूरा बा। हम डिजिटल क्रांति के बात करत बानी, बाकिर लाखों युवा रोजगार के तलाश में दर-दर भटक रहल बा। हम विश्वगुरु बने के सपना देखत बानी, बाकिर समाज के भीतर भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महँगाई, सामाजिक विभाजन आ अवसर के असमानता अबहियों चुनौती बनल बा। ई विरोधाभास संयोग ना ह व्यवस्था के सवाल ह।

व्यवस्था के छेद में लुकाइल भ्रष्टाचार के अक्सर कुछ बेईमान व्यक्तियन के समस्या मान लिहल जाला। बाकिर सवाल ई बा कि अगर व्यवस्था बार-बार एके तरह के भ्रष्ट आचरण पैदा करत रहे, त दोष खाली आदमी के बा कि व्यवस्था के बनावट में भी कुछ गड़बड़ बा? भ्रष्टाचार ऊ तोता ह जे हर तंत्र के नजर में रहेला, बाकिर पिंजरा खोलते ही अपना मन से उड़ जाला। कागज पर नियम बा। फाइल में प्रक्रिया बा।

www.bhojpurisahityangan.com

भाषण में पारदर्शिता बा। घोषणा में जनहित बा। बाकिर आम आदमी जब अपना हक खातिर दफ्तर के चक्कर काटेला, तब ओकरा सामने व्यवस्था के असली चेहरा खुल जाला। एही जगह पूँजी, सत्ता आ नौकरशाही के गठजोड़ पर गंभीर सवाल उठेला। जब नीति के निर्माण में आम आदमी के जरूरत से अधिक धनबल, बाजार आ प्रभावशाली हित हावी हो जाला, तब लोकतंत्र के आत्मा कमजोर होखे लागेला।

क्षेत्रीयता काहे खटकत बा?

क्षेत्रीयता अगर संकीर्णता ह, त ओकर विरोध स्वाभाविक बा। बाकिर क्षेत्रीय आत्मनिर्भरता संकीर्णता ना, विकेंद्रीकरण के आधार हो सकेला। भोजपुरी क्षेत्र के किसान अगर अपना माटी में उत्पादन करे, स्थानीय संसाधन से उद्योग खड़ा होखे, स्थानीय श्रम के सम्मान मिले, स्थानीय नौजवान के रोजगार अपने क्षेत्र में मिले, स्थानीय संस्कृति के संरक्षण होखे आ स्थानीय समाज अपना विकास के दिशा खुद तय करे त ई अलगाव ना, आत्मनिर्भरता के प्रयोग हो सकेला। स्वावलम्बन के मतलब दुनिया से कट गइल इहे फर्क समझे के जरूरत बा।

भोजपुरी समाज : पहचान से आगे, सामाजिक प्रयोग के सवाल – भोजपुरी खाली बोली नइखे। ई एगो विशाल सांस्कृतिक-सामाजिक क्षेत्र के पहचान ह। एह माटी में खेती बा, श्रम बा, लोकस्मृति बा, लोककला बा, गीत बा, परिश्रम बा, प्रवास के पीड़ा बा आ संघर्ष के लंबा इतिहास बा। बाकिर अब सवाल खाली भोजपुरी के मान्यता के नइखे। सवाल बा भोजपुरी समाज अपना संसाधन, श्रम, प्रतिभा आ संस्कृति के आधार पर कइसन समाज बनावे के चाही? इहवें से प्रगतिशील भोजपुरी समाज के समाज-आन्दोलन के अर्थ सामने आवेला। अगर भोजपुरी समाज अपना खेती के खाली जीविका ना, बल्कि संगठित आर्थिक शक्ति माने, स्थानीय संसाधन के कच्चा माल बनाके बाहर भेजे के बजाय स्थानीय मूल्यवर्धन करे, गाँव के नौजवान के पलायन के मजबूरी ना, विकल्प के सवाल माने, शिक्षा के डिग्री ना, जीवनोपयोगी ज्ञान से जोड़े, महिला, किसान, मजदूर, कारीगर, युवा आ छोट उत्पादक के आर्थिक भागीदारी बढ़ावे, आ ग्राम समाज के निर्णय में आम आदमी के वास्तविक भागीदारी सुनिश्चित करे त समाज-निर्माण के एगो अलग माडल पर प्रयोग संभव बा।

आत्मगौरव : स्वतंत्रता के भीतर के आवाज – गुलामी खाली राजनीतिक ना होला। जब आदमी अपना माटी के उत्पादन पर भरोसा ना करे, अपना श्रम के सम्मान ना करे, अपना भाषा से संकोच करे, अपना संस्कृति के हीन समझे आ हर जरूरत खातिर बाहर के बाजार के तरफ ताके त राजनीतिक स्वतंत्रता के बावजूद आर्थिक आ मानसिक परतंत्रता बचल रह सकेला। एही से आत्मगौरव के सवाल महत्त्वपूर्ण बा। अपनी भाषा पर गर्व। अपनी माटी पर गर्व। अपने श्रम पर गर्व। अपने उत्पादन पर भरोसा। अपने समाज के सामूहिक शक्ति पर विश्वास। ई भावना अगर आर्थिक स्वावलम्बन से जुड़ जाव, त आत्मगौरव खाली भावना ना रह जाई ऊ सामाजिक शक्ति बन सकेला।

अब सवाल व्यवस्था के बा आज जरूरत एगो अउरी नारा के ना, बल्कि एगो व्यवहारिक सामाजिक दिशा के बा। भोजपुरी समाज के सामने सवाल ई होखे के चाहीं – हमार खेती के भविष्य का बा? हमार नौजवान कहाँ काम करी? हमार पानी, जमीन, वन आ खनिज के उपयोग के फैसला के करी? हमार स्थानीय बाजार पर केकर नियंत्रण बा? हमार शिक्षा समाज के जरूरत से कतना जुड़ल बा? हमार उत्पादन के मूल्य के तय करेला? हमार गाँव से निकलल श्रम के लाभ आखिर कहाँ जमा होला? जवाब अगर ई सवालन से खोजल जाई, त साफ दिखाई दी कि सामाजिक परिवर्तन केवल सत्ता बदललासे ना, आर्थिक आ सामाजिक संरचना में परिवर्तन से जुड़ल बा। एही संदर्भ में प्रगतिशील भोजपुरी समाज के प्रयोग के एगो संभावित सामाजिक विकल्प के रूप में देखल जा सकेला जहाँ क्षेत्रीय आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बन, आर्थिक लोकतंत्र, स्थानीय संसाधन पर समाज के सहभागिता आ मानवीय गरिमा के केंद्र में रखे के कोशिश होखे।

www.bhojpurisahityangan.com

आखिरी सवाल हम चाँद-मंगल पर जाए के तैयारी करत बानी। बाकिर का हम अपना गाँव के बेरोजगार नौजवानन के भविष्य तक पहुँच पवलीं? हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता बना रहल बानी। बाकिर का हम अपना समाज के वास्तविक बुद्धि के सम्मान दे पवलीं? हम अरबों-खरबों के अर्थव्यवस्था के बात करत बानी। बाकिर का हम ओह अर्थव्यवस्था में अंतिम आदमी के सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित कर पवलीं?

आ सबसे बड़ा सवाल अगर आदमी के विकास के केंद्र में आदमी नइखे, त विकास आखिर काहे के? समय आ गइल बा कि भोजपुरी समाज अपना अतीत के गौरव पर खाली गर्व ना करे, बल्कि ओकरा से भविष्य के दिशा निकाले। माटी से जुड़ल समाज, श्रम से जुड़ल अर्थव्यवस्था, स्थानीय संसाधन पर स्थानीय सहभागिता, शिक्षा से विवेक, संस्कृति से आत्मगौरव आ स्वावलम्बन से स्वतंत्रता ई सब मिल के एगो नया सामाजिक प्रयोग के आधार बन सकेला। भोजपुरी समाज के असली सवाल अब ई ना कि "हमरा पहचान के मान्यता कब मिली?" असली सवाल बा "मान्यता मिलला के बाद हम अपना समाज के कइसन बनाइब?" काहे कि पहचान अगर आत्मनिर्भरता ना दे, संस्कृति अगर आत्मगौरव ना दे, शिक्षा अगर विवेक ना दे, विकास अगर सम्मानजनक जीवन ना दे त फेर आदमी के जीवन में बदलल का? माटी के पहिचान से स्वावलम्बन तक, स्वावलम्बन से आत्मगौरव तक, आ आत्मगौरव से सामाजिक पुनर्निर्माण तक एही राह पर अब भोजपुरी समाज के आन्दोलन आगे बढ़ी।

www.bhojpurisahityangan.com

दर्शन

महाभारत एगो इतिहास

-श्री प्रभात रंजन सरकार



महाभारत एगो इतिहास ह। भारतीय रीति के अनुसार ओह समय किताबन के चार भाग में बाँटल जात रहे- काव्य, पुराण, इतिकथा आ इतिहास। काव्य के का कहल जाला? जे घटना वास्तव में सत्य ना होखे, बाकिर ओकरा के समझावे के तरीका बहुत रोचक होखे, ओह तरह से घटना के वर्णन कइल जाव एहके काव्य कहल गइल। जइसे कालिदास काव्य लिखले रहन। दूसर रहे पुराण। पुराण में घटना जरूरी नइखे कि सत्य होखे, बाकिर लोकशिक्षा खातिर ओकरा में बहुत महत्व रहे। जइसे रामायण एगो पुराण ह। व्यास लोकशिक्षा खातिर अठारह गो पुराण लिखले रहन

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्"

अर्थात् अठारहों पुराण लिखे के उद्देश्य ई रहे कि कहानी के माध्यम से लोगन के समझावल जाव परोपकार करे से पुण्य होला आ दूसर के पीड़ा देला से पाप होला। तीसर ह इतिकथा। इतिकथा के अंग्रेजी में History कहल जाला। इतिकथा माने घटना के पंजीकरण कब का भइल, ओकरा बाद का भइल, ओकरा बाद कहाँ लड़ाई भइल, फेर का भइल ई सभ घटना के क्रमबद्ध लेखा ह। एकर लोकशिक्षा में विशेष मूल्य जरूरी नइखे। कब कवन राजा पैदा भइल, कब कवन राजा मरल ई जानला से आम जनता के बहुत फायदा नइखे। बाकिर समय के गति कहाँ से किधर हो रहल बा, समाज कहाँ से कहाँ जा रहल बा, समाज के गति कइसन बा एकर दिशा के विश्लेषण इतिकथा से कइल जा सकेला।

इतिहास के अर्थ आ शिवजी के योगदान

समाज के पुरान अवस्था कइसन रहे आ वर्तमान अवस्था कइसन बा, ई समझे खातिर इतिहास अर्थात् इतिकथा के जरूरत होला। एह ष्टि से इतिकथा के मूल्य बा। संस्कृत में इतिकथा के पुराकथा आ इतिवृत्त भी कहल गइल बाय अंग्रेजी में एकरा के History कहल जाला। "इतिहास" शब्द के अर्थ ह 'इतिहासति' अर्थात् हँसे वाला, उज्ज्वल वस्तु, प्रोज्ज्वल वस्तु। इतिवृत्त के जे हिस्सा लोकशिक्षा देला, इतिहास के मूल उद्देश्य ओही हिस्सा के समझावल ह। स्कूल-कॉलेज में बच्चा लोग "भारतवर्ष के इतिहास" पढ़ेला, असल में ऊ भारतवर्ष के इतिहास ना, बल्कि भारतवर्ष के इतिकथा पढ़ेला। ऊ Indian History पढ़ेला, भारत के इतिहास ना।

"धर्मार्थकाममोक्षार्थं नीतिवाक्यसमन्वितम्।

पुरावृत्तकथायुक्तं इतिहासं प्रचक्षतेम्"

जे ग्रंथ के पढ़ला से धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष के प्राप्ति होखे, ऊ इतिहास ह। आज से प्रायः सात हजार साल पहिले भगवान शिव के आगमन भइल। सदाशिव के पहिले मनुष्य पशु जइसन जीवन जीअत रहे, बाकिर उनकरा में कुछ-कुछ विद्या भी रहे। केहू थोड़ा कला जानत रहे, केहू स्थापत्य के, केहू औषधि के। लोग थोड़ा-थोड़ा सभ कुछ जानत रहे, बाकिर ओकरा में क्रमबद्धता आ वैज्ञानिक दृष्टिकोण ना रहे। केहू कवनो दवाई जानत रहे त ओकरा के दोसरा से बतावत ना रहे। तीन आदमी के जानकारी एक जगह जुट जाई त पहिला आदमी के ज्ञान के महत्व घट जाई। एही से ज्ञान बिखरल रहे। शिवजी सभ क्षेत्र में व्यवस्था, क्रमबद्धता आ वैज्ञानिकता ले अइले। शिवजी के समय में कोई व्यवस्थित

www.bhojpurisahityangan.com

दृष्टिकोण ना रहे, कवनो पक्का व्यवस्था ना रहे। शिवजी मनुष्य के जेतना मानवीय क्षमता Human faculties रहे, ओकरा सभ के एगो क्रमबद्ध रूप दे दिहलें। एही व्यवस्थित दृष्टिकोण से समाज के रोग के उपचार के राह बनल।

सामाजिक चेतना आ कृष्ण के भूमिका

शिवजी हर क्षेत्र में ई व्यवस्था ले अइले। संगीत में, नृत्य में, वाद्य में हर चीज में क्रमबद्धता ले अइले। शिवजी के कारण पशु-स्वभाव वाला मनुष्य आज एगो व्यवस्था में आइल, एगो ढाँचा में आइल। ई शिवजी के प्रयास के परिणाम रहे। एकरा बाद, आज से करीब साढ़े तीन हजार बरिस पहिले जब महाभारत के लड़ाई भइल, तब व्यवस्थित रूप में लगभग हर चीज आ गइल रहे। बाकिर मानवीय गुण, मानवीय विद्या के सामूहिक मूल्य Collective Value के सामाजिक जीवन में पूरा रूप से प्रयोग ना भइल रहे। मान लीं कि कवनो आदमी के दवाई के बारे में कुछ खास ज्ञान बा। ओह ज्ञान के अगर सामाजिक जीवन में लागू कर दिहल जाव त एगो मेडिकल कॉलेज बन सकेला, जहाँ बहुत लोग ऊ विद्या सीख सकेला। ओह समय व्यक्ति के जीवन में जे मानवीय गुण मौजूद रहलें, ऊ सामूहिक जीवन में, सामाजिक रूप में मौजूद ना रहलें। कृष्ण के काम रहे एगो सामाजिक जगत बनावल, एगो सामाजिक ढाँचा खड़ा कइल जेकर बीजारोपण शिवजी पहिले ही कर चुकल रहन। कृष्णजी के समय में देखल गइल कि भारत में असम भी भारत रहे, बंगाल भी भारत रहे, मिथिला भी भारत रहे "अंग - बंग - कलिंगेषु सौराष्ट्र-मगधेषु च" अर्थात् अंग, बंग, कलिंग, सौराष्ट्र आ मगध सभ भारत के अंग रहे। बाकिर ई सभ अलग-अलग रूप में बनल रहे आ लोग आपस में लड़त रहे, काहे कि सामाजिक चेतना विकसित ना भइल रहे। कृष्ण देखलें कि अगर एह सभ के एगो सूत्र में बाँध दिहल जाव त सामाजिक चेतना पैदा होई। तब मनुष्य के भीतर जे-जे मानवीय गुण बा, ओकर पूरा विकास हो सकेला। बाकिर लोग ई बात समझे खातिर तैयार ना रहे। लोग अलग-अलग रहे के चाहत रहे। अर्थात् सामूहिक दृष्टिकोण के अभाव रहे।

प्राचीन काल में इंग्लैंड के उदाहरण ले सकीं। एगो छोट इंग्लैंड में भी काउन्टी ससेक्स, एसेक्स, यॉर्कशायर, लंकाशायर, कॉर्नवाल रहलें ओकरा अलावा वेल्स आ स्कॉटलैंड रहलें। बाद में सभ के मिलाके ग्रेट ब्रिटेन बनावल गइल। ओही तरह जब परिवार छोट-छोट टुकड़ा में बँट जाला त एगो अभिभावक के जरूरत होला, जे कह सके "ई मत करा, ऊ मत करा।" एही काम खातिर भगवान श्री कृष्ण के आविर्भाव भइल रहे छिन्न-भिन्न भारत के एक बनावे खातिर। बाकिर एकरा खातिर सद्विचारी लोग के जरूरत रहे। तब पंच पाण्डव अइलें, भीष्म अइलें, विदुर अइलें आ श्री कृष्ण के सहायता कइलें।

बिखरल भारत से महाभारत

एह तरह छिन्न-भिन्न ब्रिटेन जइसे एक होके ग्रेट ब्रिटेन बनल, ओही तरह करीब साढ़े तीन हजार साल पहिले छिन्न-भिन्न भारत के एगो बड़ भारत Great Bharat बनावे खातिर, महाभारत बनावे खातिर श्री कृष्ण के आविर्भाव भइल। एही कारण से एह पुस्तक के नाम महाभारत अर्थात् Great India रखल गइल। छिन्न-भिन्न अनेक लोग आ अनेक क्षेत्र के एगो बनावे खातिर का करे के चाहीं, का ना करे के चाहीं, केहू के कइसे आगे बढ़े के चाहीं ई सभ बात एह पुस्तक में मिलेला। ओह समय के भारतवर्ष बहुत सारा छोट-छोट राज्य में बँटल रहे। राजा लोग आपन निजी स्वार्थ खातिर अक्सर लड़ाई करत रहे। हर राजा पड़ोसी राज्य पर हमला करके ओकरा के आपन राज्य में मिला लेवे, आपन सीमा बढ़ावे आ दूसर राज्य से कर वसूले के चाहत रहे। अंग, बंग, कलिंग, विदेह, काशी आदि अनेक राज्य रहलें आ सभ एक-दूसरा से लड़त रहत रहलें। मगध गया आ पटना के क्षेत्र आ अंग भागलपुर आ मुंगेर के क्षेत्र गंगा के दक्खिन रहे, जबकि वैशाली गंगा के उत्तर रहे। वर्तमान सोन नदी के पश्चिम में काशी राज्य रहे। ई सभ राज्य आपस में खोज-खोज के लड़त रहत रहलें। मगध आ अंग के बीच बहुत बड़, बहुत उपजाऊ आ लम्बा-चौड़ा भूभाग रहे आजुओ बा। रबी के फसल उहाँ खूब होला। बरसात में ई इलाका पानी में डूब जाला, एही से एकरा के अम्बुभूमि कहल जात रहे। जम्बूद्वीप के समान ई दोसरो नाम अम्बुभूमि रहे। एह भूमि में रहे वाला लोग के अम्बष्ठ कहल जाला। ई धरती सोना के चिरइया सोना पैदा करे वाली भूमि रहे। एही से अंग, मगध आ वैशाली के बीच लड़ाई होत रहत रहे। कबो काशी भी धावा बोल देत रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

कबो ई इलाका अंग के कब्जा में रहे, त कबो मगध, वैशाली अथवा विदेह ओकरा पर आपन पंजा जमा लेत रहे। "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाला स्थिति रहे। ओह समय बहुत जाति रहलें, बाकिर मजबूत सामाजिक संगठन ना रहे। सामूहिकता के नितान्त अभाव रहे। व्यक्तिगत जीवन में लोग सदाशिव के आदर्श मानत रहे। सदाशिव द्वारा प्रवर्तित स्थापत्यकला, शिल्प, नृत्य, संगीत, साहित्य आदि ललित कलन के सिद्धान्त ही जीवन के आदर्श मानल जात रहे। सभ जाति में सदाशिव के प्रति अटूट श्रद्धा रहे, बाकिर सभ में एगो साझा सामाजिक आदर्श के अभाव के कारण सामूहिक दृष्टि विकसित ना हो पावल।

जातिगत बिखराव से सामाजिक एकता तक

मंगोल, द्रविड़, निग्रो, आष्ट्रिक आदि जातियन के आपन-आपन जातिगत स्वतंत्रता रहे। बाकिर एह सभ में मिल-जुल के बड़ सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक क्षेत्र में धर्म के संचार ना हो पावल। धर्मे त व्यक्ति-व्यक्ति के समाज के रूप में धारण करेला "धर्मो धारयते प्रजा"। सामाजिक धर्मभाव के अभाव में ओह समय एगो मजबूत सामाजिक ढाँचा ना बन पावल। एह तरह ऊ समय अइसन रहे जब भारत राजनीतिक रूप से आपस में लड़त-झगड़त छोट-छोट राज्य में बँटल रहे आ सामाजिक रूप से अनेक जाति-उपजाति में बिखरल रहे। अइसन विच्छिन्न भारत के एगो "महाभारत" के रूप में समुन्नत करे के पहिला आयोजन श्री कृष्ण कइलें। श्रीकृष्ण भारत के एह अवस्था के कारण जानत रहले। ऊ देखत रहले कि जनसाधारण व्यक्तिगत रूप से चाहे जइसन होखे, बाकिर ओकरा में सामूहिक भाव Collective Spirit बिल्कुल विकसित ना हो पावल रहे। एही खातिर श्रीकृष्ण जनसाधारण में सामूहिक भाव भर के सामाजिक एकता जगवलें। एह सामाजिक एकता के राजनीतिक प्रतिफलन ही देश के राजनीतिक एकता के रूप में दिखाई दे सकत रहे, जेकरा से भारत महाभारत बन सकत रहे। बिखरल जातियन में आपसी विश्वास पैदा करे आ नजदीकी सम्बन्ध के सूत्र में बाँधे खातिर श्री कृष्ण अन्तर्जातीय विवाह के प्रेरणा दिहलें। एह काम में ऊ खुद आगे बढ़लें आ पाण्डव लोग के भी प्रेरित कइलें।

पाण्डव वर्तमान मेरठ (उत्तर प्रदेश)-हरियाणा क्षेत्र के रहन। जाति के दृष्टि से ऊ आष्ट्रिक-आर्य रहन, जिनकर संतान आज के जाट मानल जाला। ई लोग भारत के प्रथम अधिवासी रहे। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी इलाका, मेरठ के आसपास के क्षेत्र आ पंजाब के पूर्वी भाग अर्थात् वर्तमान हरियाणा ओह लोग के निवास-स्थान रहे। पश्चिम भूभाग के निवासी एह पाण्डवन के सम्बन्ध-श्रृंखला श्रीकृष्ण के प्रेरणा से भारत के सुदूर पूरबी क्षेत्र तक फैलल। भीम के विवाह हिडिम्बा से भइल। ऊ नागालैंड के मंगोल कन्या रहली। अर्जुन के पत्नी चित्रांगदा मणिपुर के रहली ऊ भी मंगोल जाति के रहली। श्रीकृष्ण खुद नेफा के रुक्मिणी से विवाह कइले। एह प्रकार श्रीकृष्ण पूरा उत्तरापथ के पारिवारिक सम्बन्ध के सूत्र में बाँध के जातिगत एकता स्थापित करे में सफलता पवलें। उनका प्रयास से छोट-बड़ जातियन के मिलाके एगो भारतीय जाति के रूप खड़ा हो सकल, जेमें सभ जाति समा गइल आ एगो समाज गठित हो गइल। ओह युग में जनसाधारण सदाशिव के आधिपत्य अथवा प्रधानता स्वीकार कर चुकल रहे। बाकिर ओह समय अनेक अनुष्ठानमूलक विधियन (Rituals) के ही प्रचलन रहे। धर्मसाधना नाम के कवनो एकरूप चीज ना रहे। धर्म के नाम पर तरह-तरह के अनेक विधि प्रचलित रहलें। बड़-बड़ ऋषि-मुनि रहलें। महर्षि गर्ग के समान वैष्णव भी रहलें, मामा कंस के समान शाक्त भी रहलें आ एकरा अलावा कौल साधक भी रहलें।

कंस, गर्ग आ कृष्ण के भूमिका

एह सभ वर्ग के विशेषता ई रहे कि राजा होखे चाहे प्रजा सभ पर साम्प्रदायिक दृष्टि के प्रभाव रहे। अब ऊपर कंस के प्रसंग आइल बा। ऊ शूरसेन देश के राजा रहलें, कृष्ण के मामा रहलें आ कट्टर शाक्त रहलें। खाली एतने ना, ऊ अपना युग के अत्यन्त निष्ठुर नरसंहारकारी अत्याचारी के रूप में आजुओ मानल जालें। कंस के अत्याचार से जन-जन के त्राण दिलावे खातिर महर्षि गर्ग के कंस के विरुद्ध षड्यंत्र करे पड़ल। कंस शूरसेन प्रदेश में महर्षि गर्ग के प्रवेश निषिद्ध कर दिहले रहे। गुप्त रूप से गर्ग के हत्या करे खातिर विषकन्या नियुक्त कइल गइल रहे। ऊपर से कंस गर्ग के सम्मान

www.bhojpurisahityangan.com

खातिर पूरा व्यवस्था करावत रहे, बाकिर भीतर-ही-भीतर उनका विरुद्ध षड्यंत्र चलावत रहे। जइसे कंस गर्ग के विरुऋ षड्यंत्र कर रहल रहे, ओही तरह गर्ग भी काँटा से काँटा निकाले के योजना बनवले। कंस त मूँछ पर ताव देत रहे, बाकिर गर्ग कृष्ण के अपना मामा के विरुद्ध खड़ा कर दिहलें आ कृष्ण कंस के काँटा उखाड़ फेंकले। कृष्ण अपना माता-पिता के साथ कंस के जेल में रहत रहले। उनका के जेल से बाहर निकाले के योजना बनावल गइल रहे। महर्षि गर्ग नन्द आ वसुदेव के चचेरा भाई रहले आ नन्द आ उपनन्द के जेठा रहले। ई लोग जाति से विप्र रहे वैष्णव विप्र। ध्यान-धारणा आ साधना-भजन करे वाला रमता-रमता साधक लोग रहे। ओह युग में जाति - भेद अथवा वर्ण-व्यवस्था आज जइसन कठोर ना रहे। वैदिक युग के समान नाममात्र के रहे। बाद में वर्ण-व्यवस्था कठोर भइल। कृष्ण के पिता सेनापति रहले, एही से क्षत्रिय वृत्ति अपनावे के कारण ऊ क्षत्रिय कहलें। कृष्ण के दोसरा अभिभावक नन्द-उपनन्द गोप रहले यादव, अर्थात् वैश्य। एह तरह वसुदेव क्षत्रिय, गर्ग विप्र आ नन्द वैश्य तीनो जाति के जानल जात रहलें। ई तत्कालीन वर्ण-व्यवस्था के एगो अच्छा उदाहरण ह। जेल में वसुदेव असमर्थ रहलें। रमताराम गर्ग कृष्ण के जेल से बाहर निकाले के व्यवस्था कइलें। समय आवे पर कृष्ण कंस के संहार करके अपना माता-पिता के मुक्त कइलें। महर्षि गर्ग ध्यानावस्था में कृष्ण के जन्म के विषय में जान गइल रहले आ उनका भीतर के लोकोत्तर पुरुषोत्तम स्वरूप के आभास पा लिहले रहले। एही से कृष्ण के जेल से बाहर निकालल गइल आ ' कृष्ण' नाम भी गर्गे रखले रहले। श्री कृष्ण तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक आ आर्थिक क्षेत्र में जे क्रान्ति कइलें, टुकड़ा-टुकड़ा में बिखरल भारत के एगो महाभारत बनवलें एकर परिकल्पना अगर केहू के रहे त ऊ महर्षि गर्ग रहले। पाण्डव आ कौरव के बीच के युद्ध ही महाभारत ना ह। 'महाभारत' के मतलब आपसी विवाद में उलझल छोट-छोट राज्य, छोटी-छोटी जाति आ छोट-छोट सम्प्रदाय के एगो बड़ आदर्श में गाँथ के भारत के महाभारत के रूप में प्रतिष्ठित कइल ह।

❁❁❁

काहे ना बोलेलऽ भोजपुरी



- राजनंदन

केकरा से डेरालऽ तोहार कवन मजबूरी,
भोजपुरिया हो काहे ना बोलेलऽ भोजपुरी।
महतारी भाषा हऽ मनई के निशानी,
दुनिया के लोग ढीठे बोले आपन बानी,
दबल बाड़ऽ काहे तू करेलऽ मुँहचोरी,
भोजपुरिया हो काहे ना बोलेलऽ भोजपुरी ?
जवने माटी जनम भईल उहे तोहार शान बा,
बसऽ बिरतान अपने माटी पहिचान बा,
निज भाषा के मान दियावल बहुत बा जरूरी,
भोजपुरिया हो काहे ना बोलेलऽ भोजपुरी ?
भोजपुरिया शेर भोजपुरिये दहाड़ऽ,
कहिया ले भकुअल रहबऽ मन में विचारऽ,
तोहरो बाजू में दम बा, पहिरले नईख चूड़ी,
भोजपुरिया हो काहे ना बोलेलऽ भोजपुरी ?
बीस कोटि भोजपुरिया फइलल बाड़न एही जहान में,
छोटहन छोटहन भाषा जगह पइलन संविधान में,
हमरा भाषा के अब ले काहे नईखे मंजूरी,
भोजपुरिया हो काहे ना बोलेलऽ भोजपुरी ?
ढेर अनदेखी अब न आगे सहल जाई,
अधिकार खातिर खूनी होखि अब लड़ाई,
निज भाषा बिन जिनगी जईसे पहिया बिना धुरी,
भोजपुरिया हो काहे ना बोलेलऽ भोजपुरी ?
निज भाषा बाटे एहि जीवन के पहिया के धुरी,
भोजपुरिया हो काहे ना बोलेलऽ भोजपुरी ?

www.bhojpurisahityangan.com

कपरफोरउवल

- डा. आदित्य कुमार अंशु



भारत कृषि प्रधान देस ह । कहल जाला कि भारत के आत्मा खेती-किसानी में बसेला। किसानन के समस्या के कवनो ओर-छोर नइखे।अबहियों किसानन पर प्रशासनिक अमला के ढ़ेरे प्रभाव बा। लेखपाल, कानूनगो, एस.डी.एम. के मकड़जाल में अँझुराइल किसान कोर्ट कचहरी के चक्कर लगावत बा। अपने में एगो दोसरा के सेहत करे के चक्कर में कपरफोरउवल करत बा। एह झगरा के मूल ई बा जे जमीन के पैमाईश सही तरीका से ना भइल। गॉव जवार में अक्सर ई देखल जाला जे आसाढ़ महीना के चढ़ते झगड़ा बवाल होखे लागेला। काहे से कि किसान ओही बेरा आपन धान के बेहन डालेला आ मेड़बन्दी करेला।

गॉव-देहात में मेड़कटवा किसान होखेलन। उनकर इहे बुझाला जे मेड़वे में ढ़ेर आनाज होई। जबे आर कोन करेलन त कोपिया-कोपिया के डाड़ काटत-काटत दू-चार हाथ दोसरा के खेत में घुस जालन। जे किसान आपन खेत दोसरा के बटाही चाहे रेहन पर रखले बा ऊ आपन खेत घूमे ना जाला आ उनकर डॉड़हा खेत बढ़ा लेलन इहे सब कपरफोरउवल के जड़ ह । कुछ त खेतीहर अइसनो बाड़े जे ट्रेक्टर से खेत जोते के बेरा डाँड़े माठत खेत कम करि देले आ टोकला पर कहेलन जे का करीं, टेक्टरेवाला जोत दिहुवे। एह तरे धीरे-धीरे आपसे में झंझट होखेला। आ दूनो पक्ष आमने-सामने आ जाला । जेवन पक्ष जेतने बरियार बा ओकर बाति सुने वाला ढ़ेर लोग बा । कुछ त आर्थिक रूप से कमजोरो आदमी अपनी थेथरपन से नेटुआनाँच के बल पर सभपर भारी पड़ेला। अइसन आदमी त हरदम पीटा-पाटी करे खातिर तइयार रहेला। असही कहा सुनी होत लाठी-डण्डा चले लागेला आ कपरफोरउवल हो जाला। अइसना में कुछ लोग झगरा छोड़ावेला त कुछ लोग आगि धधकावेला। पहिलका जमाना के बाति कुछ और रहे। अब त ओकर रूपवे बदल गइल बा । पहिले जगह जमीन खातिर झगरा होखे त लोग आपस में एक दोसरा के गोनर जइसन पीट देवे। फेरु साँझि बेरा एक दूसरा के दुख दरद बाँटे। जेकर भइँस ना लागत रहे ओकरा के हल्दी दूध गरमा के लइका चाहे मेहरारू के हाथे पहुँचवा देवे। फेरू दोसरा दिने फजीरही पंचइती होखे। ओह बेरा जेवन पंच रहे लोग ओकरा के परमेश्वर माने, बाकिर एह बेरा के पंच त मुँह देखल बाति करत बा। अब त पंचाइत वोट के राजनीति पर हो रहल बा। जब मुखिया पंचाइत करे जात बा त ई देखत बा जे केवना दल के वोट ढ़ेर बा। ओही पक्ष मे बतियावल जाई। ओंसे नइखे होत त एगो दल की ओर ले खड़ा होके मुकदमा करवा देत बा आ दोसरा पक्ष की ओर दोसर लोग खड़ा हो जाला ।

अँझुरावत-अँझुरावत अइसनों हो जात बा जे कपर फोरउवल के बाद गोली-बन्दूक चले लागत बा। अब त लोग जान लेवे-देवे खातिर तइयार हो जात बा । थाना के लोग दूनो दल के थाना में बुलाके खूब रुपिया ऐंठत बा। आ फेरु मुकदमा के मकड़जाल में उलझा के सीधा-सादा किसान के खूबे दोहन होत बा। किसान थाना-कचहरी के

www.bhojpurisahityangan.com

चक्कर में दउरत-दउरत आपन जिनगी भर के कमाई फूँक देत बा। एकरा खातिर सरकार के अइसन नियम बनावे के चाही जे किसान जाय त ओकर बाति सुनल जाव। खाली नियम बनवला से ना होई। सरकारी महकमा ओकर पालन करे तबे हो पाई। एगो त किसान खाद बिया के समस्या से परेशान बा आ। गाँव के पंचाइत आ मुकदमा से परेशान बा। किसान जीवन भर संघर्ष करत बेवान पर चढ़ जात बा। पहिले त गोबर के खाद, राखी, झारन बहारन से खेती उर्वरा शक्ति के काम हो जात रहे। अब त लोग गाय-भँइस राखते नइखे त गोबर आ घूरा के सवाले कहाँ उठत बा सभे किसान रासायनिक खेती में अँझुरा गइल बा। किसान कइगो समस्या से लड़त-भीड़त बा। सरकारी महकमा लड़ला - भीड़ला के फायदा खूबे उठा रहल बा। मंच से किसान के समस्या के नाँव पर छिपल खेल हो रहल बा। किसान के नेता एतना उपरा गइल बाड़े जेवना के ओर छोर नइखे। गाँव के किसान झगरा-बवाल में फँसत - जूझत गोल गोलइती के चक्रव्यूह में फँस गइल बा। जेकरा के जेवन मन करेला ऊ सीधा-सादा किसान के दिमाग में बइठा के आपन रोटी सेंकेला। किसान अबहियो आपन अस्तित्व के लड़ाई लड़त-भिड़त कपरफोरउवल तक पहुँच जात बा। ओही में जेवन किसान पढ़ल-लिखल चालू-पुरजा के बा ऊ गोल-गोलइती के चक्कर मे ना पड़ेला। ओकरा जीवन में धीरे-धीरे सुधार हो रहल बा। एहसे सभे किसान के अपना नवकी पीढ़ी के पढ़ावे-लिखावे पर धियान देबे के चाही। पढ़ल-लिखल रही त ऊ झगरा-बवाल में ना अँझुराई आ आपन विकास पर धियान दीही।

❁❁❁

जनसेवक

- लल्लन प्रसाद पाण्डेय 'ट्रेन'

हम तऽ इहवाँ पर मस्त हई,
तूँ गावें में ही मस्त रहऽ
दुइ जून के रोटी खातिर तू,
उहवें बन्दोबस्त करऽ

हम त इहवाँ पर रमल हई
तूँ गाँवें में ही डअल रहा
हम मस्त कलन्दर बनि घूमीं
तू चउअन में ही सटल रहा

तोहरे वोटवा पाके हम तऽ
आ गइल हई रजधानी में
एसी में सूतीं बइठीलाँ
तू सुतल रहा पलानी में

तू करा परिश्रम हम खाई
जहवाँ चाहीं आई जाई
फिर पाँच साल पर जब आइब
तब भेंट करब अँकवारे में

कारे में हम तऽ घुमीला
तू रोवेला बेकारे में
चुपचाप गाँव में पड़ल रहा
हम जमल हई सरकारे में

तू गाँव में रहि के काम करा
मड़ई में आराम करा
हम जवन करत बानी इहवाँ
तू पढ़त रहा अखबारे में

लोक-लीला

- सुशीला पाल

का-का जतन कइलीं /
घरे अउरी बहरा ! -2
कामे ना आइल कवनो -2
अन्हरा के पहरा !! का-का ...
थाती लुटाइल सज्जी, अँखिए के सोझा
थाकि गइले सभे - पीर, बैद, गुनी, ओझा
अगिया में जरि गईल -2
देंहिया निखहरा !! का-का ...
एने अझुराईल, कबो, ओने अझुराईल
मनवा के सँगे-सँगे, तनवो नासाइल
अइसन पकड़ले रहे -2
माया के लसहरा !! का-का
कहेली 'सुशीला', जेही बहकी, ए भाई
जिनगी अमोल ऊहे, झुठहूँ गँवाई
आगे बा खाई, पाछे-2
कुइँयाँ बा गहरा !! का-का ...

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

मुखाग्नि

- डां० भोला प्रसाद आग्नेय

''हई आज तक के आपन मजूरी ले ल, आ काल्ह से काम पे मत अइहऽ।''

''अइसे काहें कहत बानी मालिक? मजूरी ना करब त खाइब का?''

''बुढ़ौती में एक तगाड़ी सिरमिट आ चार गो ईंटा तोहसे उठते नइखे त मजूरी कइसे करब? कवनो दोसर धंधा करे के सोचऽ।''

''अरे मालिक, आजु ले मजुरिए कइले बानी त अब दोसर कवन धंधा क पाइब?''

''त हम का करीं? मय बुढ़वन के ठीका हमीं ले ले बानी?'' एतना कहत अमन जोखू के हाथ में आज तक के मजूरी के पइसा रख के चल दिहलन। आ आपन लोर पोंछत जोखू अपना गांव के ओर चल दिहलन। उनके उमिर पचासी बरिस हो गइल बा एही से केहू इनके कवनो काम देत नइखे।''आज हमार लइका जीयत रहित त हई दिन ना देखे के पड़ित'' इहे सोचत जोखू अपना गांवे आके अपने पलानी में एगो लिट्टी सेकलन आ अचार संगे खा के सुत गइलन। जोखू लइकाइए से मजूरा के काम करत रहले काहें कि इनकर बाप इनके पांच बरिस के छोड़ के दुनिया से चल देले रहलन आ इनकर माइयो इनके बाप के मूअला के हुडुक से जल्दिए दुनिया से चल दिहलिन। ओही घरी से मजूरी क के आपन पालन पोषण जोखू खुदे कइलन। बड़ भइलन त मजुरिए करे वाली बेला नाम के लइकी से आपन बिआहो क लिहलन। दुनो जाना एक से बढ़ एक सपना देखे लागल लोग। एक दिन बेला जोखू से कहलिन कि ''ए जी सुनतानी।''



''हं, का कह ताडू?''

''हम चाहतानी कि एक आदमी के कमाई से नून रोटी चले आ एक आदमी के कमाई के बटोर के एह पलानी के पक्का घर में बदल दिहल जाव।''

''ठीके त सोच ताडू।'' एतना कहि के जोखू खइनी फटके लगलन। फिनु बेला कहलिन कि''हई खइनियों खाइल त फालतुवे खरचा न बा, एके छोड़ ना देइब।''

''काहे ना, ल आजु से अब खइनी ना खाइब।'' कहत जोखू खइनी आ चुनौटी के बहुत दूर फेंक दिहलन। हँसी – खुशी दुनों जाना के दिन बीतत रहे तबले एगो लइका हो गइल। जोखू बहुते प्यार से ओकर नाम सोनू धइलन। अब बेला के मजूरी कइल बहुते कठिन होई गइल तब्बो अपने पीठ पर सोनू के बान्ह के मजूरी का काम करत रहली बाकिर अब पक्का मकान के सपना छोड़ के बेटा के पढ़ा के लिखा के बड़ आदमी बनावे के सपना देखे लगलिन। बाकिर सपना सपने ह बड़ा मुश्किल से सपना हकीकत में बदले ला। एक दिन मजूरी करत खा बेला के गोड़ बिछला गइल गिर गइलिन आ सोनू पीठ पर से छटक के दोसरा ओर गिर गइलन। ई देखते जोखू दउड़ के सोनू आ बेला के उठवलन आ

www.bhojpurisahityangan.com

अस्पताले ले के गइलन। बेला के अइसन चोट लागल रहे कि बेहोश हो गइल रहली। दू-तीन दिन बाद एक दिन बेला के आँख खुलल त कहली ''एजी, सोनू कहां बा।'' जोखू सोनू के ले आ के बेला के गोदी में दे दिहलन। बेला फिनु लड़खड़ात जुबान से कहली कि ''एजी, सुन तानी। हमरा ना रहला पर त रउवा दोसर बिआह क लेब न .....। बाकिर सौतेली महतारी हमरे सोनुआ के साथे दूबिना त करबे करी। रउवां से हाथ जोड़ के निहोरा बा कि हमरे सोनुआ के खियाल राखब। हमार आत्मा सोनू के संगही रही।'' एतना कहत बेला के आंख मुना गइल आ मूड़ी एकोर लटक गइल। आज बइठल जोखू सोचत बाड़न कि ''मन करे पहिनी चनतारा, करम में लीखल भेड़ी के बारा।'' जिनगी मजूरी से सुरू भइल आ आजु ले मजुरिये करत रहि गइलीं बाकिर अब ऊहो सपरत नइखे । बुझाता कि अब मजुरियो छूट जाई आ भिखिए मांगे के पड़ी। न आगे नाथ बा पीछे लरिका आ मने करे चली दुअरिका। उहे हाल बा हमार। ईहे कुल सोचत जोखू सुत गइलन। हांलाकि जोखू बेचारू बेला के मुअला के बाद अपने सोनू के सौतेली महतारी के परछाई से बचावे खातिर दोसर बिआह ना कइलन। आपन पूरा जिनगी सोनू के पालन पोषण में लगा दिहलन। अपने मजूरी क के सोनू खाए पहिरे भा पढ़ाई लिखाई में कब्बो कवनो कमी ना आवे दिहलन। सोनू सुरूवे से पढ़े लिखे में त तेज रहबे कइलन खेल-कूद आ पहलवानियों में उनकर मन लागे। कम्पीटिशन में बइठत-बइठत एक दिन सोनू फौज में कैप्टन हो गइलन। ई देखि के जोखू के खुशी के ठिकाना ना रहे। सोनू कहलन कि ''ए बाबू जी, अब तू मजूरी कइल छोड़ द। अब तोहार सेवा हम करब।''

''ना बेटा, हमार मजूरी मत छोड़ाव। तोहरे एह नोकरी के बुनियाद हमार मजूरी कइलके ह।''

''त ठीक बा, ओह बुनियाद पर अब एगो महल बने द।''

''अरे बेटा, बड़हन सपना मत देखाव, सपने देखत देखत त हम लथरा गइली ह।'' एतना कहला के बादो जोखू आपन बेटा सोनू के बात मान के मजूरी के काम छोड़ दिहलन आ हंसी-खुशी दिन बीते लागल। धूमधाम से जोखू सोनू के बिआह नीतू नाम के लड़की से क दिहलन। एक साल बाद सोनू आ नीतू के एगो लइका भइल। बाकिर ओ घरी सोनू कश्मीर के बार्डर पर रहलन। जोखू मोबाइल से सोनू के लइका भइला के खबर दिहलन। सोनू मोबाइले पर कहलन कि ''ठीक बा बाबू, तूं छठिहार के तैयारी धूमधाम से क द हम हर हाल में छठिहार के दिने आ जाइब। बाकिर विधि का लिखा को मेटनहारा। एने जोखू तैयारी कइले रहलन आ सोनू के लाश तिरंगा में छठिहारे के दिने दुआरी पर आ गइल। आतंकवादी मुठभेड़ में शहीद हो गइल रहलन। ओकरे बाद नीतू आपन लइका लेके नइहर चल गइलिन। जोखू फिनु मजूरी करे लगलन।

सोनू के एल.आई.सी., जी.पी.एफ. भा सरकार द्वारा दिहल गइल आर्थिक सहायता कुल नीतू ले के करोड़पति बन गइलिन आ जोखू के हाल रहे फिनु बैतलवा डाढ़ के डाढ़। ओकरे बाद से जोखू के ओर नीतू कब्बो भुलाइयो के ना देखली। जोखू अपने पेट खातिर मजूरी कइल चाहत बाड़न बाकिर इनकर बुढ़ौती देख के इनके कवनो मिस्त्री अपना संगे राखत नइखन स। बड़ा चिरौरी कइला पर एक जगह मजूरी करतो रहलन त ओकर मालिक इनके काम से हटा दिहलन। पहिले क बांचल खुचल पइसा जबले रहल जोखू के मुहे नून रोटी लाग जात रहे बाकिर एक दिन पाई-पाई ओरा गइल। सोचे लगलन का खाईं का पीहीं का ले परदेस जाईं। भिखियो मांगे खातिर दुआरी-दुआरी घूमे के पड़ी आ दूइए कदम चलला पर थाक जा तानी। हार दाँव के जोखू एगो मंदिर के सामने भिखमंगन के लाइन में जा के बइठ गइलन।

दिन भर जवन मिले उहे खा के जोखू कहीं न कहीं फुटपाथ भा मंदिर के सीढ़ी पर सुत के अपने जिनगी के बांचल दिन बितावे लगलन। एक दिन अचानक एगो चार चक्का के गाड़ी रूकल ओमे से एगो नवजवान निकललन आ कहलन कि ''आज हमरे बाबू जी के पुण्य तिथि ह, हम कुल भिखारियन के एगो लन्च पैकेट आ एगो कम्बल दे रहल बानी, तोहन लोग लाइन से बइठ जा लोग।'' ई बात सुनते जोखू ओ मनई के ओर तकलन आ चिन्ह गइलन। मन में सोचत कि ''ई त ऊहे मलिकवा ह अमन जवन हमके मजूरी से हटा दिहलस हम एकर लन्च पैकेट ना लेब'' उठ के जाए लगलन। अमन जोर से डांटत कहलन कि ''जात कहां बाड़े, चुपचाप बइठत काहे नइखे?'' हम तोहार पैकेट ना लेब। अइसन निर्दयी आदमी के लन्च पैकेट ना लेवे के चाहीं।'' एतना सुनते अमन खिसिया के जोखू के एक झापड़ कस के

www.bhojpurisahityangan.com

मार दिहलन। जोखू गिर गइलन आ मंदिर के सीढ़ी से टकरा के उनके कपार फाट के खूने खून हो गइल। ई देखते गाड़ी में अमन के महतारी आनी कि नीतू बाहर अइलिन त जोखू के देखते चिन्ह गइलिन आ अमन से कहलिन कि ''अरे बेटा, ई का क दिहलऽ, ईहे न तोहार बाबा हउवन।

चल इनके असपताले ले चल।'' जोखू के कपार से खून आ आंख से लोर गिरत रहे। सुसुकत अपने पतोहू से नीतू से जोखू कहे लगलन ''ना दुलहिन ना, अब हमके ना असपताले कवनो फायदा बा आ ना हमरे जियला से कवनो फायदा बा।'' ''हमके माफ क दी बाबू जी, रउवां के अकेले छोड़ल हमार गलती ह बाबूजी।गलती केहू के नइखे दुलहिन जवने विधना लिखेलें तवने बात होखेला। हमरा एक ही बात के फिकिर रहल ह कि शरीर छोड़ला पर अगर केहू सही आदमी मुखाग्नि ना दी त हमार मुक्ति ना होई हम प्रेत योनि में भटकत रहब। बाकिर अब त मुखाग्नि खातिर अमन भेटा गइल बाड़न।'' एतना कहत जोखू के जुबान बन्द हो गइल आ मूड़ी अमन के गोदी में लटक गइल।

❁❁❁

भोजपुरी कविता



- आचार्य पुण्येशानन्द अवधूत

पांच तत्व के पजरा में, जब तलक परान बा।
तबे तलक चहल-पहल, माटी के मकान बा ।।
सतमहला मकान के, दस दरवाजा बा।
मंत्री पचास रहेले, मन सब के राजा बा।
इन सब के साधल, न मन के आसान बा ।।
तिरगुन के बंन्धन में, मनवा बधाइल बा।
माया मोहजाल में, जियरा धधाइल बा।
अहम के वहम में मन, कईले गुमान बा ।।
केरा के फूल लेखा, पंच कोसी जीव बा।
पाश मुक्त होई जबे, तबे जीव शिव बा।
करी ब्रह्म साधना, ई जीवन महान बा।।
इष्ट मंत्र जपी सभे, पाप पुण्य नाशी ।
देहिऐं में गंगा-जमुना, मथुरा- काशी।
मोह-माया त्यागी, दुनिया श्मशान बा।।

दोस्ती में दरार



- अमरजीत 'अमर'

दोस्त बदलल तऽ कुछ हमरी में कमी होई,
या ऊ आगे बढ़ गइल, कुछ नई कहानी होई।
काल्ह तक जे साथे-साथे हर राह चलत रहे,
आज ओकर राह अलग बा, कवन मजबूरी होई।
हम तऽ आजो ओहिजे बानी, ओही यारी लेके,
शायद ओकरा दिल में अब कवनो दूरी होई।
हम पूछत रहनी-कहाँ गलती भइल हमसे,
शायद चुप्पी में ओकर कवनो मजबूरी होई।
ना शिकवा बा, ना गिला बा, ना शिकायत कवनो,
बस मन में एगो सवाल- का हमरी कमी होई?
ऊ उड़ गइल आपन आसमान के ओर कहीं,
हमरा हिस्सा में शायद अब तन्हाई होई।
दोस्ती टूटल तऽ दिल के कसूर मान लिहनी,
का पता ऊ बदल गइल होई,
का पता समय के मजबूरी होई।

www.bhojpurisahityangan.com

कहानी

दवाई के रिऐक्शन



-श्रीमती आशा श्रीवास्तव



''अजी सूनऽ तानी''

''का ह? बोल''

अकेले जा के बाबू जी के इहवें लिया के आईं। हमनी का इहवां बानी जा आ बाबू जी ओइजा ''ठीक बा, आज सांझ के गाड़ी से जातानी। एतना कहि के परभू अपने पत्नी रोसना के आश्वस्त क दिहलन। आ साँझ के ट्रेन पकड़ के अपने बाबू जी के लिया आवे चल दिहलन।'' ट्रेन में बइठ के सोचे लगलन कि ई काम न हमरा पहिलही क दिहल चाहत रहे आज रोसना के कहला पर जा तानी। धिक्कार बा हमरा जिनगी के। हमार बाबू जी आदमी नाहीं देवता हउवन। जब हम पांच बरिस के रहलीं त हमरे माई के अचानक हार्ट अटैक भइल आ हमके बाबूजी के हाथ में देत कहलस कि रउवां दोसर बिआह क लेब बाकिर हमरे परभू पर विशेष ध्यान देब ताकि सौतेली महतारी इनके सतावे न पावे। एतना कहत-कहत हमरे माई के मूड़ी एकोर लटक गइल।

एकरे बाद ''सौतेली महतारी सतावे न पावे'' हमरे बाबू जी के दिमाग में गूंजे लागल आ ओकरे बाद ऊ दोसर बिआह ना करे के संकल्प ले लिहलन'' हीत-नात केतनो चहलस कि बाबू जी के दोसर बिआह हो जाए बाकिर ऊ दोसर बिआह ना कइलन हमरे पालन पोषण में आपन जिनगी खपा दिहलन। अइसन देवता नीयर बाप के अपना नोकरी पर जाते के टाइम संगे ले जाइल चाहत रहे। हम अइसन ना कइली ह बहुते बड़ पाप कइले बानी। बाकिर चल कहल गइल बा कि देर आए दुरुस्त आए। रोसना के कहला पर जा तानी न। आ एने परभू के बाप रघुनी गावे अपने बाप दादा के सुरू कइल किराना के दोकान आजु ले चलावत बाइन। ओकरे कमाई से परभू के पढ़ा लिखा के एह योग बना दिहलन कि उनके नोकरी बैंक में लाग गइल बाकिर अपना घर से बहुत दूर। परभू के बिआहो क के पतोह के ओही नोकरी पर भेज दिहलन। आ अपने गांवे ओही किराना के दोकान चलावत बाइन आ दूनो बेरा अपने हाथे खाना - नाश्ता बनावत बाड़न।

केहू हीतो नात या दोस्त मित्र आ जाता त उनहन लोगन के सेवा सत्कार अपने हाथे करत बाड़न। परभू आ रोसना ओही नोकरी पर रहत एगो बेटा आ एगो बेटी के बाबू माई हो गइल बा लोग। आज का जानी कइसे रोसना के मन में अपने ससुर के प्रति एतना प्रेम जाग गइल ह कि परभू से कहली ह कि जा के लिया के आई आ परभू लियावे चल दिहलन। आ उनके ट्रेन फजीरे चार बजे उनके गाँव के स्टेशन पर पहुँचल । एगो टेम्पो रिजर्व क के परभू अपना घरे पहुँच के केवाड़ी के सिकड़ी खटखटवलन। रघुनी बाहर आवते परभू के देखत चिहा के पूछलन ''का ह बेटा, कुल ठीक-ठाक बा नऽ? ''हं बाबू जी कुल ठीक बा। हम तोहरो के ओइजे लिया जाए आइल बानी।''''अच्छा पहिले भीतर आव, फ्रेश वेश हो ल तब बतकही होई।'' परभू भीतर गइलन आ फ्रेश वेश हो के जेवही बइठत बाड़न रघुनी रहिला के घुघुनी आ चाय बना के उनुका सोझा ध दिहलन।

www.bhojpurisahityangan.com

बापे-पूते आपन-आपन नाश्ता क के बइठल लोग त परभू फेरू रघुनी से चले के कहलन। तब रघुनी कहलन कि ''अरे बेटा, हम कइसे चली हो बाप-दादा के निशानी घर आ दोकान बा, एकर का होई?''

''दोकान बन्द क द आ घर में ताला दे द।''

''ताला तूर के चोर चाई मय सामान उठा ले जइहे स। आ होली आई त लड़का कुल चउखट केवाड़ी नोच के सम्मत में जरा दिहें स। तू अभी जानत नइख गांव के हाल।''

''घर आ दोकान बेच द आ ओइजा दोसर घर बन जाई।'' आखिर में परभू के जिद के आगे रघुनी हार गइलन आ घर दोकान अवने पवने दाम में बेच के परभू के संगे परभू के नोकरी पर चल दिहलन। ओइजा पहुँचला पर रोसना अपना ससुर के आ उनके बेटा-बेटी अपना दादा के देख के बहुते खुश भइल लोग। रघुनी अपना पोता-पोती के संगे दिन भर अझुराइल रहे लगलन। सबेरे साँझ बनल-बनावल नाश्ता खाना मिले लागल। रघुनी के एगो रूटीन बन गइल, सबेरे चार बजे से दू बजे तक टहरल ओकरे बाद नहाइल-धोवल, पूजा-पाठ आ समय से नाश्ता-भोजन से खाली समय में पोता-पोती के पढ़ावल, खिस्सा कहनी सुनावल लोक गीत गावल गवावल, ए तरे मजे में रघुनी के दिन बीते लागल। तबले एक दिन रघुनी नहाए खातिर बाथरूम जाए के पहिले आपन कपड़ा उतारत रहलन तबले रोसना आ गइली आ उनुके नजर रघुनी पर पड़ल। उनुके शरीर पर जहां तहां उज्जर-उज्जर दाग देखत चिहा के पूछली ''ए बाबू, ई कुल कइसन दाग ह?''

''ई कुल एगो दवाई के रिऐक्शन ह दुलहिन।''

''ना बाबू जी, ई त चरक ह. आ चरक माने कोढ़।''

''ना दुलहिन, ई चरक आ कोढ़ ना ह। ई एगो दवाई के रिऐक्शन से हो गइल ह। एहू के दवाई खातानी अब धीरे-धीरे ठीक हो रहल बा।''

''ना. ना रउआं अब कोढ़ी हो गइल बानी।'' एतना कहत रोसना मुंह बिचका अपना कोठरी में चल गइलिन। ओइजे से अपना बेटा, बेटी के भीतर बोला लिहली आ कहली कि ''अब बाबा के लग्गे मत जइह स नाहीं त तोहनी के छूत लाग जाई।'' अब रघुनी नहा के आ पूजा क के बइठलन त नाश्ता खाना अपना समय पर मिल गइल बाकिर पोता-पोती उनुका लग्गे ना अइलन स। दिन भर अपना कोठरी में अकेले कबो बइठत आ कबो लेटत सोचे लगलन कि ''हम बेकारे एइजा अइली ह। एसे अच्छा त गांवही रहल ह बाकिर अब गांवहू ना जा सकीला काहें कि घर आ दोकान कुल बिका गइल बा। इहे कुल सोचत रघुनी के दिन बीत गइल। रात खा खाना आइल खा के ओठगल रहलन तबले कान में आवाज आइल जवन रोसना परभू से कहत रहलिन ''सून तानी, राउर बाबू जी कोढ़ी हो गइल बानी आ कोढ़ी के घर में ना राखे के चाहीं। कोढ़ियन के त अलग आश्रम होला जहां ऊ रहेलन स आ भीख मांग के खात रहेलन स। बाबू जी के कवनो कोढ़ आश्रम में पहुँचा दी।''

''ई कइसे होई? हमरा कुछ बुझात नइखे।''

'एमे बुझाए के का बा? पता लगायीं कि कोढ़ आश्रम कहां बा? बस ओइजे पहुँचा दीं।''

''अच्छा ए बेरा सूत, सबेरे देखल जाई।'' एतना कहि के परभू सूत गइलन आ रोसनो सुत गइलिन बाकिर रघुनी के रात भर ओंघाई ना लागल। रात भर आपन बीतल जिनगी सोचत रहे आ कबो-कबो आंख से दू ठोप लोर चू जात रहे। फजीर भइल, चार बजल, रघुनी उठलन, टहरे चल दिहलन बाकिर लवटि के वापस ना अइलन। परभू बेचारू एने ओने चारो ओर खोजलन बाकिर रघुनी के कहीं अता-पता न लागल। परभू के उदास आ परेसान देख के रोसना कहली कि काहे के उदास बानी, ई त अच्छे भइल कि बाबू जी खुदे चल गइलन, सांपो मर गइल आ लाठियो ना टूटल।''परभू रोसना के कवनो जवाब ना दिहलें आ अपने बाबू जी खोजे में लागल रहलन। दोसरा दिने अपना गांवे गइलन ओइजो पता ना लागल। फेरु हितई-नतई, दोस्त-मित्र सब जगह जा-जा के पता लगवलन बाकिर पता ना लागल। एही तरे छ महीना ले बीत गइल आ परभू हरदम उदास रहे लगलन। कोढ़ आश्रम तक ले गइलन बाकिर ओइजो ना रहलन। एक दिन रोसना कहलिन कि देखी अब उदास रहल छोड़ी। आजु ले कहीं पता ना न लागल, एकर मतलब कि बाबू जी अब दुनिया में ना होखब, उहाँ के जरूर आत्म हत्या क ले ले होखब, एसे उनुकर अब काम किरिया क दिहल चाहत बा उनुके पुतला जला के।''रोसना के ई बात परभू के ठीक बुझाइल आ एगो पंडित से पूछ के काम किरिया सुरू क दिहलन। तेरही के दिनें एगो वृद्ध आश्रम के प्रबंधक से कहलन कि'' आज हमरे

www.bhojpurisahityangan.com

बाबू जी के तेरही ह एसे आज रात रवा एह आश्रम में रहे वाला सभके भोजन हमरा ओर से रही, ऊ प्रबंधक तैयार हो गइलन। रात खा परभू अपना दुआरी पर आइल हीत-नात आ दोस्त मित्र के खियावे-पियावे आ स्वागत सत्कार में बाझल रहलन आ हलुवाई के वेटर खाना वृद्ध आश्रम में ले जा के सभके खिया दिहलन स। आखिर में जब घरे नूने मिले के कार्यक्रम हो गइल त परभू धोती आ साड़ी के एकएगो गट्ठर ले के वृद्ध आश्रम गइलन आ वृद्ध आश्रम के एकएगो कोठरी में जा के वृद्ध मेहरारून के एगो साड़ी आ सौ रूपया दे के गोड़ छूवत रहलन आ असीस लेत रहलन आ मरदन के एगो धोती आ सौ रूपया दे के गोड़ छूअत असीस लेत रहलन।

सभे असीस देत कहत रहे कि ''तेरही में ई एगो नया काम सुरू कइले बाड़, अब तोहरे बाबू जी के आत्मा एकदम तृप्त हो जाई आ जहां होई ओइजे से तोहके असीस देत होइहें।'' ए तरे परभू ओ वृद्ध आश्रम के आखिरी कोठरी के केवाड़ी खोलत बाइन त देखत बाड़न कि ओइजा बिस्तर पर उनुके बाबू जी आनी रघुनी बइठल बाइन। ई देखते परभू धोती साड़ी के गट्ठर फेक के रघुनी के गोड़ ध के रोवे लगलन आ रघुनियों के आंख से लोर झर-झर गिरे लागल। ओइसहीं रोवत कहे लगलन कि ''बाबू जी हम के माफ क द, हम बहुत बड़ गलती क देले बानी तोहरा जियते हम तोहार काम किरिया कर रहल बानी।'' सुसुकत रघुनी कहलन कि ''ई अच्छे न बा कि काम किरिया एडवान्से हो गइल। मुअला पर ओकर झंझट ना रही।'' ''ई कुल छोड़ बाबू जी, अब घरे चलीं।''

''ना बेटा, कोढ़ी के घरे ना रहे के चाहीं। रोसना ठीके कहत रहली ह।''

''नाहीं हमके माफ क द ई कोढ़ नाहीं, दवाई के रिऐक्शन ह।'' एतना कहि के परभू मोबाइल से कुल बात रोसना के बता दिहलन। तुरन्त रोसना आ गइलिन आ रघुनी के गोड़ पर गिरके रोवत माफी मंगलिन। रघुनी माफी त दे दिहलन बाकिर घरे जाए के तैयार ना भइलन। अन्त में ई तय भइल कि परभू आ रोसना एइजे आ के भेंट करत रही लोग। बाकिर सबेरे उठके रघुनी कवनो दोसरा शहर के कवनो साधुवन के मठ में चल गइलन।

❁❁❁

वोटवा के राजनीत



-कमल सीवानी

जब-जब आवेला चुनाव तब,
नेता लोग उतराला।
आ काका-चाचा कहिके, सबके
गोड़ पर ऊ ढिमलाला।।
ओकरा पहिले केहू के ना,
रहे कवनो पाता।
आ वोट अईला पर बन जाला लो,
सभकर भाग विधाता।।
सभसे हमदर्दी देखावे में ऊ
दउरस आगे।
आ नाता जोरस अईसे,
जईसे सभे हिते लागे।।
जेतना काम भी बिगड़त देखस,
सबके जिम्मा साँकारस।
आ सभके सूची बनाके,
अपना डायरी में उतारस।।
त जीतेला चुनाव जें ऊ,
खुसी में खूब आगराला।
आ हारे वाला खूब झनकि के,
जनता पर खिसियाला।
बाकिर दुनू ही जने, फेर हो जाले
नापाता।
आ ओकरा बाद ना केहू से
रहेला उनकर नाता
त वोटवा के राजनीत के बावे,
इहे असल सच्चाई।
आ मोका पर नियराले नेता,
ओकरा बाद के भाई !



www.bhojpurisahityangan.com

वैचारिकी

आवरण कथा

मृत्युभोज : सामाजिक कोढ़

- डा० रामगोविन्द प्रजापति



मरे वाला चल गइल, बाकिर जिंदा परिवार के काहे सजा? मउत जिनगी के अंतिम साँच ह। दुनिया में जे आइल बा, ओकरा के एक दिन विदा होखे के बा। राजा होखे कि रंक, अमीर होखे कि गरीब मउत के सामने सभे बराबर ह। बाकिर असली सवाल मउत के ना, मउत के बाद समाज जिंदा परिवार के साथ का व्यवहार करेला, ई ह। कवनो परिवार के एगो सदस्य जब दुनिया के छोड़ के चल जाला, त ऊ परिवार पहिलहीं टूटल रहेला। घर में मातम होला, आँख में आँसू होला, मन में खालीपन होला। अइसन घड़ी में समाज के भूमिका का होखे के चाहीं? सहारा कि शोषण? सांत्वना कि सामाजिक दबाव? सहयोग कि कर्जा?

अगर समाज दुख के घड़ी में टूटल परिवार के सहारा देवे के बजाय ओकरा पर परम्परा, कर्मकांड आ खर्च के बोझ लाद देला, त सवाल उठी कि ई समाज ह कि सामाजिकता के नाम पर चलत एगो व्यवस्था? परम्परा समाज खातिर होला, समाज परम्परा खातिर ना हर समाज अपना समय, परिस्थिति, जरूरत आ समझ के हिसाब से संस्कार विकसित करेला। जे परम्परा कभी समाज के एकजुट करे वाली रहल होई, जरूरी नइखे कि ऊ हमेशा उपयोगी ही रहो। समय बदलता, ज्ञान बदलता, जीवन-परिस्थिति बदलती त परम्परा के भी समीक्षा होखे के चाहीं। परम्परा के नाम पर हर बात के बिना तर्क स्वीकार कर लिहल वैज्ञानिक समाज के पहचान ना हो सके। कवनो पुरान चलन के सिर्फ एह कारण से सही ना मानल जा सके कि ऊ पुरान बा। सवाल ई होखे के चाहीं का ई मानवीय बा? का ई वैज्ञानिक बा? का ई न्यायपूर्ण बा? का ई गरीब परिवार के सम्मान बचावेला? का ई दुख में डूबल परिवार के सहारा देला? जे परम्परा एह सवालन के सामने खड़ा ना उतर पावे, ओकरा पर सोचल जरूरी बा।

अंतिम संस्कार से सामाजिक शोषण तक भोजपुरी इलाका समेत उत्तर आ मध्य भारत के बहुत हिस्सा में मृत्यु के बाद दाह-संस्कार आ कुछ समुदाय में दफनावे के परम्परा रहल बा। अंतिम संस्कार अपने आप में एगो सामाजिक आवश्यकता आ भावनात्मक प्रक्रिया ह। समस्या ओहिजा शुरू होला, जहाँ संस्कार के साथ अंधविश्वास, भय, कर्मकांड आ आर्थिक लेन-देन के जाल जोड़ दिहल जाला। मरे वाला आदमी के नाम पर अन्न, धन, वस्तु, पशु या अन्य सामग्री देवे के सामाजिक दबाव बनावल जाला। परिवार सक्षम होखे चाहे ना होखे "परम्परा" के नाम पर करे के पड़ेला। गरीब आदमी के लगे पैसा नइखे? कर्जा ले ल। घर में अनाज नइखे? उधार ले ल। परिवार पहिले से आर्थिक संकट में बा? समाज का कही? लोग का कहिहें? एही डर में आदमी अपना सामर्थ्य से बाहर खर्च करेला। ई

www.bhojpurisahityangan.com

कइसन संस्कार ह, जहाँ मरे वाला के सम्मान बचावे के नाम पर जिंदा परिवार के भविष्य गिरवी रख दिहल जाला? मृतात्मा के श्रद्धा कि जीवितन पर बोझ? श्रद्धा मन के भावना ह। मरे वाला के प्रति प्रेम, कृतज्ञता, स्मृति आ सम्मान के अभिव्यक्ति मूलत: मानसिक आ भावनात्मक चीज ह। मरे वाला व्यक्ति अब भौतिक रूप से भोजन ना कर सकेला, वस्त्र ना पहिन सकेला, धन ना खर्च कर सकेला। तब ओकरा नाम पर भौतिक वस्तु के अनिवार्य रूप से खर्च करे के तर्क का ह?

अगर परिवार अपना श्रद्धा से कुछ करे गरीब के भोजन करावे, पेड़ लगावे, पुस्तक दान करे, शिक्षा में मदद करे, अस्पताल में सहयोग करे, जरूरतमंद के सहारा दे त ओकरा में जीवित समाज के वास्तविक लाभ बा। मृत व्यक्ति के स्मृति अगर जीवित मनुष्य के जिनगी में उपयोगी काम बन जाव, त शायद ई श्रद्धा के कहीं अधिक मानवीय रूप हो सकेला। दु:ख के बीच भोज के सामाजिक दबाव सबसे बड़ विडंबना त तब होला जब घर में चूल्हा आँसू से भींजल होखे, परिवार के लोग शोक में डूबल होखें आ ओही घर में सैकड़न लोग खातिर भोज के तैयारी होखे। माई-बाप, भाई-बहिन, बेटा-बेटी भीतर से टूटल होखें आ बाहर से हजारन रुपिया के इंतजाम करे के दबाव होखे। रोवे वाला खाना बनावे, टूटल परिवार लोगन के खिलावे, कर्जा लेके भोज करे, आ फेर समाज ओकरा के "संस्कार निभवल" कहे! ई सोच के अब वैज्ञानिक आ सामाजिक कसौटी पर कसला के जरूरत बा। दु:ख के घड़ी में परिवार के श्रम, समय, धन आ मानसिक ऊर्जा भोज में ना, एक-दूसरा के सहारा देवे में लागे के चाहीं।

ब्राह्मणवाद कि पाखंडवाद? सवाल व्यक्ति से ना, व्यवस्था से बा कर्मकांड के आलोचना करत समय पूरा ब्राह्मण समुदाय के दोषी ठहरावल भी उचित ना होई। ब्राह्मण समुदाय के भीतर भी गरीब, शोषित, विवश आ रूढ़ि से पीड़ित लोग बा। समस्या के केंद्र कवनो जाति ना, बल्कि ऊ मानसिकता आ व्यवस्था ह जे भय, अज्ञान, सामाजिक दबाव आ परम्परा के इस्तेमाल करके आदमी से ओकर सामर्थ्य से बाहर के काम करवावे। एह अर्थ में लड़ाई आदमी से ना, पाखंड से बा। जे आदमी खुद तर्क से चलेला आ दूसरन के तर्क से चले के अधिकार देला, ऊ समाज के आगे ले जाला। जे कहेला "बस परम्परा बा, सवाल मत पूछऽ" ऊ समाज के सोच के दरवाजा बंद करेला।

सबसे बड़ा सवाल - समाज कहाँ बा? "समाज" शब्द के अर्थ ही मिल-जुल के रहे वाला मनुष्यन के समूह से जुड़ल बा। समाज के असली पहचान संकट के समय होला। जब कवनो परिवार पर मउत टूटे, त समाज के परीक्षा होखे के चाहीं। का पड़ोसी परिवार के घर चूल्हा जरे में मदद करी? का समाज अंतिम संस्कार के खर्च में सहयोग करी? का गरीब परिवार के बच्चन के पढ़ाई ना रुके, एकर चिंता करी? का कर्जा में डूबल परिवार के कर्जा बढ़ावे के बजाय ओकरा के संभाली? अगर समाज ई ना करी आ उलटे मृत्युभोज खातिर परिवार पर हजारन-लाखन रुपिया के दबाव डाली, त फेर ई कइसन समाजिकता? सच्चा श्राद्ध का हो सकेला?

श्राद्ध के मूल भावना अगर श्रद्धा ह, त श्रद्धा के सबसे सुंदर रूप ऊ हो सकेला जे मृत व्यक्ति के स्मृति के जीवित समाज के कल्याण से जोड़ दे। मरे वाला किसान रहल? उसके नाम पर गाँव में एगो पेड़ लगावल जा सकेला। ऊ शिक्षक रहल? कवनो गरीब विद्यार्थी के पढ़ाई में मदद कइल जा सकेला। ऊ समाजसेवी रहल? उसके अधूरा सामाजिक काम के आगे बढ़ावल जा सकेला। गरीब परिवार बा? समाज मिलके ओकर आर्थिक मदद करे। ई होई श्रद्धा। ई होई सामाजिकता। ई होई मानवता। मृत्युभोज के जगह 'सहयोग भोज' काहे ना? काहे ना समाज एगो नया संस्कार शुरू करे? मृत्यु के बाद भोज के नाम पर परिवार से पैसा लेवे के बजाय समाज के लोग आपन सामर्थ्य अनुसार परिवार के सहयोग करीं। कवनो सदस्य कहे

"आज हम भोज ना खाइब, एह परिवार के बच्चा के पढ़ाई खातिर सहयोग करब।" कवनो कहे "हम दू दिन के मजदूरी एह परिवार के देब।" कवनो कहे "हम अनाज देब।" कवनो कहे "हम खेत के काम में हाथ बँटाइब।" कवनो कहे "हम परिवार के कर्जा घटावे में सहयोग करब।" तब कहल जाई समाज जिंदा बा। परम्परा के सम्मान तबे, जब ऊ मनुष्य के सम्मान करे परम्परा मनुष्य खातिर बनल बा। मनुष्य परम्परा के गुलाम बने खातिर पैदा नइखे भइल। जे परम्परा मनुष्य के जोड़ेला, रखल जाव। जे दुख में सहारा देला, बढ़ावल जाव। जे

www.bhojpurisahityangan.com

संस्कृति आ मानवीय संवेदना बचावेला, सम्मान दिहल जाव। बाकिर जे परम्परा गरीब के कर्जा में डुबावेला, दुखी परिवार पर सामाजिक दबाव डालेला, भय पैदा करेला, अंधविश्वास बढ़ावेला, आर्थिक शोषण के रास्ता खोलऽता, आ सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर आदमी के विवश करेला ओकरा पर सवाल उठावल परम्परा विरोध ना, समाज सुधार ह।

अब सवाल उठे के चाहीं हमरा के तय करे के बा कि हम अपना अगिला पीढ़ी के का देब? कर्जा के संस्कार कि सहयोग के संस्कार? भय के संस्कार कि विज्ञान के संस्कार? दिखावा के संस्कार कि संवेदना के संस्कार? कर्मकांड के बोझ कि मानवता के बोध? मउत जिनगी के अंत ह, बाकिर मृत व्यक्ति के प्रति सम्मान के अंत ना। सम्मान रहे। श्रद्धा रहे। संस्कार रहे। बाकिर शोषण ना रहे। दुख रहे, बाकिर ओकरा पर व्यापार ना होखे। परम्परा रहे, बाकिर तर्क के गला घोंट के ना। समाज रहे, बाकिर समाज के मतलब सामाजिक दबाव ना सामाजिक सहयोग होखे। मरे वाला के सबसे बड़ श्रद्धांजलि ई ना कि ओकरा नाम पर सैकड़न लोग के भोज करा दिहल जाव। सबसे बड़ श्रद्धांजलि ई ह कि ओकरा के याद करके कवनो टूटल जिनगी के सहारा दिहल जाव। मउत के घर में समाज के रसोई ना, समाज के संवेदना खुले के चाहीं। मृत्युभोज के जगह सहयोग।

कर्मकांड के जगह करुणा। भय के जगह विज्ञान। दिखावा के जगह सादगी। परम्परा के जगह विवेक। आ सामाजिक दबाव के जगह सच्ची सामाजिकता। ई बदलाव के जरूरत बा काहे कि जवन समाज मरे वाला के सम्मान त करेला, बाकिर ओकर परिवार के जिंदा रहते कर्जा में डुबा देला, ओकरा के अब अपना सामाजिकता के आईना में खुद के देखे के समय आ गइल बा।

❁❁❁

आ गइल फेनु चुनाव



- वृजमोहन प्रसाद 'अनारी'

आ गइल फेनु, चुनावऽ साँवर गोरिया-3... (टेक)
सजे गुलजार भइले, शहरऽ नगरियाऽऽ,
खेत-बारी गली अउरी गाँव,
मँड़ई हटा के, बनावल जाई बंगलाऽऽ,
काटि के कसीदाऽ कटाव साँवर गोरिया... (टेक)
बाबू-माई जेकरा पर, माछी भिनभिनात् रहे,
उनहू के पूजल जाई पाँव,
हम बनबि साढ़ू, तु बनवू सदूवाइनि,
लागि जाई एतना लगाव साँवर गोरिया... (टेक)
सरग के सीढ़ी लगावल जाई घर-घर,
बतिए के खइबू, पोलाव,
मुँहवा में राम रही, बगल में छूरी,
कइगो लगावल जाई दाव साँवर गोरिया... (टेक)
मतलब निकलते, केहू ना पूछे आई,
कउवा अस करबू काँव-काँव,
फेरु बैतालवाऽ डाढी के डाढ़ी रही,
हरियर हो जाई सुखलो घाव साँवर गोरिया... (टेक)

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा

चलऽ चलीं गँउवाँ के ओर

- राजेश भोजपुरिया

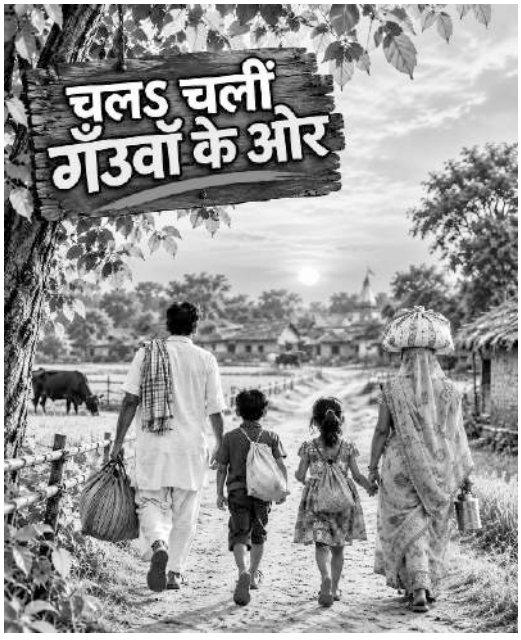

भोजपुरी साहित्य के समृद्ध परंपरा में गीत विधा के अपना एगो विशिष्ट स्थान बा। लोकजीवन, माटी के गंध, रिश्तन के आत्मीयता, प्रकृति के सौंदर्य आ बदलत सामाजिक परिवेश के अभिव्यक्ति भोजपुरी गीतन के मूल संवेदना रहल बा। एह परंपरा के आगे बढ़ावत कैलाश नाथ शर्मा 'गाजीपुरी' के पहिला भोजपुरी गीत-संग्रह 'चलऽ चलीं गँउवाँ के ओर' प्रकाशित भइल बा। जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् से प्रकाशित ई संग्रह भोजपुरी लोकजीवन आ संस्कृति के अनेक रंगन के गीतात्मक रूप में प्रस्तुत करेला।

एह संग्रह में कुल 84 काव्य-गीत संकलित बाड़े, जे गीतकार के प्रखर लेखनी, जीवनानुभव आ लोक-संवेदना के परिचायक बाड़े। गीतकार के रचना आ गीत देश भर के अनेक पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित होत रहल बा। एकरा अलावा इनके लिखल पाँच गो गीत भोजपुरी फिल्म 'नजरी पर सईयां जी' में शामिल भइल बाड़े, जे बेहद लोकप्रिय रहल बाड़े।

गीतकार के साहित्यिक व्यक्तित्व

कैलाश नाथ शर्मा 'गाजीपुरी' भोजपुरी साहित्य के एगो स्थापित, सुसंस्कारी आ समर्पित हस्ताक्षर बानी। मूल रूप से उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला के भीमापार (मंगारी) गाँव के निवासी गाजीपुरी जी वर्तमान में जमशेदपुर में रह के लगातार भोजपुरी भाषा आ साहित्य के सेवा करत बानी।इनकर स्वभाव अत्यंत विनम्र, शांत आ सुकोमल बा। बाल्यकाल से ही गीत-गवनई आ कविता से जुड़ल रहलें। पारिवारिक जिम्मेवारियन के कारण कुछ समय खातिर लेखन भले प्रभावित भइल, बाकिर इनके भीतर के सृजनधर्मी चेतना लगातार जीवित रहल। इनके रचना, गीत आ आलेख आकाशवाणी जमशेदपुर केंद्र से नियमित रूप से प्रसारित होत रहल बा आ श्रोतागण के बीच सराहल भी गइल बा। साहित्य-साधना खातिर गाजीपुरी जी के कई प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित कइल जा चुकल बा। एह में साहित्यकार सम्मान, तुलसी भवन साहित्य सेवी सम्मान, साहित्य सेवक सम्मान, शब्दशिल्पी सम्मान, कला आ संस्कृति सम्मान, छंदमाल्य सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान आ अहिल्या बाई होलकर सम्मान प्रमुख बाड़े।

लोकजीवन आ बदलत संस्कृति के पीड़ा

'चलऽ चलीं गँउवाँ के ओर' के गीतन पर नजर डालीं त एह संग्रह के सबसे खास विशेषता गीतन के सहज रवानगी आ लोकजीवन से गहिर जुड़ाव देखाई देला। गीतकार गाँव के माटी, लोक-संस्कृति, रिश्तन, प्रकृति, विरह, प्रेम आ सामाजिक बदलाव के अपना गीतन के केंद्र में रखले बानी। 'बीतल बात' शीर्षक गीत पुरान ग्रामीण संस्कृति आ आधुनिकता के कारण धीरे-धीरे विलुप्त होत लोकपरंपरा के बहुत मार्मिक ढंग से उकेरल गइल बा। जाँत-जतसार, ओखरी, मूसर, ढेकी आदि

www.bhojpurisahityangan.com

ग्रामीण जीवन के अभिन्न हिस्सा रहल साधन अब इतिहास के हिस्सा बनत जा रहल बाड़े। गीतकार एह बदलाव के केवल देखत नइखन, बल्कि ओकर पीड़ा के महसूस भी करत बानी।

"जात जतसार छूटल, छूटल चक्की ओखरी।
मूसर परईले, ढेकी भइली टुअरी।।
शहर के बियाह में माड़ो सुग्गा हेराइल।
हंसुआ के बियाह में खुरपी के गीत गवाइल।।"

एह पंक्तियन में बदलत समय के साथ लोकजीवन के छूटत प्रतीकन के स्मृति आ ओकर पीड़ा एक साथ दिखाई देला। विरह आ परदेश के कसक

'लिलरवा' में परदेश गइल मनई के मन के टीस आ गाँव-घर से जुड़ाव के बेजोड़ अभिव्यक्ति मिलेला। 'लिलरवा' में विरह केवल पति-पत्नी के दूरी ना, बल्कि अपन माटी, परिवार आ जड़ से दूर होखे के पीड़ा बन के सामने आवेला

" जहिया से सइयां मोरा-छूवलें लिलरवा,
जियरवा ना लागे रे नईहरवा।
विधना के खेल-नईहर छोट भइलें।
बाबू माई सगरो से-नाता मोट भइलें।।
जनम के कुल से-भइनी बहरवा।
जियरवा ना लागे...।"

एह गीत में परदेश के पीड़ा आ मायका से टूटत संबंधन के भाव बहुत सहज आ प्रभावशाली ढंग से व्यक्त भइल बा। राधा- कृष्ण के प्रेम आ लोकभाषा के मिठास 'लोभाइल बाडू' में राधा- कृष्ण के प्रेम के आधार बनावल गइल बा। गीत के संवाद शैली अत्यंत सहज बा आ एहमें भोजपुरी लोक-संस्कृति के मिठास भरपूर दिखाई देला

"राधा काहे आज-अतना लजाइल बाडू।
केकरा पर लोभाइल बाडू ना।।
तू त बाडू गमखोर-का
कवनो मिलल चितचोर।
घरी-घरी जालू जमुना
तीरे-बतीया होता चहुंओर।।
आज केकरा पर-अतना धधाइल बाडू।
कवना पर लोभाइल ...।"

गीत में प्रेम के लोकधर्मी रूप, चुहल आ संवाद के सुंदर समन्वय देखे के मिलेला। प्रकृति आ ऋतु-सौंदर्य के चित्रण 'पावस' प्रकृति आ ऋतु-चित्रण के सुंदर उदाहरण बा। पावस के आगमन के साथ मन में पैदा होखे वाला उल्लास, हरियरी आ ग्रामीण परिवेश के गीतकार बहुत जीवंत ढंग से प्रस्तुत कइले बानी

"मन हरियर हो जाता-पियर देख के।
पियरी में गोरी देख के ना।।
चना मटर गदराइल-महुआ चुये रसबोर।
निमन आम मोजराइल-कोयल गावे चहुंओर।।
मोर नाचता-बसंत नियरे देख के।
पियरी में गोरी...।।"

प्रकृति के एह चित्रण में रंग, ध्वनि आ लोकजीवन के सहज बिम्ब एक-दूसरा से जुड़त दिखाई देला।कजरी के लोकसुगंध भोजपुरी लोकगायन में कजरी के एगो खास महत्व बा। संग्रह के 'कजरी' में पारंपरिक लोकसुगंध के साथ कृष्ण-राधा के प्रेम-प्रसंग के सुंदर अभिव्यक्ति मिलेला -

"कान्हा कहाँ-गइले लुकाय हो।
राधा ढूँढें-गली-गली सगरी।।
बंसी के धुनवा सुनात आज नाहीं।
घरे नाहीं ना-कदमवाँ के छाहीं।।
कवन सखी-लिहलीं छुपाय हो।
राधा ढूँढें...।।"

एह गीत में कजरी के पारंपरिक भावभूमि, विरह आ प्रेम के मधुर संगम दिखाई देला।

पलायन आ गाँव के बदलत चेहरा

'गाँव भइल परदेश' संग्रह के एगो गंभीर आ विचारोत्तेजक गीत बा। गाँव से शहर की ओर बढ़त पलायन, शहर के चकाचौंध आ अपन गाँव से दूर होखे के पीड़ा एह गीत के मूल भाव बा

"शहर के सपना कइलस धूप अवरी छाँव जी।
छुटी गइले हित-नात, छुटी गइले गाँव जी।।
छुटी गइले हो...
छोड़नी जब घर त इचिको शहर न भावे हो।
छुट्टी पर छुट्टी लिहीं, चलीं जाईं गाँवें हो।।
बनल रहे घरवा अउर पुरखन के नाँव जी।
छुटी गइले हो...शहर के सपना..."

www.bhojpurisahityangan.com

एह गीत के सबसे महत्वपूर्ण पक्ष ई बा कि गीतकार शहर के आकर्षण के साथ-साथ गाँव से कटे के मानसिक पीड़ा के भी सामने रखले बानी। एह तरह से ई गीत आज के पलायनवादी समाज के एगो महत्वपूर्ण दस्तावेज बन जाला। पारिवारिक जीवन के सहज चित्रण 'ननदिया मोरी हो' में घरेलू जीवन, सास-ननद के नोकझोंक आ पारिवारिक ताना-बाना के सहज रूप से प्रस्तुत कइल गइल बा ।

"गइले सउदिया सईयां-उड़ी गइल निंदिया।
ऐ ननदिया मोरी हो।।
भइया राउर गइलें अनकर देश।
ऐ ननदिया...।।"

एह गीत में घरेलू संवेदना के साथ लोकगीतन वाली आत्मीयता आ संवादधर्मिता स्पष्ट रूप से दिखाई देला। कैलाश नाथ शर्मा 'गाजीपुरी' के पहिलका एकल गीत-संग्रह 'चलऽ चलीं गँउवाँ के ओर' भोजपुरी साहित्य में एगो महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में सामने आवेला। संग्रह के 84 गीतन में जीवन के अलग-अलग रंग, गाँव के माटी के सोन्हापन, लोक-संस्कृति के अनुराग, प्रेम-विरह, प्रकृति - सौंदर्य, पारिवारिक संबंध आ बदलत सामाजिक परिवेश के विविध रूप देखे के मिलेला। गाजीपुरी जी के गीतन के सबसे बड़ खूबी इनकर सहज भाषा, लोकधर्मी संवेदना आ गेयता बा। इहाँ के गीत में गाँव के जीवन केवल स्मृति बन के ना आवेला, बल्कि ओकर सुख-दुख, बदलाव आ संकट के साथ जीवंत रूप में उपस्थित रहेला। आधुनिकता के बीच लुप्त होत लोक-संस्कृति के प्रति चिंता आ अपन माटी से जुड़ाव एह संग्रह के विशेष पहचान बा। जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित ई गीत भोजपुरी गीत-साहित्य के समृद्ध करे वाला सराहनीय प्रयास बा। आशा बा कि 'चलऽ चलीं गँउवाँ के ओर' भोजपुरी के पाठक आ लोकगीत-प्रेमियन के बीच आपन विशिष्ट जगह बनाई। कैलाश नाथ शर्मा 'गाजीपुरी' जी के एह सुंदर रचना-संसार खातिर हार्दिक बधाई आ मंगलकामना।

❁❁❁

खेली के भीतर क खेला

- रवीन्द्र श्रीवास्तव

ओऽ बजारि में सजो बिकाऊँ चलीं खरीदल जा
ट्राफी डिगरी सजो विकति वा चलि के लीहल जा
टिकट विकाले सीट विकाला, इम्तहान में चीट बिकाला
का हो बाबू कइसन चाही, किसिम-किसिम क गीत बिकाला
कलम बिकाले सोच बिकाला, इहाँ खेलाड़ी कोच बिकाला
समय किनारे मुसकी काटे, नाकि के साथे मोछ बिकाला
थपरी बजा के खाली इहवाँ हा-हा ही-ही कइल जाला
कई मेडल खेली में पवलेऽ, देस क हरदम मान बढ़वलेंऽ
'खेलगाँव' में सड़क बनाइल, जुरल न पइसा टिकट न पवलेंऽ
केहु खोंखत बा केहु हाँफत बा, केहु रेकसा ठेला हाँकत बा
अपने समय क बड़ा खेलाड़ी, खटिया पर कण्ठी जापत बा
समय के ऊपर परल बा पपड़ी ओके छीलल जा
सब अपने के बड़का बूझत, कहीं बा केहू इनके पूछत ?
आयोजन में नाकि कटे तब, हाथ मलें कुछ नाहीं सूझत
का देला का लेला देखीं, खेलि के भीतर खेला देखीं
कुरसी-कुरसी दउरे भागे, पिकनिक वाला रेला देखीं
कवनो सूप बजाई जेसे सोच दरीदर जा

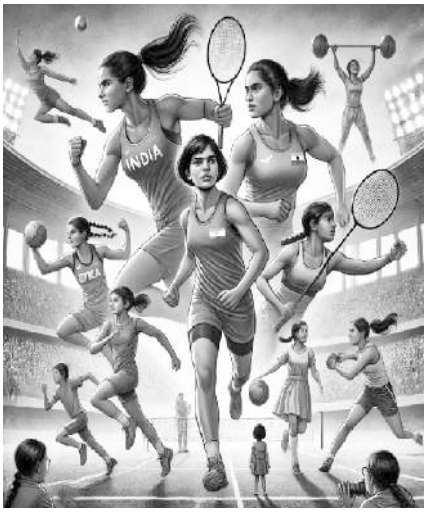

www.bhojpurisahityangan.com

परम्परा

बढ़ावन

- कृष्णदेव घायल

समिरिधी-बढ़न्ती के बिसवास ढोवत एगो सब्द जेवन परसन्नता के पोढ़ संघतिया बनि के चलत रहल बा । बढ़ावन के नाँव भोजपुरिहा समाज में बड़ा आदर का सड़े लीहल जाला । सब्द के मिठास अपन अलगे सवाद बुझावे के बेसी बा । बढ़ावन के सुगन्ध सब समान रूप से सोखत रहे । नाँव सुनते कुछ बिसेस तरे के उमंग तन मन में पईठ जाउ । लइकवन्हा लो जेठ बड़ पुरनियन से कारज कारन उपयोगिता जाने खातिर तनी घुसुक के कान में कल्ले से बतिआवे । ओइसे त एके नाँव से कइयों जगे कारज सपूरन होत रहे । भोजन भण्डार से संघत पंघत पत्तल तलक आपन सुगन्ध फइलावत बढ़ावन के उपस्थिति जवले ना होखे तले केहू कवर ना उठावे। बढ़ावन खातिर घीव के जोगाड़ प्रमुखता से होखे। तनी मनफईल बेकत का हाथे सँवारे के होखे त घीव के कटोरा कई बेर भरे के परे । पत्तल में भात, भात का गड़हा में दाल,दाल में घीव के बढ़ावन । खाँटी देसी घीव के बढ़ावन देवभोजन के सोभा सटावत वातावरन में किछु दूर तलक मरयादा पसार देस ।

भोजन के हर जिनिस परोसा का बाद बढ़ावन के मोका रहे । पंघत में बइठल हर बेकत का सोझाँ भर पत्तल बीजन, बढ़ावन के आवग जोहत रहे। बढ़ावन के जइसे लो देवता मान लेहल जेकर महिमा से रसोई घटे न पाई । भरोसा बिसवास जइसने पोढ़ सन्तुष्टी मन के मरम तलक छू जाय । कार परोजन में बढ़ावन के जवन आदर सम्मान रहे,देखते बने । खरावल घीव के सोन्हाई से नाक के आनन्द त मिलबे करे ,जीभिओ सवदगर कवर पा के हरषित हो उठे । जवन उमंग उछाह बढ़ावन सँवारे वाले परोसवइया के, खवइया के ओसे तनिको कमतर ना रहे । बढ़ावन परोस गईल समझीं बिजे हो गईल । एहमें जवन आदर बिसवास के भाव समाईल ओकर असर अतना भईल की अपना भोजपुरिया समाज में एगो परम्परा बन गईल। समता समरसता अउर एकता के सूता तरे बढ़ावन, हर बरग जात में दुलरुआ रहल हवे । छोटका बड़का, समरथ, सजोर नजोर सभका साथे समान भाव बेओहार बढ़ावन के अपन परभाव बा । बढ़ावन बदे घीव जब कटोरा में खरावल जाला त ओमे एगो संगीत जनम लेले जवना के भाव अरथ सम्बोधन ,समाज के किछू सिखावे चाहता । आग के तपन सहि के सेवा बदे अपना के समरपित कइला के एसे बड़हन परथोक कमे जगहाँ भेंटाई । बढ़ावन के महातम का दिसाईं बहुरंगी समाज के एकरंगी दिरिष भरपूर बा । ई बढ़ावन अउर खलिहा बढ़ावन के बस के हवे । बारहो परकार के बीजन होखे त ओसे का , दू ठोप बढ़ावन सबसे बली बा ।

घीव के बढ़ावन के बतकही इहवें छोड़ के किछु आगे बढ़ल जाउ त किसान, खेत, खरिहान, अनाज के रासी लउकेले। अनाज के रासी पर बढ़ावन के रूप गोबर के गोला बना के राखल जाला। मानता बा कि रासी पर बढ़ावन स्थापित कर देला से आँकल अनाज से बेसीये मिली। गोबर के गोला (बढ़ावन) के ईजत शालीग्राम के बरोबरे होखेला। अपना समाज में जहाँ दूध दही घीव मेवा मिष्ठान परकिरती के परसन्न करे बदे आग में जरावल जाला ओइजुगिये मनई के सुद्ध करे बदे ओके गोबर खियावल जाला। अनाज जइसे जइसे खरिहान से घरे डेहरी ठेकी तलक चहोंपी, सडे. सडे. बढ़ावनो चलत रही। अनाज के रासी पर गोबर के बढ़ावन देखला सुनला में अबूह (बेमेल) भले लागत होई बाकिर गोबर से घर अंगना दुआर लिपा के चिकन पबित्तर होखेला । पूजा पाठ का जगहीं गोबरे से लिपाला अउर ना त गउर गनेस के झटपट मूरत के निरमान गोबर से कइके सजावट का बाद पूजा पाठ होई। गोबर के बढ़ावन सूख जाउ त का,ओकर परभाव हरमेस बराबर रहे। बढ़ावन के नाँव उचारन में अन्तरमन से उपजल ध्वनि उल्लास के अनुभो करा देवेले। जइसे पंघत पाँत पत्तल पर परोसल प्रसाद (भोजन) के परम्परा के उठान हो रहल बा ओइसहीं घीव के बढ़ावन के रीति नीति ओरा रहल बा ।

www.bhojpurisahityangan.com

अनाज खेत से सीधा दुअरा पर फेरु घर में डेरा जमा लेवल सीख लेलस। खरिहान के कुल्ही सुतार बिसार दियाईल । ना उहाँ अनाज के रासी बा ना त बढ़ावन के कउनो दरकार । कत्तों कत्तों डेहरी, ठेकी ले सोभायमान बा त बा । बढ़ावन के एगो आउरो रूप अपना गति से अबहीं तलक दउड़ लगा रहल बा । दोकान धन्धा वाला लो के नियमित नियत समे पर मलहोरी भाई कुसुम (फूल पाती) बढ़ावन चहोंपा देवेलन । दोकान धन्धा कउनहूँ किसिम के होखे,कतनो छोट से छोट, बड़ा से बड़ा कारोबार, सभका किहाँ समान भाव से कुसुम बढ़ावन चहोंपत रहेला। एजगियो आदर सतकार में कउनो कमी नइखी देखात। मांस मछरी अण्डा पर,तरकारी सिद्धा मदिरा पर, कुल्ही छोट बड़ धन्धा पर मुस्कियात मउजत बा । बढ़ावन के अपन समतावादी बेवसथा पता नइखे कतना समे से चलल चल आवतिया। सामिष निरामिष,सबल निरबल,सबका साथे समान बेओहार निबाहत,आदर सतकार बिटोरत,दूबर परत समता समरसता के टेकावत बढ़ावन अबहियों अध्यात्म के सहारे आपन गति सधले चल रहल बा । असरा के गढ़ू गँठरी कपार से कभों उतरे ना । कारज के कुसलाई,भभिष के सुभकामना अउर खुसहाली के सुगन्ध लभेरले बढ़ावन के बड़हन बिधान बा । बटुआ, झाँपी,तिजोरी में संखिया कउड़ी बढ़ावन के एगो अलगे रूप हवे। घीव के बढ़ावन भोजन में पोषक तत्व के उपस्थिति के बोध करावेला। गोबर से घिरना के भाव मेटावे में बढ़ावन के बिसेस सहयोग समाहित बा ।

कुसुम (फूल पाती) परकिरती में आसथा बिसवास जगावत पूजा के भाव जनमावत रहेला । कउड़ी दरब के दरवान के भूमिका निबाहत मगन बा । बढ़ावन सचकी जानी त मानव जीवन के साधना गँछिया के सोर हवे।

❁❁❁

चढ़ाई

- मारकण्डेय शारदेय

रुकि जा कुबेर तहरा पर करे चढ़ाई,
हम आवत बानीं, मर्द हवे ते डट जा ।
भूखा-नंगा लोगन के फौज खड़ा बा,
नाहीं तऽ धन सब छोड़, प्राण ले हट जा ।।
तहरा केने काहें नित चढ़ी कराही ?
मेवा पकवान मिठाई रोजे खइबऽ ?
हमरा चुल्ही में आग परे ना रोजे,
हम मातम सिर्फ मनाई ? जश्न मनइब ?
मखमली सेज पर काँट गड़ेला तहरा,
बोरा सुबहित हमनी के मिल ना पावल,
तू छिनि-छिनि वस्त्र बदलऽ समय मतिन का ?
हम एक लंगोटी पहिरीं चिटकट फाटल ?
तहरा पशुअन से गइल जिन्दगी बाटे,
आदमी कहाये वाला अब हमनी के ।
ई भेद मिटावे खातिर आवऽ तानीं,
एके अइसन हो जाइब तब हमनी के ।।
तू रोकऽ जतना शक्ति बिया तू रोकऽ,
बल बुद्धि लगाके कमर बान्हिके अड़ि जा ।
चुकिहऽ मत कवनो दाँव-पेंच से भाई,
मर्दाव दिखावऽ आवऽ निकल लड़िजा ।।
हमरा मिहनत के फल जिनिगी भर खइलऽ,
हम सिट्ठी खाके, आँसू पीके बानीं ।
अब ओर-छोर पा गइलीं एह कुदिन के,
धावल फरियावे खातिर आवऽ तानीं ।।
धरती के स्वर्ग बनावे खातिर आपन
तन-मन न्योछावर करब सदा हँस-हँस के ।
हो एक बराबर हक जीये के सभके,
रोटी खातिर आदमी मरे न, तरस के ।।

www.bhojpurisahityangan.com

आन्दोलन

भोजपुरी बोले वाला लाखों लोग के संवैधानिक सम्मान मिले के चाही

- बाबा भोजपुरिया

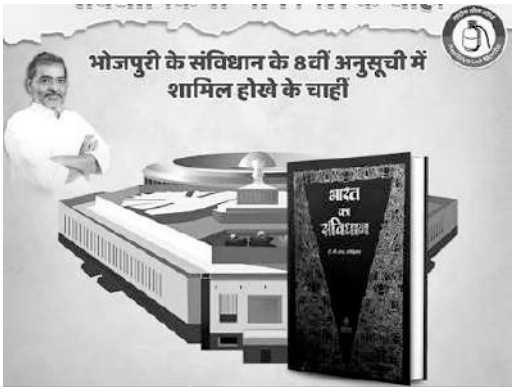

भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग छह दशक पुरान बा। ई मांग खाली भाषा के संवैधानिक स्थिति के बारे में नइखे, बलुक पहचान, साहित्य, शिक्षा, शोध, आ सांस्कृतिक संरक्षण के भी बा। संसदीय रिकार्ड बतावत बा कि अलग अलग राजनीतिक दल के सांसद बार बार एह मुद्दा के उठवले बाड़े. एकरा बावजूद केंद्र सरकार अभी तक भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल नईखे कईले। सबसे बड़ बात इ बा कि भोजपुरी के मांग 2026 में संसद में पहुंचल रहे, लेकिन सरकार आपन प्रतिक्रिया दोहरवलस कि नाया भाषा के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के कवनो निश्चित मापदंड चाहे समय सीमा नईखे। भोजपुरी के मांग कवनो नया नइखे। संसदीय रिकार्ड में कहल गइल बा कि ई दशकन पुरान बा। भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता हासिल करे के संसदीय प्रयास में प्रभुनाथ सिंह प्रमुख हस्ती रहल बाड़े। 19 दिसम्बर 2002 के लोकसभा में भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के जरुरत पर सरकार से जवाब मंगले. ओह घरी सरकार के कहनाम रहे कि भोजपुरी समेत 32 गो भाषा के शामिल करे के निहोरा लंबित बा आ नया भाषा के शामिल करे के वस्तुनिष्ठ मापदंड पर विचार कइल जा रहल बा।

8 दिसम्बर 2006 के प्रभुनाथ सिंह फेर लोकसभा में भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के मुद्दा उठवले. तत्कालीन गृह राज्यमंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल सदन में बतवले कि सरकार के बहुत दिन से अयीसन मांग मिलत रहे अवुरी भोजपुरी अवुरी राजस्थानी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे खाती कार्रवाई शुरू भईल बा। ओह बहस के दौरान कई गो अउरी सांसद भी भोजपुरी के समर्थन में आपन बात रखले। एकर मतलब इ रहे कि 2000 के दशक तक संसद के भीतर भोजपुरी के मांग एगो गंभीर राजनीतिक मुद्दा बन गईल रहे। भोजपुरी खातिर 2003 के संवैधानिक संशोधन काहे महत्वपूर्ण रहे? भोजपुरी के मांग के समझे खातिर साल 2003 बहुते जरूरी बा. 92वां संवैधानिक संशोधन अधिनियम 2003 में बोडो, डोगरी, मैथिली, आ संथाली के आठवीं अनुसूची में जोड़ल गइल. एकरा से आठवीं अनुसूची में भाषा के संख्या 22 हो गईल, गृह मंत्रालय के मुताबिक अभी इ 22 भाषा आठवीं अनुसूची में बा। इहां से भोजपुरिया समाज के बीच इ सवाल अउरी मजबूत हो गईल कि मैथिली के संवैधानिक सूची में शामिल भईला के बाद भोजपुरी काहे ना?

हालांकि इहाँ एगो महत्वपूर्ण तथ्य के समझल जरूरी बा कि आठवीं अनुसूची में कवनो दोसर भाषा के शामिल कईला से भोजपुरी के शामिल होखे के संवैधानिक अधिकार अपने आप ना मिलेला। हर नया भाषा में संसद के माध्यम से संविधान संशोधन के जरूरत होला। सरकार खुद सबसे बड़ बाधा बा कि उ मापदंड तय नईखे करत। भोजपुरी के मान्यता के लड़ाई में सबसे बड़ समस्या 'मापदंड' बा। संसद बार-बार कहले बिया कि

www.bhojpurisahityangan.com

आठवीं अनुसूची में नया भाषा के शामिल करे के कवनो निश्चित, वस्तुनिष्ठ मापदंड नइखे. त सरकार के एह बात के आगे बढ़ावे खातिर एगो समिति बनावे के चाहीं बाकिर ऊ एह पर काम नइखे करत। 1996 में एगो समिति बनल आ 1998 में आपन रिपोर्ट पेश कइलस, ओकरा बाद 2003 में सीताकांत महापात्र समिति के माध्यम से अइसन मापदंड बनावे के कोशिश भइल बाकिर सरकार के मुताबिक ई प्रयास निश्चित मापदंड स्थापित करे में नाकाम रहल। सरकार 2026 में एह रुख के दोहरवले रहे।28 जुलाई 2026 के रामाशंकर विद्यार्थी राजभर लोकसभा में भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के प्रस्ताव के स्थिति आ संभावित समय सीमा के बारे में पूछले। गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय जवाब देले कि समय-समय प भोजपुरी समेत कई भाषा के शामिल करे के मांग कईल जाता, लेकिन कवनो तय मापदंड नईखे, एहसे कवनो समय सीमा तय नईखे कईल जा सकत। ई प्रतिक्रिया भोजपुरी आन्दोलन खातिर सबसे महत्वपूर्ण वर्तमान तथ्य बा। प्रभुनाथ सिंह - भोजपुरी के मुद्दा उठावत रहे खातिर संसद में एगो प्रमुख नेता संसद में भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग लगातार उठावे वाला प्रमुख हस्ती में प्रभुनाथ सिंह के नाम अलगा बा। 18 दिसम्बर 2000 के लोकसभा में भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन के प्रस्ताव के लागू करे के मांग उठवले. विश्व भोजपुरी सम्मेलन के जिक्र करत उहाँ के भोजपुरी भाषी लोग के बड़ संख्या आ भाषा के संवैधानिक मान्यता के जरुरत पर जोर दिहलन।

एकरा बाद 19 दिसंबर 2002 के प्रभुनाथ सिंह फेर से लोकसभा में सरकार से जवाब मंगले कि भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के जरूरत बा। ओह बहस के दौरान उ इहो सवाल उठवले कि का प्रस्तावित व्यवस्था में भोजपुरिया क्षेत्र के विद्वान आ प्रतिनिधियन के पर्याप्त रूप से ठहरल जा सकेला।

18 दिसंबर 2006 के उ फेर गृहमंत्री के ध्यान ए मुद्दा प खींचले। सरकार के जवाब में कहल गईल कि भोजपुरी अवुरी राजस्थानी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे खाती कार्रवाई शुरू भईल बा। 23 अगस्त 2007 के प्रभुनाथ सिंह भी लोकसभा में बतवले कि भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के मुद्दा कई गो सांसद लोग द्वारा विभिन्न संसदीय चैनल के माध्यम से उठावल गइल बा। एह से उनकर संसदीय रिकार्ड के आधार पर प्रभुनाथ सिंह के ओह प्रमुख नेता लोग में गिनल जा सकेला जे बार-बार संसद में भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के मुद्दा उठवले। जगदम्बिका पाल व अन्य सांसद, मांग के विस्तार 2002 के लोकसभा बहस में तब के नेता रामविलास पासवान भी भोजपुरी आ मैथिली के मांग के समर्थन कईले रहले। उ सरकार से ए मुद्दा प एगो खास समय सीमा देवे के मांग कईले। ई एह से महत्वपूर्ण बा काहे कि भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के मुद्दा कवनो एक राजनीतिक दल तक सीमित ना रहे। विविध राजनीतिक पृष्ठभूमि के नेता लोग समय-समय पर एकर समर्थन करत रहे।

2009 में लोकसभा में एगो विशेष उल्लेख भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग भी शामिल रहे। संसदीय रिकार्ड में जय प्रकाश अग्रवाल, कीर्ति आजाद, महेश्वर हजारी, शाहनवाज हुसैन, अर्जुन राम मेघवाल, जगदंबिका पाल, रघुवंश प्रसाद सिंह, रेवेती रमन सिंह, आ तूफानी सरोज समेत कई गो सांसदन के नाम दर्ज बा। साल 2010 के संसदीय बहस में संजय निरुपम भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के मांग के भी समर्थन कईले रहले। भोजपुरी टेलीविजन आ सिनेमा के विस्तार के हवाला देत उ बतवले कि भोजपुरी बिना सरकारी सहयोग के भी एगो मजबूत सांस्कृतिक आ मीडिया क्षेत्र के निर्माण कईले बिया।

17 मई 2012 के लोकसभा कार्यवाही में जगदम्बिका पाल भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के मुद्दा के प्रमुखता से उठवले रहली। उ बतवले कि संसद में इ मांग कई साल से उठल बा अवुरी सरकार एकरा प विचार प भी चिंता जतवले बिया। एह से साफ पता चलत बा कि भोजपुरी के मुद्दा विभिन्न राजनीतिक दल आ क्षेत्र के सांसदन तक चहुँप गइल रहे। 2019 आ 2020 में सांसदन के सामूहिक दबाव भोजपुरी के मांग खाली एक दू गो सांसद ले सीमित ना रहे. 1 जुलाई 2019 के लोकसभा के आधिकारिक रिकार्ड में कमलेश पासवान, किरीत सोलंकी, नारनभाई कछड़िया, पुष्पेन्द्र सिंह चंदेल, रवि किशन शुक्ला, संजय जायसवाल, आ उदय प्रताप सिंह के ओर से भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग दर्ज बा।

www.bhojpurisahityangan.com

18 मार्च 2020 के लोकसभा भोजपुरी, आ राजस्थानी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग भी उठवलस। एह दौरान अर्जुन राम मेघवाल, चंद्र प्रकाश जोशी, देवजी पटेल, जगदंबिका पाल, जनार्दन सिंह सिग्रीवाल, मलुक नगर, निशिकांत दुबे, राम पाल यादव, आ रितेश पाण्डेय समेत कई गो सांसदन के नाम आधिकारिक रिकार्ड में दर्ज बा. एह आंकड़ा से एगो महत्वपूर्ण राजनीतिक तथ्य सामने आवत बा कि भोजपुरी के मांग कवनो एक पार्टी भा नेता के एकमात्र मांग ना ह।संसद में 2022 के बाद भी भोजपुरी के आवाज उठल जारी बा 2022 में आजमगढ़ से सांसद बनल भोजपुरी अभिनेता दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' भी अपना शुरुआती संसदीय हस्तक्षेप में भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग कईले। समकालीन रिपोर्ट में उनुकर लोकसभा बयान के जिक्र बा। 10 फरवरी 2022 के जगदम्बिका पाल भोजपुरी, राजस्थानी, आ भोती के लोकसभा में आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग उठवली।

एकरा अलावा 3 अगस्त 2023 के राज्यसभा के आधिकारिक रिकार्ड में भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग दर्ज बा। सदस्यन में अमर पटनायक, प्रकाश जावड़ेकर, राधा मोहन दास अग्रवाल, सस्मित पात्रा, सीमा द्विवेदी, आ रामचंद्र जंगला शामिल रहले.

इहे सवाल 2025 में फेर से उठल 19 मार्च 2025 के सुनील कुमार लोकसभा में विशेष उल्लेख के माध्यम से भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग उठवले। संसदीय डिजिटल रिकार्ड में एकर साफ-साफ जिक्र बा। एकरा बाद 6 अगस्त 2025 के विजय कुमार दुबे भी लोकसभा में भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के जरूरत के मुद्दा उठवले। 11 फरवरी 2025 के रामाशंकर विद्यार्थी राजभर भी भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के मुद्दा उठावत कहले कि भोजपुरी भाषी समुदाय बहुत दिन से एह मांग के उठावत आइल बा। उहाँ के भोजपुरी के व्यापक सामाजिक आ भौगोलिक प्रसार के भी जिक्र कइले। एह से साफ पता चलत बा कि 2025 में भी भोजपुरी मुद्दा संसद में सक्रिय रहे। 28 जुलाई 2026 संसद में भोजपुरी के संवैधानिक अधिकार के सवाल गूंजत बा 28 जुलाई 2026 के रामाशंकर विद्यार्थी राजभर लोकसभा में भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग जोरदार तरीका से उठवले, सरकार से पूछले कि एह प्रस्ताव के वर्तमान स्थिति का बा आ भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता कब दिहल जाई।

सरकार जवाब दिहलसि कि भोजपुरी समेत कई गो भाषा के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग लगातार मिलत रहल बा बाकिर नया भाषा के शामिल करे के कवनो तय आ सर्वमान्य मापदंड नइखे. एह से भोजपुरी के समावेश खातिर कवनो खास समय सीमा दिहल संभव नइखे. सरकार एह संबंध में पहवा समिति आ सीताकांत महापात्र समिति के प्रयास के भी जिक्र कईलस। बाकिर एह प्रतिक्रिया से भोजपुरिया समुदाय खातिर एगो महत्वपूर्ण सवाल रह गइल बा कि जब सरकार अबहीं ले नया भाषा के संवैधानिक मान्यता देबे के साफ मापदंड ना बनवले बिया त भोजपुरी जइसन समृद्ध आ व्यापक लोकभाषा के दावा के निष्पक्ष मूल्यांकन कवना आधार पर होखी? भोजपुरी समर्थकन के तर्क बा कि सरकार के मान्यता के मांग में अनिश्चित काल तक देरी करे के बजाय पहिले पारदर्शी मापदंड स्थापित करे के चाहीं आ ओकरा बाद ओह मापदंड के आधार पर भोजपुरी समेत सगरी दावेदार भाषा के बराबर मूल्यांकन करे के चाहीं।

भोजपुरी के माँग खाली भावनात्मक आकर्षण ना ह- लाखों लोग के भाषा, साहित्य, संस्कृति, आ भाषाई पहचान से संबंधित बा। एह से भोजपुरिया समाज अब खाली सरकार के अगिला प्रतिक्रिया पर ना, बलुक एगो साफ नीति आ ठोस फैसला पर नजर डालत बा भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के का मतलब बा?

भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के मांग खाली संविधान में नाम जोड़े के मांग ना ह। एह में भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति, आ लाखों भोजपुरी भाषी लोग के भाषाई पहिचान आ मर्यादा से सरोकार बा। भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में वर्तमान में 22 गो भाषा शामिल बाड़ी सऽ। संबंधित संवैधानिक प्रावधान अनुच्छेद 344 आ 351 में दिहल गइल बा, हालाँकि, ई समझल जरूरी बा कि आठवीं अनुसूची में शामिल कइला से कवनो भाषा के भारत के राष्ट्रीय भाषा

www.bhojpurisahityangan.com

अपने आप ना बनावल जाला। भारतीय संविधान में कवनो भाषा के राष्ट्रीय भाषा के दर्जा नइखे दिहल गइल। एही तरे भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के मतलब इ नईखे कि अगिला दिन से हर केंद्र सरकार के कार्यालय, हर कोर्ट, चाहे हर स्कूल में भोजपुरी अनिवार्य हो जाई।

बाकिर आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के अपार प्रतीकात्मक आ संस्थागत महत्व बा. एह से भाषा संरक्षण, साहित्यिक विकास, अकादमिक शोध, अनुवाद, शब्दकोश निर्माण, आ सांस्कृतिक गतिविधियन खातिर संस्थागत आधार के मजबूत करे के संभावना बढ़ सकेला. एकरा से नया पीढ़ी में भोजपुरी के भविष्य के प्रति विश्वास भी मजबूत हो सकेला। भोजपुरी खाली संख्या के बात नइखे, बलुक मजबूत दस्तावेजीकरण के भी बा। भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता देवे खातिर वक्ता के संख्या ही एकमात्र आधार नईखे। भोजपुरी में समृद्ध साहित्य, लोकगीत, लोककथा, लोक रंगमंच, लोकोक्ति, मुहावरा, व्याकरण, शब्दावली, आ बहुत पुरान मौखिक परंपरा बा। भोजपुरी में उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, आ पत्रकारिता के विशाल निकाय भी बा। एकरा अलावा भोजपुरी सिनेमा आ संगीत एह भाषा के राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले गइल बा. एह पूरा धरोहर के वैज्ञानिक आ व्यवस्थित दस्तावेजीकरण के जरूरत बा जेहसे कि संवैधानिक मान्यता के मांग भावनात्मक स्तर पर ना, बलुक मजबूत अकादमिक आ तथ्यात्मक आधार पर पेश कइल जा सके भोजपुरी के आवाज अब फैसला के मांग करत बा।भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के मांग के महज भावनात्मक मुद्दा मानल ठीक नइखे. ई एगो सवाल बा जवन हमनी के भाषा, संस्कृति, साहित्य, आ भाषाई पहचान से जुड़ल बा। भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता के लड़ाई लमहर रहल बा, बाकिर हमनी के आवाज आजुओ जिंदा बा–आ अब ई आवाज फैसला के माँग करत बा. आज हमनी के सबके खातिर एगो निहोरा बा कि भोजपुरी खातिर आवाज उठाई, जहां बा, जवन होखे।

अपना जनप्रतिनिधि से कह दीं कि भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे खातिर पहल करस. अपना सोशल मीडिया पर भोजपुरी के मान्यता के सवाल उठवले, दोसरो के संदेश फइलवले आ एह अभियान के आवाज उठवनी. सबसे जरुरी बात भोजपुरी बोलत घरी संकोच मत करीं. घर में, समाज में, बाजार में, मंच पर आ सोशल मीडिया पर उहाँ के गर्व से भोजपुरी बोलत रहनी। आपन भाषा, आपन पहचान, आपन गौरव – भोजपुरिया। भोजपुरी बोले, भोजपुरी लिखे, भोजपुरी खातिर आवाज उठे। अब चुप मत रहऽ – पह,चान खातिर आवाज उठाईं !

❁❁❁

बागी बलिया

-शम्स जमील (गोपालगंज)



विरन के ई खादान रहल बा,
हर उमिर में ऊर्जावान रहल बा।
देश के खातिर बागी बलिया,
के छाती उतान रहल बा।।
माटी में एकरा हाल बाटे,
जनपद बड़ी बेमिसाल बाटे।
एही जिला में सुप्रसिद्ध,
देखी एगो सुरहाताल बाटे।।
बाल्मीकिजी की देख रेख में,
नाम जेकर बलियान रहल बा।
देश खातिर बागी बलिया,
के छाती उतान रहल बा।
विरोध के बोल जागल रहे,
हुकूमत अंग्रेजी भागल रहे।
सन सत्तावन में एही माटी से,
युद्ध के डंका बाजल रहे।
चिन्तू पांडेय, मंगल पांडे जइसन,
वीरता जहाँ प्रधान रहल बा।
देश के खातिर बागी बलिया,
के छाती उतान रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

मितवा

स्वतंत्रोत्तर-समग्र राष्ट्रीय यशोगान



- डॉ. जौहर शफियाबादी

धनऽ धनऽ भूमि भइया भारतऽ के देशवा से, हमनी के प्राणऽ के आधारऽ मोरे मितवा ।
उत्तरऽ दिशा में ठाढ़ऽ हिमऽ-कोतवलवा से, बर्मा, नेपालऽ, चाई, थारऽ मोरे मितवा ।
पूरुबऽ पश्चिमऽ पाकऽ-बंगऽ जसऽ देशवा से, दक्खिनऽ में सिंधु रसधारऽ मोरे मितवा।
गोदिया में खेले जहाँ गंगा रे यमुनवा से, अपरऽ अनेकऽ नदी-नारऽ मोरे मितवा।
भोरे-भोरे झाँके जहाँ पहिली किरिनिया से, हिमऽ खोहऽ मारे पिचकारऽ मोरे मितवा ।
भिन्नता में एकता के फहरे पताका जहाँ, जगऽ गुरु देशवा हमारऽ मोरे मितवा ।
सुभगऽ सुभूमिया के आनऽ बानऽ शानऽ खातिर, मनवा में करऽ ना बिचारऽ मोरे मितवा।
कवनो बलिदानवा में पीछे नाहीं हटे कबो, वीरऽ भूमि यू. पी. आ बिहारऽ मोरे मितवा ।
मिली-जुली सब जनऽ, सूजसी सिपाही बनऽ, देशवा के इहे बा पुकारऽ मोरे मितवा।
वीर कुँवर, टोपे, पीरऽ, मंगल, लक्ष्मीबाई, जेही परऽ भइलें निछारऽ मोरे मितवा।
पंजाब, केरल, गुजरातऽ, मराठवा से, जुगनऽ के जदुआ अपारऽ मोरे मितवा।
उड़िसा, आसाम, कश्मीरऽ, कोलकत्तवा से, अपर प्रदेशऽ देश सारऽ मोरे मितवा।
अलगऽ अलगऽ भेषऽ सब के बा एके देशऽ, सधन बगन में अनारऽ मितवा ।
मन्दिर-मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारा जहाँ गले मिले, जस गंगा यमुना के धारऽ मोरे मितवा ।
हिन्दू-मुसलमानऽ, सिखऽ अउरी इसाई नीकऽ, देशवा के अपना श्रृंगारऽ मोरे मितवा।
जहवाँ दिवाली, ईदऽ, होली, बइसाखी, क्रिसऽ, सुभग-सुघर त्योहारऽ मोरे मितवा।
पढ़ि-पढ़ि सब सीखे गुनी-गुनी जग जीते, मोरे बाप-दादा के बिचारऽ मोरे मितवा।
रामऽ, कृष्णऽ, बुद्धऽ महावीरऽ के जन्म जहाँ, जहाँ ऋषि गावे वेदऽ चारऽ मोरे मितवा।
नानकऽ, कबीरऽ, ख्वाजा, खुसरू, निजामऽ जहाँ, अलखऽ के गतिया के धारऽ मोरे मितवा।
विद्यापति, कालिदासऽ, सुरऽ, गालिब, टैगोरऽ, तुलसी के गजबे बहारऽ मोरे मितवा।
जाड़ा-गर्मी-वर्सात, शिशिर बसंत, हेम, ऋतु माह बारे गुलजारऽ मोरे मितवा ।
महुआ मदनऽ रसऽ दुमबटऽ, पीपलऽ से, आम, जामुन, लीची, नीम, झारऽ मोरे मितवा ।
केतकी गुलाब फूले, बेली आ चमेली जहाँ, गेंदा, गंधराजऽ, कचनारऽ मोरे मितवा ।
कुहूकि के बोले जहाँ पगली कोइलिया से, पपिहा के पी-पी जिउवामारऽ मोरे मितवा ।
जहाँ झाँके अगरऽ चननवा पवनवा में, कामिनी बिरह के कटारऽ मोरे मितवा ।
शेरनरऽ, मोरऽ, गायऽ चल्हवा मछरिया से, जहाँ भाँजे नारी तरूवारऽ मोरे मितवा ।
फल-फूल मेवा-मिष्ठानऽ के बगानऽ जहाँ, जहाँ धान-गेहूँ के अटारऽ मोरे मितवा।
सीमवा पर गरजेला देश के जवान जहाँ, खेतऽ में किसानऽ के कुदारऽ मोरे मितवा ।
ज्ञान-विज्ञानऽ, खानऽ, कल-कारखानवा से, नयकी सदी के उपहारऽ मोरे मितवा।
कई गइलें सबऽ वीरऽ धीरऽ कटवाई सिरऽ, देशवा के मुँह उजियारऽ मोरेऽ मितवा ।
सब में बेजोड़ देश, जग के निचोड़ देश, मोरे हिन्द अगम अपार मोरे मितवा।
कहत जौहरऽ जागऽ देश के जवनवा से, जीयऽ जनि जिनिगी उधारऽ मोरे मितवा ।

www.bhojpurisahityangan.com

ट्रम्प बेचिहें झालर, उहो जबरदस्ती पकड़ के कॉलर

- कनक किशोर

गजबे नू भाई अमेरिकी चाल,
कइसन आइल समय,
सामंत बजावे गाल।
बात-बात पर हड़कावे,
टैरिफ के ऊ नाथ दिखावे,
झूठ-साँच दिन-रात बोलिके
नित दिन करे कमाल।
बात के जेकर तनिक ना मोल,
बूझे सिकंदर ओढ़िके खोल,
खुदहीं कहे हम बानीं अनमोल,
रोज करेला नया धमाल।

भइया ट्रम्प, ओह जमाना में तू ना रहऽ, बाकिर अताताई त हर काल में रहल बा रूप बदल के धरती पर। तोहरा जस के देखि बाबा के कहलका इयाद आवेला कि 'बड़का के नजर बदलत देर ना लागे, एही से दूरे रहिहऽ। ना जाने कब ऊ माथ चढ़ा ली आ ना जाने कब ऊ ऊपरे से पटक दी। ओकर धरम धन होला। मित्रता आ मानवता के पुजारी बनी त धन कहाँ भेंटाई? ना मानबऽ बाति त ओकरा हुरते देर ना लागे। पहिले त थुरे के कह डराई, लोक-लाज से ना थुरी त हुरे से बाज ना आई। ओकरा भीरी होला सब दवाई। कबो ऊ सामने ना आई त लठैत से डरवाई। पड़ोसी के उकसाई। आग आ आतंकवाद फैलाई। अपना अंगुरी पर नचावे खातिर जाल फैलाई, जे कटलो ना कटाई।'

एगो कहाउत ह कि बड़का के अगाड़ी आ घोड़ा के पिछाड़ी ना जाए के। डालर वाला बड़का त हइये ह, घोड़ा वाला गुणों बा ओकरा में। ई जानतो कुछ लोग लोभ में फँस जाला बड़का बने के चक्कर में, अउर कुछ लोग लतारो सही के पिछलग्गू बनत फिरेला मजबूरी वश बंधुआ मजदूर जस। कहल गइल बा कि दुधारू गाय के लातो बर्दास्त कइल जाला, बाकिर बंधुआ बनिके ना, भाई। पूँजीवाद के आपन धरम होला। ऊ रिश्ता का होला, ना जाने।



सटलऽ त गइलऽ, बेटा। धन आ धरम गंवइल बेटा के पोषक पूँजीवाद जरूर सटावेला अपना से, अपना स्वार्थ खातिर, बाकिर सटलऽ त कहीं के ना छोड़ी। ई जानतो सटे गइल बाड़ऽ त भगवाने नू मालिक। पूँजीवाद के जयकारा लगावे वाला में झाल बजाई भा ढोलक-मृदंग, आवाज राम नाम के ना गूँजी, गूँजी डालर के गूँज। चउथा आर्थिक शक्ति बन गइलो, पर रुपया के खनक ना सुनाय, सबकुछ डालरे से तउलाला। डालर के मुखिया जी के हर चीज में कमीशन चाहीं। हथियार-औजार से ढेर कमाई बा झालर बेचे में, एही से चीन से आयात कर अमेरिकी ठप्पा लगा झालर बेचे के तइयारी में बाड़ें बबुआ ट्रम्प।

ट्रम्प के ई दूसरी पारी ह। आगे के उम्मीदो नइखे। आग मूतत बाड़े, उहो खुला में। दूसरों के जरिहें आ खुदो जरिहें, इहे बुझात बा। हमनी का देश पर विशेष मेहरबान बाड़ें। पहिले जाल बिछा दाना डलले कि भारत आ फँसी अपने। ना फँसल आ बातियो काटे लागल त तितकी त लागहीं के रहे, से लागल। पाछा के लागल तितकी ना देखे के, ना दिखावे के। त फलाफल आइल डबल वार के रूप में टैरिफ 50 प्रतिशत।लोग कहता टैरिफ भले पचास प्रतिशत, बाकिर धोखा सई प्रतिशत। पूँजीवाद के शब्दकोष में धोखा शब्द ना होखे।

www.bhojpurisahityangan.com

मेहरबानी शब्द ना होखे। घाटा शब्द ना होखे। बहुते बोल्ड अक्षर में लिखल रहेला 'फायदा', 'बाजार'। ओकर पालन कइल हर पूँजीवादी के संवैधानिक धरम होला। करमो ऊ करेला फायदा खातिर। बाजार में घंटा डोलावे खातिर नइखे नू बइठल। हमनी जस धरम-करम के नाँव पर धन खउरावे खातिर नइखे नू बइठल। ट्रम्प भाई, कमजोर जनि आँक, जमाना बदल गइल बा। रामायण नइखे पढ़लऽ ठीक से, ना त हइसे जुलुम पर उतारू ना होखितऽ। आँखिन के पानी हइसे ना मरित। बाकिर इयाद दिया देत बानीं रामायण के वाणी कि 'इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं। करोड़ों की जुबान के सवाल पर सरकार मौन तोहरो पाला पड़ल बा एगो बड़ धुरंधर से। तूं धन धुरंधर, त मोदी बाबा मन के बाति बूझे वाला बूझऽकड़। देखिहऽ, सावधाने रहिहऽ। भारत टूटल जानेला, झुकल ना, ट्रम्प भाई। इहो जानिलऽ, विपरीतो मौका के भंजावे जानेला। कहीं तोहार दाव उल्टा जनि पड़ी जाय आ भारत खातिर 'अमृत' निकाले जइसन मौका ना हो जाय। असहूं अमृत मंथन से निकलेला। मानियो लिहीं कि अमृत कलश तोहरा हाथे आ जाय त का तू रखि पइबऽ? ना भाई, सुरा वाला के हाथ अमृत लागि जाई त मोल ना नू बूझी। धरम धुरंधर मोदी बाबा छीन के ले अइबे नू करिहें। असहूं मोदी बाबा सपना में आके डेरावते बाड़े, राति के नींद हराम कइये देले बाड़ें। सावधान-सावधान के आकाशवाणी होता, समझीं आ सचेत रहीं आ अपना मुख्य सचेतक के आदेश दीं, भारत से जनि लगावे-बझावे।

नीति कहेला कि अपना खातिर खड़ा होखल जरूरी बा, ई काम कवनो गलत ना कहाई। बाकिर दूसरा के दिन-दहाड़े लूट के ना, गड़हा में ढकेल के ना। प्रतिस्पर्धा सही ह, बाकिर गला काटि बाजार जाल बिछा के ना। दूसरों खातिर खड़ा होखे के स्पेस देके। ओहू में वाजिब संतुलन जरूरी होला। समझदार बेवसायी आ धुरंधर राजनेता के एह बाति के समझ होखे के चाहीं। भाई ट्रम्प, राउर चाल उल्टा पड़त बा, तब त अपने देश में हजारन सवाल उठत बा। आपन टैरिफ थोपे के अधिकार देखऽ, का ई संवैधानिक बा? इहो जानि लऽ, तोहार टैरिफ नीति अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर भारी आ विपरीत पड़ल त ना घर के रहबऽ, ना घाट के। रोआई आई त आँसू पोंछे वाला ना दिखाई पड़ी। हँ, चीन के झालर मिलत रही आ ओकर बैपार ना रूकी। भारत-चीन भाई-भाई के स्थिति देख चुकल बा जमाना आ भारत आजुओ झेल रहल बा ओह भाईचारा के दरद। तोहार चीन के दोस्ती खातिर मुबारकबाद। झालर बेवसाय के उन्नति दिन दूना, रात चौगुना बढ़े, इहे शुभकामना बा।

अमेरिका-चीन भाई-भाई, बचिके रहिहऽ, ना त थउसाई। भाई ट्रम्प, आह ना लेवे के चीज ह, उहो मतारी-पूत के। ओहनी के आह कबो बाँव ना जाए। तोहार फैमली सेपरेशन नीति के नया वर्जन एह मामले में अधिक मारक बा। बाकिर तोहार एह मारक नीति से उपजल आह तोहार एटमी मारक क्षमता से अधिक शक्तिशाली बा आ ओकर काटो तोहरा भा तोहरा सलाहकार के पास नइखे। ट्रम्प भाई जइसन चरित्र देखि माधव कृष्ण अपना पिताजी से अकारण क्रोध के कारण जानल चहले, त उहां के कहनीं कि 'बचवा! उग्र लोग किसी के मित्र नहीं हो सकते हैं। उग्रता अकारण होती है, इसलिए उग्रता का स्रोत मूर्खता होती है। मूर्खों से मित्रता की आशा रखना व्यर्थ है। मित्रता संवेदनशील लोगों का धन है, उग्र लोगों का नहीं। उग्र लोग अनप्रेडिक्टेबल होते हैं।'

नेचर आ सिग्नेचर जल्दी बदलवो ना करे। ट्रम्प खातिर उनुकर हाले के चुनाव में आपन सब कुछ दाँव पर लगा देवे वाला एलन मस्क के दूध में मक्खी जस फेंकत देर ना लागल, त दूसर के मित्रता के का कहल जाव। कुछ लोग आपन फायदा देखेला, ट्रम्प ओहि प्रजाति के जीव हवें। समरथ के नहीं दोष गोसाईं कहल गइल बा, बाकिर अत आ अताताई के बुरा अंतो देखल गइल बा। लक्ष्मी केकरा ना भावे। लक्ष्मी के महत्व सब दिन रहल बा। लक्ष्मी प्राप्ति खातिर रोक नइखे, बाकिर हइसे गला दबा के ना रे भाई। दिने-दुपहरिया टैरिफ के नाँव पर खुद से पॉकेट से निकलवा धरवा लेल रंगदारी टैक्स नू कहाई। मित्र देश पर अधिक टैरिफ के साथ पैनाल्टी मित्रता अनुबंध तुड़ले नू कहाई। ई त बात भइल लक्ष्मी जी के निमंत्रण भेजे के पहिले उरुवा के सादर बुला माथे बइठावल।

मति मारल के अब के समझाई,

www.bhojpurisahityangan.com

इनकर बा अब दोसर दवाई।
धन-सत्ता चाहे ई बउरइले,
शक्ति के मातल ई आन्हर भइले।
धन आ शक्ति मनई के होश में ना रहे देवे। उरुवा पहिले आइल त कहहीं के का बा। इनिका ई बुझाते नइखे कि सिकंदर बनिके का करीहें। अंत सिकंदर आ मुसलोनी केकर नइखे मालूम, बाकिर धन धुरंधर समझस तब त। हम त पहिलहीं कहले बानीं कि साधो!
कुछ ना साथे जाई,
का बनके करबऽ सिकंदर, हो जगवा छूट जाई।
जाई ना कुछुवो सथवा, हो एहिजे छूट जाई।
नेहिया के डोरिया से बान्ह ना तू जगवा के,
लूटबऽ कतनो धन जगवा के, ऊ साथे ना जाई।

पूँजीवाद में प्रेम-मित्रता के जगह ना होखे। हम त ना समझा पाइब, मोदी बाबा के कहब, रउवे समझाईं। मोदी जी से गलत गणना भइल बा, त उहां के दायित्व बनत बा समझावे के भा दवाई देवे के। कुल मिलाके पूँजीवाद जड़ में बा आ ट्रम्प भाई के चाहीं पूँजी, खाली पूँजी। पूँजी के पीछे आन्हर बा जवानध्ओही राहे बनल चाहत बा महान। ई देखत माधव कृष्ण के एह मत से सहमत होखे में कवनो दिक्कत नइखे बुझात कि 'कम्युनिस्ट विचारकों का यह तर्क भी लगभग सही है कि संसार के सभी संघर्ष आर्थिक संसाधनों पर प्रभुत्व जमाने के लिए होते हैं, भले उसका आवरण कितना सुंदर और उसका नाम कितना भी आकर्षक क्यों न हो।'अमेरिका भीरी आर्थिक संपन्नता बा, पूँजी के ढेर बा, बाकिर मानवता ना।

बाजारवाद के गिरफ्त में ओने मित्रता के हाथे बढ़ावल गलत रहे, बिसवासे कइल गलत रहे। खैर, अबहूं जागे के जरूरत बा आ इहे देश हित में बा। हम सुधरे वाला ना हईं। अमेरिकी कंपनी से झालर निर्यात के कांट्रेक्ट करे के प्रयास में बानीं। मिल जाई त ट्रम्प के पार्टनरशिप में झालर बेचल जाई। धने धरम ह, समझल जाई।

❁❁❁

जेकरा मूड़े मउर बन्हाइल

- आचार्य रामाधार ''व्याकुल''

काहें नाहीं लुटबऽ भइया, चारो ओर लुटाते बा।
जेकरा मूड़े मउर' बन्हाइल, उहो खेलत-खाते बा।।
माला पहिरऽ फीता काटऽ, मउजि करऽ रजधानी में।
सोझे कई बरिस खातिर तऽ गइलि भइँसिया पानी में।
अब हमनी की छाती पर तऽ कोदो खूब दराते बा।
काहें नाहीं लुटबऽ भइया चारो ओर लुटाते बा।।
लड़े घरइतिन[2] मनसेधू[3] से, भाई से भाई बाजे।
अब्बर-जब्बर, नात-बॉत, भाई-दयाद सबही ऑजे।
आपुस में मनई अनेर तऽ राति-दीन अँझुराते बा।
काहें नाहीं लुटबऽ भइया चारो ओर लुटाते बा।।
चीन्नी, चारा, अलकतरा, स्टैम्प अउर ताबूतन तक।
अन्हरा रेवड़ी जो बाटे तऽ बस अपनी यमदूतन तक।
राउर तऽ वेतन भत्ता छिम्मी अस रोज गोटाते बा।
काहें नाहीं लुटबऽ भइया, चारो ओर लुटाते बा।।



कगरी कऽरी राम-रहीमन, मन्दिर-मस्जिद सबका के।
कबों चैन मति लेबे देही, छोट-बऽड़ हर तबका के।
हीत-मीत सऽभे रउवा की करनी से नकुवाते बा।
काहें नाहीं लुटबऽ भइया चारो ओर लुटाते बा।।
देस, धरम-इमान कऽ ठीका, मिलबे कऽरी पक्का बा।
हमनी की किस्मति में तऽ खाहीं के लीखल धक्का बा।।
मछरी लेखाँ ''व्याकुल'' मनई राति-दीन भउराते बा।
काहें नाहीं लुटबऽ भइया, चारो ओर लुटाते बा।।

www.bhojpurisahityangan.com

कहाँ खोतवा लगइबू



- नित्यानंद ''आनन्द''



कहाँ खोतवा लगइबू' नित्यानंद 'आनंद' जी के इ कविता 'कहाँ खोतवा लगइबू' में लोक-जिनिगी के संवेदना काव्य के कैनवास पर उतरल बा। 'नित्यानंद' जी भी 'अनचिन्हार' कवि बानी। 'गैरखेमाबाज' भी कह सकत बानी। हालाँकि इ शब्द भा सीरीज कई लोग के तनिका तीत लागता। फिर भी हम 'तनि इनको के जानी' के 10वाँ कड़ी में एह कविता के ले के हाजिर बानी। कवि, हमरा खातिर नितांत अपरिचित बाड़न। अबहिन ले उहाँ से कवनो भेंट, मुलाकात (वास्तविक भा वर्चुअल दूनो माध्यम से) भा फोन पऽ कवनो बात-बतकही नइखे। एहि से उनका विचारधारा भा जाति के देख के एह रचना के नइखीं चुनले। इ बतावल बहुत जरूरी रहल हऽ। हमरा पऽ आरोप लागत बा कि 'पाटर्नर तुम्हारी पॉलिटिक्स क्या है?' हालाँकि हम एकरा से इचिको घबराइल नइखीं। रउआ आरोप लगाईं, फेसबुक पोस्ट लिखी भा कविता गढ़ी, इ सिलसिला अब ना रूकी। जवन बेइमानी भइल बा, उ सोझा अइबे करी। हालाँकि कायदे कविता के मेरिट पऽ इ बात करे के चांही। साथे-साथ इहो याद राखिं कि हमरे नात-रिश्तेदारी में केहु कवि भा साहित्यकार नइखे। हमरे एगो लकम भा बेमारी लाग गइल बा, सरिहा के पढ़े के। हम पाठक बहुत जब्बर हईं। एह से एह मूल्यांकन के पाठकीय प्रतिक्रिया के रूप में भर देखीं। अब तनिका कविता पऽ नजर डालीं। गहिराह अनुभूति आ सामाजिक - पर्यावरणीय संकट के प्रति संवेदनशीलता एकरा के खास मकाम देता। भीड़ से अलगा खड़ा करऽता

'निबिया के गाछि कटल, टूटल मड़ई
कहाँ खोतवा लगइबू बता दऽ चिरई
धरन धरातल गइल बड़ेड़ी शहतीर हो
खपड़ा के घर टूटल दे के गइल पीर हो
नरिया आ थपुआ फूटल, फूटल परई
कहाँ खोतवा लगइबू...
आम-अमवारी, महुआबारी बँसवारी
मूँज के झूँटा कटल, गइल उखिआड़ी
सपना भइल जाले, पूसे के तरई
कहाँ खोतवा लगइबू...
ताल-तलैया आ सुखल इनार हो
पोखरी आ पोखरा हो गइले किनार हो
सिधरी सिधार गइली रोवेली गरई
कहाँ खोतवा लगइबू...'

कविता शुरू होता एगो सवाल से। चिरई (पक्षी) सवाल पूछल जाता कि 'कहाँ खोतवा लगइबू...।' सवाल महज चिरई भर से नइखे जुड़ल। 'चिरई' के एहिजा सिम्बालिक माने-मतलब बा। असल में इ गाँव के बदलत परिवेश, माहौल आ ओकर पर्यावरणीय संकट के प्रतीक हऽ। कविता, गाँव के जिनिगी के टूटन आ प्रकृति से छेड़छाड़ भा अंधा लूट से पैदा पीड़ा के बयान करऽतिया। चिरई से सवाल में असुरक्षा आ बेघर होखे के डर बा। आधुनिक विकास के चक्कर में गाँवन आ ओकर प्रकृति से जुड़ता। इ अनुभूति कविता के भावुकता से अलग ले जाके दार्शनिक आ सामाजिक स्तर पर भी महत्त्वपूर्ण बनावऽतिया। चिरई के सवाल एगो

www.bhojpurisahityangan.com

अकेल शिकायत भर नइखे। गाँव-समाज के सोझा खड़ा असल संकट के एकरा में देखल जा सकता। असल में जब रउआ एकरा तनिका ध्यान से पढ़ब तऽ मनई आ प्रकृति के आपसी रिश्ता कइसे टूट भा कमजोर पड़ रहल बा, ओकरा के महसूसल जा सकता।

कविता के शिल्प, भोजपुरी के सहज आ स्वभाविक लोक-काव्य के लय से बनल बा। इ अइसन पूल बनता, जवन कवि के भाव के पाठक अंतर तक ले जाला। मसलन 'निबिया', 'मड़ई', 'खपड़ा', 'थपुआ', 'परई' कविता में अलगे रंग भरता। गाँव के जिनिगी के जवन सहजता बा उ अब कइसे खत्म होखे के कगार पऽ बा, एही के उजागर करऽता। हर अंतरा में दोहरावल गइल सवाल 'कहाँ खोतवा लगइबू' एक्के संगीतमय बनावऽता। लोकगीतन के बार-बार दोहरावे के शैली से लिहल गइल बा। इ दोहराव कविता के गीत जइसन बनावता आ चिरई के बहाने कवि जवन महसूस कर रहल बा ओह बेचौनी के पाठक के सोझा बार-बार ले आवता। इ कविता महज ग्रामीण समाज तक ना बलुक पर्यावरण के संकट के वैश्विक मुद्दा से भी जोड़ता।

कविता के अनुठा बिम्ब चयन एकर सबसे बड़ खूबी बा। असल में बिम्ब, काव्य के आत्मा कहल गइल बा। इ भावन के देखनउक बनावेला। चाहें रूप के बढ़ावेला। 'निबिया के गाछि कटल, टूटल मड़ई' से लेके 'ताल-तलैया आ सुखल इनार हो' तक हर पंक्ति एगो जीवंत लय खींचता। 'निबिया के गाछि' आ 'महुआबारी' जइसन बिम्ब गाँव के प्राकृतिक परिवेश आ ओकर सांस्कृतिक महत्त्व के बतावऽता। महज गाछ भा बगइया भर नइखे, गाँव के संस्कृति, रोजगार आ सामाजिक जिनिगी जरूरी अंग भा निशानी बा। 'निबिया के गाछ' के प्रयोग अनेक भोजपुरी लोकगीत में मिली। नीम के उपस्थिति से वातावरण के स्वास्थवर्धक बनावेला।

नीम के तेल से लेके टूसा आ दतुअन तक में खास गुण के महसूसल जा सकत बा। बाकिर अब उ नीम के गाछि कटि रहल बा भा कटि गइल बा, एह विंडबना के भी समझे आ बूझे के जरूरत बा। 'खपड़ा के घर टूटल' आ 'सुखल इनार' जइसन बिम्ब विकास के नाम पऽ बरबादी के दिखावत बा। गाँव के जिनिगी 'एसडीजी' के गोल आ नारा चले से पहिले सतत विकास के आपन दैनिक कार्य-व्यवहार में उतार लिहले रहल हऽ। एह कविता के बिम्ब स्थिर नइखे सऽ, चलत-फिरत भा गतिशील बाड़ऽ सऽ। काहेंकि उ एक के बाद एक विकृति के कहानी कहत बा बतावऽता। हर बिम्ब, पिछला बिम्ब से जुड़ के एगो लड़ी बनावऽता। एह के गाँव के विद्रूप माहौल के क्रमब) तरीका से देखावऽता।

ओहिजे भाव के नजर से इ कविता करुणा, क्षोभ, नॉस्टैलजि आ सवालन के मिलन बा। कविता के भाव ओकर सामाजिक आ दार्शनिक महत्त्व तय करेला। इहाँ चिरई के बेचैनी महज ओकरे तक सीमित नइखे। मय गाँव के लोग आ प्रकृति के बैचेनी, बेबसी एकरा में महसुसल जा सकता। 'दे के गइल पीर हो' आ 'रोवेली गरई' जइसन शब्द गाँव के दुख के बयान करऽता। इ दुख महज गुम होत पहचाने तक ना, व्यापकता से जुड़ऽता। 'सपना भइल जाले, पूसे के तरई' जइसन भाव गाँव के सपनन आ चाहत के त्रासदी बतावऽता। कविता के भाव आधुनिकता आ पुरान परंपरा के बीच के द्वंद्व के बीच पीसत भा पेरात जिनिगी के भी दिखावऽता। नया विकास गाँव के बुनियाद के खोखला कर रहल बा। ओहिजे कविता के गठन में एकर खूबसूरती देखल जा सकता। कविता के बाहर आ भीतर दूनो पक्ष में संतुलन बा। चार अंतरे में बँटल बा। हर अंतरा एगो नया छवि गढ़ता आ संकट उभारता। फिर भी मय एक्के सवाल से जुड़ऽता।

इ ढाँचा, कविता के एकरस नइखे होखे देत। हर अंतरा में नया भाव पैदा करऽता। पहिला अंतरा घर आ छाँव के टूटल, दूसरा गाछ आ खेती के नाश, तीसरा पानी के स्रोत के सूखल आ आखिरी अंतरा लोक संस्कृति के हानि के चित्रित कइले बा। इ क्रम कविता के एगो मोसल्लम कहानी जस बनावता। जवन पाठक भा स्रोता के गाँव के संकट के पूरा हाल दिखावऽता। असल में इहे कविता के भावुकता में महज बहे के ना ना बलुक सोचे-विचारे पऽ मजबूर करऽता। आनंद जी के एह रचना के विशिष्टता ओकर नयापन आ पाठक पऽ असर में बा। इ ना तऽ छायावाद जइसन रहस्यमयी बा, ना प्रगतिवादी कविता जइसन जोरदार। असल में एकर खासियत भाव के गहिराइ आ पर्यावरणीय संकट के प्रति

www.bhojpurisahityangan.com

संवेदनशीलता में बा। चिरई से सवाल एगो नया प्रतीक बा। जवन प्रकृति आ मानव के बीच सहजीवन के दिखावऽता। इ प्रतीक कविता के महज गाँव तक महफूज नइखे रखत बलुक वैश्विक पर्यावरण के बहस से भी जोड़ता। संघे-संघे प्रयोगधर्मिता भी कविता के खास बनावऽता। लोक-शैली रंग से इ आवेशित बा। बाकिर एकर केंद्रीय तत्व पर्यावरण के नाश आ गाँव के टूटन के साँच-सपाट बयानी एकरा के आधुनिक बनावत बा। इ नयापन आजु के समय-संदर्भ से जोड़ऽता।

'चिरई' के बहाने एकरा के प्रकृति के मानवीय भाव से जुड़ता। साथ ही भोजपुरी के बिलाइल भा गुम हो गइल शब्दन के भरपूर इस्तेमाल आ लय एकरा के एक ओर पुरान जड़ से जोड़ता, साथे साथ पर्यावरणीय चिंता एकरा से प्रासंगिक, समकालीन आ आधुनिक बनावऽता। कवि एह संतुलन के कायदे से सधले बाड़न। इ एह रचना के साहित्यिक आ सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण बनावऽता। कविता के महत्त्व आज के अउर बढ़ गइल बा। असल में कविता के प्रासंगिकता ओकर सामाजिक आ ऐतिहासिक संदर्भ से तय होला। इ कविता पर्यावरण संकट, गाँव के उजड़ल आ संस्कृति के नाश जइसन मुद्दा उठवले बिया। इ 21वीं सदी के भारत आ दुनिया खातिर जरूरी मुद्दा भा मसला बा। 'ताल-तलैया आ सुखल इनार हो' जइसन पंक्ति जलवायु के बदलाव आ जलसंकट के भी बतावतिया। 'सपना भइल जाले, पूसे के तरई' गाँव के आर्थिक आ सामाजिक हाल के उजागर करऽतिया। इ बाहरी पहलू कविता के साहित्य से आगे ले जाके एगो सामाजिक दस्तावेज बनावऽतिया। साथे-साथ कवि एह के माध्यम से नया विकास के दुष्परिणाम भा नतीजा पर सवाल उठवले बाड़न। गाँव के जिनिगी के फिर से बचावे के जरूरत भी बतवले बाड़न। कविता के भीतरी आ बाहरी पक्ष एक-दूसरे से जुड़ल बा। भीतर से, इ कविता अपना भाव, शिल्प आ बिम्बन से पाठक के मन के झकझोरत बिया। बाहर से, सामाजिक, पर्यावरणीय आ सांस्कृतिक संकट के सोझा ले आवऽतिया। चिरई से सवाल 'कहाँ खोतवा लगइबू' महज एगो सवाल भर नइखे, बल्कि इ सोचे खातिर मजबूर करता। पाठक भा स्रोता के पर्यावरण आ समाज के प्रति आपन जिम्मेदारी पऽ बिचार करे के मांग करऽतिया। असल में नित्यानंद 'आनंद' के इ रचना प्रयोगधर्मिता, विशिष्टता आ भाव के गहराई के चलते साहित्यिक रचना से आगे ले जाके सामाजिक बहस के हिस्सा बनावऽतिया। प्रकृति आ मानव के रिश्ता के नजरअंदाज करल मानवता खातिर खतरनाक होखी।

❁❁❁

गजल

- मनोज भावुक



केहू कब ले नकारी हमरा के
केहू कब ले सुनी ओ लबरा के
हम त सुरज हई निकलबे करब
जांई समझा दीं, करिया बदरा के
आग के राग अब कढ़ावे दीं
हो गइल गीत गजरा-कजरा के

सोंच के आग जब लहक जाला
राख कर देला झूठ-चदरा के
रात-दिन ऐब खोजे अनका में
खुद के लउके ना मन के अन्हरा के
तुँ सँवारऽ बगइचा ए भावुक
कूदे-फाने दऽ चंद बनरा के

www.bhojpurisahityangan.com

दैहिक आ शारीरिक शोषण

- आचार्य पुण्येषानन्द अवधूत



जब दोसर आदमी के शरीर आ शारीरिक क्षमता के साधन बनाके आपन, अपना परिवार, रिश्तेदार भा समुदाय के आर्थिक स्वार्थ पूरा कइल जाला, त ओकरा के शारीरिक शोषण कहल जाला। एह शोषण के परिणाम ई होला कि समाज के बहुसंख्य लोग शारीरिक आ मानसिक रूप से मजबूर मजदूर भा गुलाम बनके पशु-जइसन जिनगी जिए खातिर विवश हो जाला। राजतंत्रीय सामंती युग आ सामंती-ब्राह्मणवादी दौर में शारीरिक शोषण खूब फलल-फूलल। आजुओ जहाँ सामंतवादी अवशेष बचल बा, ओहिजा शारीरिक शोषण के परंपरा कवनो-न-कवनो रूप में मौजूद बा। समय आ परिस्थिति के हिसाब से शारीरिक शोषण के प्रमुख रूप ई सभ रहल बा दास भा गुलामी प्रथा, बेगार प्रथा, बंधुआ मजदूरी गिरमिटिया मजदूरी, वेश्यावृत्ति, बालश्रम,, अमानवीय काम आ कठोर श्रम, कम मजदूरी, बेसी काम, मानव अंग के चोरी-तस्करी आ बिक्री।

1. दास प्रथा भा गुलामी प्रथा-

प्राचीन मिस्र, यूनान आ वैदिक साहित्य में दास लोग के विस्तार से वर्णन मिलेला। मध्यकालीन दास प्रथा बहुत बेरहम आ अमानवीय रहे। दास लोग के खरीदल-बेचल जात रहे। उनकरा से भयंकर शारीरिक मेहनत करवावल जात रहे। मनोरंजन खातिर दास लोग के शेर से लड़ावल जात रहे आ आपस में भी युद्ध करवावल जात रहे, जवना में अक्सर उनकर मौत हो जात रहे। दास प्रथा दुनिया के बहुत हिस्सा में आज से लगभग 150-200 साल पहिले तक चलत रहल। अमेरिका में एह प्रथा के समाप्त करे में अब्राहम लिंकन के महत्वपूर्ण भूमिका रहल। दास लोग के जिनगी पशु से भी बदतर रहे। पशु त कम-से-कम स्वतंत्र रहेला, बाकिर ई अभागल मनई पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुलामी में जिनगी काटत रहल। ऋग्वेद में आर्य आ दास (अनार्य) लोग के बीच संघर्ष के अनेक उल्लेख मिलेला। युद्ध में हारल अनार्य लोग के बंदी बनाके दास बना लिहल जात रहे। ई लोग जीवन भर सेवा करत रहे। ऋग्वेद के एगो प्रसंग से ई भी संकेत मिलेला कि दास के पशु के तरह उपहार में दिहल जात रहे। दास लोग से घर के काम आ खेती दुनो करवावल जात रहे। महाभारत में दास के चार प्रकार बतावल गइल बा - युद्ध बंदी, जुआ में हारल, दान में मिलल, खरीदल गइल चाणक्य के समय में दास लोग के कई श्रेणी रहल , गृहजात दासी से पैदा भइल, दायागत पिता से उत्तराधिकार में मिलल, लब्ध दान में मिलल, क्रीत खरीदल गइल, ध्वजाहत युद्धबंदी, आत्मविक्रयी अपना के बेच देवे वाला, आहितक ऋण के बदला में गिरवी रखल गइल, दण्डप्रणीत दंड के परिणामस्वरूप दास बनल, कौटिल्य लिखले बाड़ें कि आर्यावर्त के निवासी दास ना हो सकेला। एहसे ई बात सामने आवेला कि दास बनावल मुख्य रूप से अनार्य लोग के जात रहे।

आज के अति पिछड़ा, अनुसूचित जाति आ अनुसूचित जनजाति के सामाजिक-आर्थिक जीवन में भी सामाजिक, आर्थिक आ मानसिक दासता के छाप देखे के मिलेला। राजस्थान के कुछ आदिवासी समुदाय आजुओ साहूकार आ शराब ठेकेदारन के चंगुल में फँसल मिलेला आ गुलाम-जइसन जिनगी जीएला। सामंती युग में पैदा भइल राजदासता के मानसिकता बाद में सामाजिक-मानसिक शोषण के रूप में अउरी गहिरा भइल। आज के पूँजीवादी दौर

www.bhojpurisahityangan.com

में उहे मानसिक दासता अति-स्वार्थ, भोगवाद आ व्यक्तिवाद के रूप में नया रूप लेत जा रहल बा।

2. बेगार प्रथा

गरीब आ कमजोर लोग से धौंस, धमकी भा दबाव डाल के बिना मजदूरी दिहले काम करवावल बेगार कहलाला। जब ई काम समाज में एगो प्रचलन भा व्यवस्था के रूप ले लेला, त ओकरा के बेगार प्रथा कहल जाला। सामंती-जमींदारी युग में बेगार प्रथा खूब प्रचलित रहे। जमींदार लोग अपना इच्छा से गाँव के लोग से तरह-तरह के काम करवावत रहे। आम आदमी के सामंती वर्ग के घरेलू, खेती-बारी आ दोसरा सामाजिक काम बिना पारिश्रमिक करे पड़त रहे। विरोध करे वाला के शारीरिक आ आर्थिक दंड दिहल जात रहे। एह तरह शारीरिक शोषण धीरे-धीरे सामाजिक प्रथा के रूप ले लिहलस। आजुओ कई जगह धनवान लोग गरीब, कमजोर आ निरीह लोग से बेगार में काम करवावत देखल जाला। मूल पाठ में "काम के बदले अनाज" योजना के भी बेगार प्रथा के एगो सरकारी रूप बतावल गइल बा।

3. बंधुआ मजदूर - सामंती युग में साहूकार, महाजन आ जमींदार के मिलीभगत से विकसित भइल बंधुआ मजदूरी मानवीय दमन आ उत्पीड़न के एगो लंबा इतिहास समेटले बा। सूदखोरन के ब्याज के जाल में फँसल लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी बंधुआ मजदूर बनके पीड़ित होत रहल। आज भी ईंट-भट्ठा, कालीन उद्योग, खदान आ संपन्न परिवारन के घर में बंधुआ मजदूर मिल जाला। कहीं नशा कराके, कहीं कर्ज देके, झूठा भरोसा भा सब्जबाग देखाके, त कहीं डरा - धमकाके काम करवावल जाला। कानूनन ई प्रथा असंवैधानिक बा, बाकिर कर्ज में डूबल किसान, बढ़त विस्थापन आ पलायन के चलते बंधुआ मजदूरन के एगो नया वर्ग पैदा भइल बा। राजस्थान के आदिवासी इलाका में एह प्रथा के "हाली", आ उड़ीसा में "बहाबांध प्रथा" कहल जाला।

4. गिरमिटिया मजदूर - गिरमिटिया मजदूरी उपनिवेशवादी दौर के शारीरिक शोषण के एगो बेहद क्रूर आ अमानवीय रूप रहल। हजारों-लाखों लोग के मॉरीशस, सूरीनाम, ब्रिटिश गुयाना, ट्रिनिडाड, फीजी आदि देशन में करार के नाम पर अपना देश से दूर ले जाके गुलामन जइसन अमानवीय काम करवावल गइल। भारत के मेहनतकश भोजपुरी कौम के एह शोषण के चक्की में बहुत अधिक पिसे के पड़ल। आजुओ मॉरीशस, सूरीनाम, फीजी, ट्रिनिडाड आदि देशन में लाखों भोजपुरियन के मौजूदगी ओह इतिहास के जिंदा प्रमाण बा। आजुओ भारत के गरीब इलाका से एजेंसी आ कंपनी सभ के माध्यम से करार पर लोग के अरब देशन में मजदूरी खातिर भेजल जाला। गरीबी के कारण ई मजदूर घोर मानसिक आ शारीरिक यातना सहके कठिन श्रम करे खातिर मजबूर होखेलें। सामाजिक-राजनीतिक प्रतिबंध आ कई बेर नियोक्ता द्वारा पासपोर्ट रख लिहला के कारण ऊ लोग विरोध तक ना कर पावेला।

5. वेश्यावृत्ति - वेश्यावृत्ति शारीरिक शोषण के सबसे वीभत्स आ निष्ट रूपन में से एगो ह, जवना में खासकर महिला के पूरा जिनगी नारकीय बना दिहल जाला। गरीबी, भूख, अशिक्षा, उपेक्षा, प्रताड़ना आ विस्थापन जइसन परिस्थिति के फायदा उठाके दलाल लोग गरीब परिवारन के लड़कियन के झूठा सपना देखाके देह व्यापार में धकेल देला। मूल पाठ में एह समस्या के व्यापकता, नाबालिग बच्चियन के यौन शोषण आ मानव तस्करी के बारे में कई आँकड़ा दिहल गइल बा। एह आँकड़न के आज के समय में सत्यापन के बिना दोहरावल उचित ना होई, बाकिर मूल पाठ के केंद्रीय बात साफ बा गरीबी, आर्थिक असमानता, तस्करी आ बाजारवादी मानसिकता देह-शोषण के बढ़ावा दे सकेला। मूल पाठ के अनुसार सौंदर्य प्रतियोगिता, मॉडलिंग, बार, होटल, रेस्टोरेंट, साइबर कैफे आ मनोरंजन के कुछ क्षेत्रन में भी बाजारवादी संस्कृति के कारण देह के वस्तु बना देवे के प्रवृत्ति बढ़ल बा। आज के महानगरन में पुरुषन के भी अलग-अलग रूप में यौन व्यवसाय में धकेले जाए के चर्चा मूल पाठ में बा। एहसे साफ होला कि देह के बाजार में बदलल जाए के समस्या केवल महिला तक सीमित नइखे।

6. बालश्रम - सभ्य समाज खातिर बालश्रम एगो अभिशाप ह। गरीबी के चलते कई माता-पिता अपना मासूम बच्चन के भूख शांत करे खातिर कमाई में लगावे पर मजबूर हो जालें। एहसे बच्चन के ना ठीक से शारीरिक विकास हो पावेला, ना मानसिक विकास। बहुत बच्चा स्कूल के मुँह तक ना

www.bhojpurisahityangan.com

देख पावेलें। पूँजीवादी आर्थिक असमानता वाला समाज में बालश्रम दैहिक आ शारीरिक शोषण के सबसे क्रूर रूपन में से एगो ह। भारत के बाल मजदूरन में खेतिहर मजदूर, बीड़ी मजदूर, भवन निर्माण मजदूर, मोची, नमक मजदूर, ग्रामीण काश्तकार, घरेलू कामगार, मछुआरा, ईंट-भट्ठा मजदूर, पत्थर मजदूर, जंगल से उत्पाद बीने वाला आदिवासी आ घुमंतू परिवार के बच्चा शामिल बाड़ें। गरीबी से जूझत प्रवासी मजदूरन के लाखों बच्चा स्कूल से वंचित होके बाल मजदूर बने खातिर मजबूर हो जालें। मूल पाठ में पूर्वी उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर, सोनभद्र, बस्ती, आजमगढ़, गोरखपुर आदि इलाका के भी प्रवासी मजदूरन के स्रोत क्षेत्र के रूप में उल्लेख बा। बाल मजदूर मुख्य रूप से दू श्रेणी में बाँटल जा सकेलें । 1. ग्रामीण बाल मजदूर- खेती, घर आ ग्रामीण क्षेत्र में काम करे वाला बच्चा बाल बंधुआ, बाल चरवाहा, खेतिहर बाल मजदूर, घरेलू कामगार, खदान मजदूर, ग्रामीण निर्माण मजदूर आ ईंट-भट्ठा मजदूर आदि। 2. शहरी बाल मजदूर- बीड़ी, दियासलाई, काँच, कालीन, स्लेट, बिस्कुट, ताला, हीरा, होजरी आदि लघु उद्योगन में काम करे वाला तथा होटल, रेस्टोरेंट, मोटर गैराज आ घरन में काम करे वाला बच्चा। बाल मजदूरन के शोषण आधुनिक सभ्य समाज के माथा पर एगो वीभत्स दाग ह। जे उमिर में बच्चा के खेलल, कूदल, पढ़ल आ हँसल चाहीं, ओही उमिर में ओकर नाजुक कंधा पर रोजी-रोटी के बोझ डाल दिहल जाला। एहसे ओकर स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन आ स्वाभाविक बचपन छिन जाला आ ओकर जीवन मरुस्थल जइसन बन जाला।

7. अमानवीय काम आ कठोर परिश्रम- अइसन काम, जवना से शरीर आ शारीरिक स्वास्थ्य के नुकसान पहुँचे, बाकिर जीविका चलावे के दोसर विकल्प ना होखे के कारण मजबूरी में करे के पड़े ओह सभ के अमानवीय काम आ कठोर परिश्रम के श्रेणी में राखल जा सकेला। जइसे - भारी बोझ ढोवल, हाथ ठेला खींचल, पीठ पर भारी बोरा ढोवल पल्लेदारी कइल, रासायनिक प्रभाव वाला उद्योग में काम कइल, धूल-धुआँ भरल वातावरण में काम कइल, सिर पर मैला ढोवल, चर्म-परिशोधन जइसन स्वास्थ्य के नुकसान पहुँचावे वाला काम झारखंड के कोयलांचल में गरीब बेरोजगार लोग साइकिल पर 9 -10 क्विंटल कोयला लादके 20 50 किलोमीटर दूर दुर्गम जगह तक ले जाए के मजबूर होखेला। कुपोषित शरीर आ लगातार भीषण मेहनत के चलते उनकर जीवन-शक्ति बहुत जल्दी कमजोर पड़ जाला।

8. कम मजदूरी, बेसी काम - बढ़त बेरोजगारी के फायदा उठाके निजी संस्थानन में 14 से 16 घंटा तक काम करवावल जाला। निजी क्षेत्र के कर्मचारी बहुत कम वेतन पर 12 घंटा भा ओकरा से बेसी काम करे खातिर मजबूर हो जालें। दुकान, होटल, गैराज, चाय के दुकान, रेस्टोरेंट, खदान आ घरेलू काम में भी कई बेर 12 घंटा से अधिक मेहनत करे के पड़ेला। कम मजदूरी देके अधिक-से-अधिक काम करवावल शारीरिक शोषण के बाजारवादी रूप बन गइल बा। अत्यधिक शारीरिक मेहनत के चलते मनुष्य के जीवन के दोसरा क्षेत्रन के विकास रुक जाला। आदमी के शारीरिक आ मानसिक विकास बाधित हो जाला आ मानव जीवन धीरे-धीरे नीरस आ यांत्रिक बन जाला।

9. मानव अंग के चोरी-तस्करी आ बिक्री - आज शल्य चिकित्सा आ मानव अंग के प्रत्यारोपण के बढ़त उपयोग के कारण किडनी आदि मानव अंग के चोरी के घटना सामने आवत रहेला। धोखा देके, लालच देखाके भा जबरदस्ती कवनो मनुष्य के जीवनदायी अंग निकाल लिहल जाए, त ई भी शारीरिक शोषण के गंभीर रूप ह। खून बेच के पैसा कमावल भी आज शहरन में कई जगह देखे के मिलेला। मानव शरीर के अंग आ रक्त के बाजारू वस्तु बना देवे वाली ई प्रवृत्ति मनुष्य के गरिमा आ जीवन दुनो के शोषण में बदल देला।

मूल सामग्री के केंद्रीय संदेश मनुष्य के शरीर ओकर श्रम-शक्ति के साधन ह, बाजार में बिके वाला वस्तु ना। जब गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, कर्ज, सामंती मानसिकता भा बाजारवादी स्वार्थ के कारण मनुष्य के शरीर आ श्रम पर दोसर के अधिकार कायम हो जाला, त ओहिजे से शारीरिक शोषण के शुरुआत होला। एह शोषण के सबसे अधिक मार गरीब, मजदूर, महिला, बच्चा आ कमजोर वर्ग पर पड़ेला।

❁❁❁

www.bhojpurisahityangan.com

आन्दोलन

बेचारगी लोकतंत्र के : समाधान भोजपुरी समाज के

- कालू राम
महासचिव, पी.एस.एस.



आज विज्ञान के चकाचौंध में जीयत जिनिगी के पेवन सीयत, सृष्टि के अनमोल विरासत आदमी बड़का अजीब दौर से गुजर रहल बा। एक ओर श्रमशक्ति मशीन में समा गइल, त दोसरा ओर आदमी के बुद्धि के जगह अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी AI लेत जात बा। उत्पादन के क्षमता बढ़ल, सूचना के गति अकल्पनीय भइल, दुनिया मुट्ठी में आ गइल बाकिर सवाल ई बा कि का आदमी के जिनिगी सचमुच आसान भइल?

अगर आम आदमी के जिनिगी के देखीं त जवाब कुछ अउरी कहानी कहेला। महँगाई, बेरोजगारी, खेती के संकट, शिक्षा आ स्वास्थ्य के बढ़त खर्च, पलायन, प्राकृतिक संसाधन पर कुछ लोग के कब्जा, रोजमर्रा के जरूरत के चीज पर बाजार के नियंत्रण ई सब समस्या विज्ञान के कमी से नइखे पैदा भइल। विज्ञान त अपना जगह लगातार आगे बढ़ रहल बा। असल समस्या बा व्यवस्था के दिशा आ ओकर संचालन। सत्ता के चाबी जनता के हाथ में, बाकिर दरवाजा अबहियों बंद! लोकतंत्र के सबसे बड़ उपलब्धि मानल गइल कि सत्ता के चाबी जनता के हाथ में आ गइल। जनता वोट देवे लागल, प्रतिनिधि चुने लागल आ शासन में आपन भागीदारी के अधिकार पवलस। लागत रहे कि राजनीतिक भागीदारी आ विज्ञान के साझेदारी से आम आदमी के जीवन अधिक सुखी, स्वतंत्र आ सम्मानजनक होई। बाकिर धीरे-धीरे लोकतंत्र के एगो अइसन रूप विकसित हो गइल जहाँ जनता मालिक कम आ राजनीतिक प्रक्रिया के साधन अधिक बनत गइल।

चुनाव के समय जनता महत्वपूर्ण हो जालेय चुनाव बीतते ओकर भूमिका अक्सर वोट देवे वाला तक सीमित हो जाले। जे जनता के श्रम से अर्थव्यवस्था चलत बा, ओही जनता के जीवन के मूल सवाल रोजगार, जमीन, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, उत्पादन आ स्थानीय अर्थव्यवस्था व्यवस्था के केंद्र में ना आ पावत। तंत्र जटिल से जटिलतर होत गइल आ आम आदमी ओकरा सामने धीरे-धीरे बेबस होत गइल। सत्ता जनता के नाम पर, अर्थव्यवस्था कुछ हाथ में लोकतंत्र जनता के नाम पर, निर्णय प्रक्रिया कुछ हाथ में त बेचारगी कहाँ से ना पैदा होई? समस्या आदमी में ना, व्यवस्था के बनावट में बा आज आम आदमी के सामने शोषण आ अन्याय के हर रूप नया-नया कलेवर में पेश हो रहल बा। कहीं आर्थिक असमानता के रूप में, कहीं बेरोजगारी के रूप में, कहीं शिक्षा के बाजारीकरण में, कहीं स्वास्थ्य के व्यापार में, कहीं खेती के अलाभकारी बना के, त कहीं स्थानीय संसाधन के बाहर ले जाकर। समाज के विभाजन भी अब खाली जाति या धर्म तक सीमित नइखे। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक, भाषाई आ सांस्कृतिक हर स्तर पर आदमी के बाँटे के प्रक्रिया चल रहल बा। जवन समाज अपनी साझी शक्ति के पहचान ना पावेला, ओकरा के अलग-अलग टुकड़ा में बाँट के नियंत्रित कइल आसान हो जाला।

टूटल आदमी कमजोर होला संगठित समाज शक्ति बन जाला। एही कारण से पूँजीवादी व्यवस्था होखे चाहे सत्तावादी प्रवृत्ति दूनो के सबसे बड़ चुनौती होला जागरूक, संगठित आ आत्मनिर्भर समाज। समाज अभी बनले कहाँ बा? हमनी अक्सर "समाज" शब्द के इस्तेमाल बहुत आसानी से कर देत

www.bhojpurisahityangan.com

बानी। बाकिर एक जगह रहे वाला लोग समाज ना हो जाला। साझा इतिहास, साझा भाषा, साझा संस्कृति, साझा आर्थिक जीवन, साझा प्राकृतिक संसाधन, साझा समस्या आ साझा भविष्य-बोध से जब लोग आपन साझी सामाजिक शक्ति के पहचानेला, तब समाज के वास्तविक रूप आकार लेला। एह दृष्टि से भोजपुरी समाज के सवाल केवल भाषा के सवाल नइखे। ई सवाल बा हमनी के माटी के, हमनी के पानी के, हमनी के खेती के, हमनी के श्रम के, हमनी के स्थानीय उत्पादन के, हमनी के रोजगार के, हमनी के शिक्षा के, हमनी के संस्कृति के, आ सबसे बढ़के हमनी के सामूहिक आत्मनिर्भरता के। भोजपुरी समाज के पुनर्गठन के मतलब दुनिया से अलग हो जाना नइखे।

उल्टा, ई त दुनिया से जुड़ल रह के अपना पैर पर खड़ा होखे के प्रक्रिया बा। भोजपुरी समाज - क्षेत्रीयता ना, सार्वभौमिकता के व्यवहारिक प्रयोग प्रउत के दृष्टि से मानव समाज के कल्पना खाली अमूर्त वैश्विक एकता के रूप में ना कइल जा सकेला। मानव समाज के वास्तविक जीवन क्षेत्र-विशेष के प्रति, भाषा, संस्कृति, संसाधन आ आर्थिक जरूरत से जुड़ल बा। एही खातिर Regional Approach के महत्त्व बा। क्षेत्रीयता के अर्थ संकीर्णता ना ह। जइसे मानव शरीर एगो सम्पूर्ण इकाई ह, बाकिर ओकर स्वास्थ्य हाथ, पैर, आँख, कान, हृदय आ मस्तिष्क सभके स्वस्थ रहे पर निर्भर करेला। ओइसहीं अखिल मानव समाज के स्वास्थ्य ओकर अलग-अलग सामाजिक इकाइयन के स्वास्थ्य पर निर्भर करेला। भोजपुरी समाज अखिल मानव समाज के विरोधी इकाई ना, ओकर एगो जीवंत अंग ह। अगर एगो अंग कमजोर बा त पूरा शरीर स्वस्थ ना रह सकेला। एही तरह दुनिया के मानव समाज के स्वस्थ बनावे खातिर जरूरी बा कि अलग-अलग क्षेत्रीय समाज आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक रूप से स्वस्थ, आत्मनिर्भर आ सशक्त होखे। त भोजपुरी समाज करी का? यही सवाल सबसे महत्वपूर्ण बा। सिर्फ भोजपुरी बोले के अधिकार माँगला से काम ना चली। भोजपुरी समाज के जीवन-व्यवस्था पर बात करे के पड़ी।

1. खेती के केवल जीविका ना, उद्योग मानल जाव भोजपुरी क्षेत्र के सबसे बड़ प्राकृतिक शक्ति ओकर जमीन, पानी, किसान आ श्रमशक्ति ह। धान, गेहूँ, दलहन, तिलहन, सब्जी, फल, पशुपालन, दुग्ध, मत्स्य, बागवानी ई सबके स्थानीय प्रसंस्करण उद्योग से जोड़ल जा सकेला। आज किसान कच्चा माल बेचेला आ तैयार माल महँगा दाम पर खरीदे ला। व्यवस्था बदले के मतलब ई होखे के चाहीं कि उत्पादन गाँव में, प्रसंस्करण क्षेत्र में आ बाजार पर समाज के मजबूत पकड़।

2. स्थानीय संसाधन, स्थानीय रोजगार भोजपुरी नौजवान के रोजगार खातिर दिल्ली, मुंबई, सूरत, पंजाब, गुजरात आ विदेश तक जाए के मजबूरी काहे होखे? जवन संसाधन भोजपुरी क्षेत्र में बा, ओकरा के स्थानीय उत्पादन से जोड़े के जरूरत बा। गाँव के दूध से स्थानीय डेयरी,फल-सब्जी से प्रसंस्करण, माटी से निर्माण सामग्री, कृषि अवशेष से ऊर्जा, हस्तशिल्प से बाजार, आ स्थानीय ज्ञान से आधुनिक उद्यम। पलायन के समाधान नौकरी के पीछे भागे से ना, रोजगार के अपना क्षेत्र में पैदा करे से होई।

3. सहकारिता साझी शक्ति के आर्थिक रूप छोट किसान अकेले बाजार से मुकाबला ना कर सकेला। बाकिर हजार किसान मिलके उत्पादन, भंडारण, प्रसंस्करण आ विपणन करे लगें त तस्वीर बदल सकेला। एह खातिर सहकारी संस्थान खाली कागज के संस्था ना, बल्कि उत्पादक समाज के आर्थिक शक्ति बने के चाहीं। प्रउत के आर्थिक लोकतंत्र के व्यवहारिक दिशा इहे बा कि आर्थिक शक्ति के विकेंद्रीकरण होखे आ उत्पादन के लाभ समाज के वास्तविक उत्पादक लोग तक पहुँचे।

4. शिक्षा – डिग्री से आगे, जीवन से जुड़ल ज्ञान भोजपुरी समाज के शिक्षा अइसन होखे के चाहीं जे बच्चा के अपना समाज से काटे ना, बल्कि समाज के समझे आ बदले के क्षमता देवे। वैज्ञानिक शिक्षा होखे, आधुनिक तकनीक होखे, AI के ज्ञान होखे बाकिर साथे खेती, स्थानीय अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, सहकारिता, उद्यम, लोककला आ सामाजिक जिम्मेदारी के ज्ञान भी होखे। शिक्षा आदमी के नौकरी खोजे वाला ना, समाज निर्माण करे वाला बनावे।

5. ग्रामसभा से लोकतंत्र के वास्तविक आधार लोकतंत्र के ताकत केवल विधानसभा आ संसद में ना होखे। जवन आदमी

www.bhojpurisahityangan.com

गाँव के सड़क, तालाब, चरागाह, स्कूल, पानी, बिजली, खेती आ सीानीय संसाधन के बारे में जानेला, ओकर निर्णय प्रक्रिया में वास्तविक भागीदारी होखे के चाहीं। ग्रामसभा के मजबूत कइला के मतलब लोकतंत्र के नीचे से ऊपर तक मजबूत कइल। जितना निर्णय स्थानीय हो सके, उतना स्थानीय स्तर पर होखे जवन काम क्षेत्रीय स्तर के होखे, ऊ क्षेत्रीय समाज करे आ जवन काम व्यापक मानव समाज के होखे, ऊ व्यापक स्तर पर। ई विकेंद्रीकरण लोकतंत्र के कमजोरी ना, ओकर वास्तविक शक्ति बन सकेला।

बेचारगी के जवाब संगठन आज सबसे बड़ा सवाल ई नइखे कि सरकार कौन बा। बड़ सवाल ई बा कि समाज खुद केतना संगठित बा? अगर समाज बिखरल बा त ओकर संसाधन दूसर के हाथ में जा सकेला। अगर समाज जागरूक बा त ओकर संसाधन ओकर विकास के आधार बन सकेला। अगर समाज के बुद्धिजीवी समाज से कट गइल बा, त ओकर बुद्धि निजी सुविधा के साधन बन सकेला।

बाकिर जब बुद्धिजीवी, किसान, मजदूर, नौजवान, महिला, कारीगर, शिक्षक, छोटे उद्यमी आ सांस्कृतिक कार्यकर्ता सभे मिलके समाज के सामूहिक भविष्य पर सोचेला, तब बुद्धि सामाजिक शक्ति में बदल जाले। एही से समाज आंदोलन जरूरी बा। प्रउत के मूर्त रूप किताब से ना, समाज से निकली प्रउत के आर्थिक-सामाजिक अवधारणा के चर्चा किताब, सभा आ भाषण तक सीमित रह गइल त ओकर उद्देश्य अधूरा रही। प्रउत के वास्तविक परीक्षा तब होई जब गाँव में उत्पादन के नया मॉडल खड़ा होखे, किसान के उचित मूल्य मिले, नौजवान के स्थानीय रोजगार मिले, शिक्षा जीवन से जुड़े, महिला के आर्थिक भागीदारी बढ़े।

स्थानीय संसाधन पर समाज के अधिकार मजबूत होखे, आ लोकतंत्र में जनता केवल मतदाता ना, निर्णयकर्ता बने। एह दिशा में भोजपुरी समाज एगो व्यवहारिक प्रयोग बन सकेला। भोजपुरी समाज से अखिल मानव समाज तक हमार भोजपुरीपन हमनी के दुनिया से अलग ना करेला। हमार भोजपुरीपन हमनी के दुनिया के समझे के एगो खिड़की देला। जइसे फूल के आपन रंग होला, बाकिर सुगंध सबके होलाय ओइसहीं समाज के आपन भाषा-संस्कृति होला, बाकिर ओकर मानवीयता सार्वभौमिक होला। भोजपुरी समाज अगर आत्मनिर्भर बनेला त ओकर मतलब दूसर समाज के विरोध ना ह। मगही समाज आपन शक्ति विकसित करे, बंगाली समाज आपन शक्ति विकसित करे, कोसली समाज आपन शक्ति विकसित करे, तमिल समाज आपन शक्ति विकसित करे, आ दुनिया के हर क्षेत्रीय समाज अपना प्रकृति, संस्कृति आ आर्थिक जीवन के आधार पर स्वस्थ बने त एक-दूसरा से संघर्ष ना, सहयोग के वैश्विक व्यवस्था के आधार तैयार हो सकेला। यही में Regional Approach के सार्वभौमिक अर्थ छिपल बा। अब समय शिकायत से आगे बढ़े के बा लोकतंत्र के बेचारगी के इलाज लोकतंत्र छोड़ल ना ह। विज्ञान के संकट के समाधान विज्ञान छोड़ल ना ह। AI के डर से बुद्धि के दरवाजा बंद कइल ना ह। पूँजी के विरोध में उत्पादन बंद कइल ना ह। समाधान बा व्यवस्था के दिशा बदलल। विज्ञान मनुष्य के दास ना, सहयोगी बने। तकनीक बेरोजगारी के हथियार ना, श्रम के बोझ घटावे के साधन बने। अर्थव्यवस्था मुनाफाखोरी के मशीन ना, मानव जरूरत पूरा करे के माध्यम बने। राजनीति सत्ता हासिल करे के खेल ना, सामाजिक हित के साधन बने आ लोकतंत्र केवल पाँच बरिस में एक बेर वोट देवे के प्रक्रिया ना, बल्कि रोजमर्रा के जीवन में जनता के वास्तविक भागीदारी बने। एह दिशा में प्रगतिशील भोजपुरी समाज खाली भोजपुरी भाषा-संस्कृति के संगठन ना, बल्कि भोजपुरी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक पुनर्गठन के आंदोलन के रूप ले सकेला। काहेकि भोजपुरी समाज के मजबूती, अखिल मानव समाज के मजबूती ह। क्षेत्रीय आत्मनिर्भरता, सार्वभौमिक मानवता के विरोधी ना ओकर आधार ह। आ समाज के साझी शक्ति ही लोकतंत्र के बेचारगी के सबसे ठोस जवाब ह। अब सवाल ई ना कि "हमरा खातिर के करी?"

सवाल ई बा "हमनी मिल के अपना समाज खातिर का कर सकत बानी?" एही सवाल से बेचारगी के अंत आ संगठित समाज के शुरुआत हो सकेला।

❁❁❁

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी में का बा ?



- डॉ. संतोष पटेल



भोजपुरी साहित्य में कुछ काम अइसन भइल बा, जवन होखे वाला घटना से पहिलहीं सोच लिहल गइल बा। सुरेश कांटक जी भोजपुरी के मजल नाटककार, बेजोड़ कहानीकार आ जनवादी कवि बानी। खाली नाटककार कहि के उहाँ के वर्सेटिलिटी के आलोता ना कईल जा सके। आजकल चूंकि "बंदे मातरम" पर राजनीतिक चर्चा जोर पर बा, साँच कहल जाव त उफान पर बा। टीवी डिबेट से राजनीतिक बतकही भा पॉलिटिकल डिस्कोर्स में आजू-काल्ह ई ट्रेंड कर रहल बा। बाकिर सुरेश कांटक जी के ई नाटक करीब पच्चीस साल पहिले यानी 2001 में प्रकाशित भइल।

एह नाटक में जहाँ 25 गो पुरुष पात्र बा, त 4 गो स्त्री पात्र बाड़ी। सबसे बड़की बात ई बा कि मर्दाना पात्र में 4 गो बेरोजगार पात्र बाड़ें। जवन समस्या आजादी के समय रहल, ओकरा बाद रहल आ फेर आजो बा, उ बाटे बेरोजगारी। दु गो भिखारी आ एगो पागल कवि, दु गो कारखाना के मजूर आ एकाध गो खेतिहर मजूर बा। धेयान देवे वाला बात ई बा कि कांटक जी के नाटक सामाजिक भेदभाव, सामाजिक, आर्थिक आ प्रशासनिक भ्रष्टाचार, व्यक्तिगत आ सामाजिक बेइमानी, दोहरा शोषण के मुखालफत करत उत्पीड़ितन के पक्ष में आ के खड़ा हो जाता। तब हमके सफदर हाशमी, हबीब तनवीर, बादल सरकार भा उत्पल दत्त के इयाद आवेला कि ऊ लोग के लेखा जनवादी मंच के सदुपयोग कईले रही। भोजपुरी में भिखारी ठाकुर जी के नाटक के बात होखेला, राहुल सांकृत्यायन जी के नाटक के बात होखेला, ई जरूरी बा। बाकिर ओकर परछाई में भोजपुरी के दूसर नाटककार के लुका ना देवे के चाहीं। एही से समकालीन भोजपुरी नाटककार में सुरेश कांटक जी के नाटक पर खुल के बात होखल जरूरी बा। रचनाकार के साहित्य के महत्व तब बा, जब ओकरा पर चर्चा होखे आ जरूरी चर्चा एह बात के होखे कि उनकर लिखल साहित्य अपना समय के समस्या से कइसे मुठभेड़ कर रहल बा। भोजपुरी के साहित्यिक कैनवास बहुत लमहर आ चाकर बा। कांटक जी के नाटक 'सरग नरक' पर आज चर्चा समीचीन होई, काहे कि सत्ता जे लेखा धर्मशास्त्र के आड़ में राजनीतिक रोटी सेंक रहल बा, उह धर्मग्रंथ के सच्चाई कांटक जी के नाटक 'सरग नरक' खोल देत बा। ओही लेखा सत्ता संपोषित नैरेटिव के 'वंदे मातरम' नाटक ध्वस्त कर रहल बा।

साँच कहीं त सुरेश कांटक के नाटकन के पढ़ला पर ऑगस्तो बोआल (Augusto Boal) 1931-2009) जे ब्राजील के रंगकर्मी, निर्देशक आ राजनीतिक थिएटर के सिद्धांतकार रहलें, उनकर इयाद आ गइल। बोआल रंगमंच के खाली मंच पर बैठल कलाकारन के प्रदर्शन माने के बजाय सामाजिक अन्याय आ सत्ता-संबंध के समझे, समझावे अउर ओकरा बदले के माध्यम बनवलें। उनकर सबसे प्रसिद्ध अवधारणा रहल उत्पीड़ित के रंगमंच (Theatre of the Oppressed) एही अवधारणा के कांटक जी कगरी बानी। 'वंदे मातरम' नाटक नव सृजन सांस्कृतिक मंच, बक्सर, बिहार से मंचित

www.bhojpurisahityangan.com

बा। नाटक के शुरुआत धरती वंदना से शुरू होखत बा आ ई नाटक पाँच अंक में विभक्त बा। हरेक अंक में अलग-अलग दृश्य में समायोजित कइल गइल बा। नाटक में वर्णित समय आजादी के समय वाला बा। मसलन, शोषण के दोहरा व्यवस्था अंग्रेज आ जमींदार, दुनू के हाथ से जनता के शोषण हो रहल बा। नाटक में ओह समय के स्थिति के बड़ा बढ़िया ढंग से प्रस्तुत कइल गइल बा। समस्या, संघर्ष, दमन आ प्रतिरोध सभ के उचित ढंग से प्रस्तुतिकरण भइल बा। अब देखीं कि पागल कवि के व्यंग्य नाटक के अउर गंभीर बना देत बा। सबसे बड़की बात नाटककार बेरोजगारन के मुंह से कहवा रहल बाड़े, उरेघियावे जोग बा

"सभ हाथन के काम दे
आ जिनगी के दाम दे
आग पेट के ई ना छोड़ी
दउरी कागज के ना घोड़ी
धार बदल के छोड़ब जा
गद्दी के मुँह मोड़ब जा।"

दरअसल ई नाटक आज के वक्त में केतना प्रासंगिक बा, ओकर ई तस्वीर बा। जहाँ आज सत्ता वंदे मातरम के राग अलाप रहल बिया आ कुछ लोग बेरोजगार के कोकरोच, कुत्ता आ नाली के पिलुआ से संबोधित कर रहल बा, त बेरोजगार समवेत स्वर में जवन आज कह रहल बा, सुरेश कांटक जी आज से 25 बरिस पहिले कहले बानी। नाटक पर आपन विचार के विराम देवे से पहिले नाटक के पात्र पागल कवि, जवन सुरेश कांटक जी के कवित्व के उजागर करत बा, ऊ जरूर उकृत करब- "नागवा के फनवा में मंतर मोहनिया कुछउ ना एकरा से छूटी हो
इहे ठगवा नगरिया घूमत बा।" 'वंदे मातरम' कहल कब ठीक होई, नाटक के अंत में भारत माता खुद कहत बाड़ी-

"अब आदमी के खून आदमी ना पीही। बेटी-बहिन के ईज्जता से केहू खेलवाड़ ना करी। अपराध अपहरण के रोजगार ना बढ़ी। हमरा धरती प खून के नदी ना बही" सुरेश कांटक सर के एह बेहद संवेदनशील नाटक खातिर बहुत बधाई।

❁❁❁

देवता आऽ राक्षस

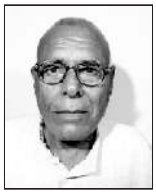

- गिरिजा शंकर यादव

देवता आऽ राक्षस कऽ कवनो अलग से जाति ना होला।
आदमी ही देवता, आऽ आदमी ही राक्षस होला।।
जेवन आदमी परहित करेला, करेला पर सेवा।
ओही आदमी के कहल जाला देवी अवरू देवा।।
जेवन आदमी परपीड़ा पहुचावेला निर्बलन के सतावेला।
उहे आदमी पापी होला, राक्षस के पद पावेला।।
जेवन आदमी भूखा के भोजन, प्यासा के पानी पीलावेला।
जेकरा तन पर कपड़ा नइखे, ओकरा तन पर कपड़ा ओढ़ावेला।।
जेवना गरीबवन के बाँटे टुटही पलानी।
जब जब बरखा होला, चुवेला टप - टप पानी।।
ओही गरीब लोगवन के जे घर बनवावे ला।
उहे आदमी देवी अवरू देवता के पद पावेला।।
कठिन मेहनत-मजदूरी करके, कइसहुँ गरीब लोग घर लीहलें बनाई।
मेहनत-मजदुरी से गरीबवन के, बनल घर दबंग लोग देला ढहाई।।
उहे दबंग लोगवा पापी होला, राक्षस के पद पावेला।
देवता आऽ राक्षस कऽ कवनो अलग से जाति ना होला।।

www.bhojpurisahityangan.com

दीया तरे अन्हार

- रामसोच यादव 'सोच'

बल्ब आ गइल दीया तरे क मेटे के अन्हार।
जेवना खातिर मुहावरा ह, का भइल ऽ उपचार ?
ऊ अन्हार दिन-दिन बढ़ता
भुअरी बिच्छी अस चढ़ता
झारला बस क बाति न बाटे
इंजेक्शन दरकार।
जेवना खातिर मुहावरा ह, का भइल ऽ उपचार ?
बिच्छी की त भरम न परिह ऽ
कतहीं करिया नाग न होखे
ओ अन्हार में छिपि-छिपाके
देखत सब्ज ऊ बाग न होखे
डण्डा, फट्ठा हाथ में लेके
रहे के परी तैयार।
जेवना खातिर मुहावरा ह, का भइल ऽ उपचार ?
दीया के पेंदी में छेदी
सज्जी तेल चुवा जाई
बिना तेल क बाती जरीऽ ?
जरिके आखिर बुता जाई।
केतना श्रम से आइल अंजोरिया
छन में छायी घोर अन्हार।
फिर पत्थर युग क जिनगी त
जिये के मजबूरी बा
दीया श्रृंखला बारि जोगावल
सबसे काम जरूरी बा।
सजग न होइब, जो अलसइब
अगली पीढ़ी कही मक्कार।
जेवना खातिर मुहावरा ह, का भइल ऽ उपचार ?
कइ कइ जुग में इक्का-दुक्का
दीया बारे केहु आ जाला
राहि देखाके, ढंग बताके
अपनी राहे चलि जाला
सजग अगर वारिस होला त,
लाइट-सोडियम करे तैयार।
जेवना खातिर मुहावरा ह, का भइल ऽ उपचार ?
करम क लाठी हाथ मे ले के
आँखि खुलल राखे होई
अन्दर की देवता के मन से
पूजा त भाखे होई
तेल पिउवन से दीया बचाके
सबही के बाँटऽ उँजियार।
जेवना खातिर मुहावरा ह, का भइल ऽ उपचार ?

❁❁❁

एक अनाथ बच्चे की देवी से गुहार

- सुशीला पाल

तूँही एगो बाड़ू, मइया, टूअरा के आसरा !
सूनि लेतु बिनती तेऽ, बनि जाई जतरा !! -2
माई रहती आजु त / पकइती खीर-पूरी
कहती जे आदरा में / खाइल बा जरूरी
- पूरी-खीर खाइ , हाथ पोंछि लेतीं आँचरा !!
सुनि लेतु
माई-बाबू बिना हम त / हो गइनी बेचारा
कवने कसूर दइबा / कइले बे-सहारा
- हमके बनाइ दिहले, जबरा से अबरा !!
सुनि लेतु ...
काका झँपिलावसु / काकी खेदस दुत्कारि के
समझेला बोझा हमके / लोगवा कपार के
- देखि के हमार दुखे, रोई देला बदरा !!
सुनि लेतु

www.bhojpurisahityangan.com

समीक्षा

बीच बजारे कबिरा रोई —

- बलभद्र

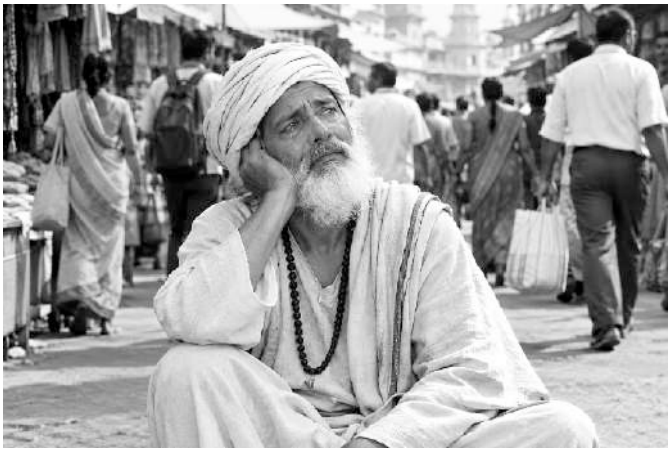

भोजपुरी गीत के सोझा चुनौती कतो अउर से ना, ओकरा अपने जमीन से मिल रहल बा। ई जमीन लोकगीत के जमीन ह। आ एगो अउर चुनौती, देखे में आ रहल बा, हिन्दी नवगीत के जमीन से मिल रहल बा। आज के भोजपुरी गीत के एह दूनो से लड़े के परी। एह दूनो के फार्म के बेतुरले आ एह दूनो के फार्म से बेउबरले भोजपुरी गीत में बहुत कुछ नया जुड़ल मुश्किल लागत बा। भोजपुरी लोकगीत के पारंपरिक लय आ छंद के जरिए आधुनिक भावबोध के सुन्दर अभिव्यक्ति के उदाहरणो कम नइखे। कमलेश राय अपना गीतन में एह दूनो के शिल्प के सझियाँव के जरिए आधुनिक जीवन आ परिवेश के जटिलता के अभिव्यक्त करे के कोशिश कइले बाड़न। एक तरफ इनका गीतन में भोजपुरी लोकगीत के लय-तान बा त दूसरा तरफ नवगीत के मीटर आ बिम्ब-विधान। एके गीत में लोकगीत आ नवगीत- दूनो के मेल बा त कवनो-कवनो अलगो-अलग बा। हिन्दी नवगीत में जवना तरह के अतीतोन्मुखता बा, भाव आ शिल्प के प्रति आग्रह के चलते, ऊ अतीतोन्मुखता कमलेश राय के गीत में भी आइल बा- (जहाँ पहिलका पहर में पंछी बाँचे बेद-पुरान, घर-घर मंगल-गीत जगावत होखे जहाँ बिहान, दूध-कटोरा ले दुलरावे जहँवा चन्दा मामा माई क अँचरा पुरवे मन क सगरी अरमान चलऽ ओ ठाँव चलीं जा। नेह के गाँव चलीं जा।)

एह संग्रह (तोहरो बिहान दाँव पर) में, लोकगीत आ नवगीत के मेल के एगो सुन्दर उदाहरण बा- (फागुन रस घोरि गइल।) कमलेश राय के एह संग्रह में आशा कम, निराशा के भाव जादे बा। मेल कम, बिखराव के वर्णन जादे बा आ इहाँ ई कहल जरूरी बा कि ई सब आज के हालात के गर्भ से पैदा होत बा। इहाँ निराशा टूटत नइखे लउकत। जिनगी के उछाह गोल हो गइल लउकत बा। एह सबके टूटे के कवनो जारी उतजोग कवि के सोझा नइखे। बाकिर, ऊ उतजोग भोजपुरी साहित्य के तलाश एगो पारंपरिक विधान में कइए लेत बा। 'फागुन' के पारंपरिक रूप आ सन्देश में ऊ जिनगी के पुनः सृजन के बिम्ब बेरचले नइखे रहत-''पतझर के पीरा के हियरा से बिसरा के, थिरकि उठलि बगियन में गाँछि-गाँछि अगरा के, डारि आज सगरी लरकोर भइल। पुरवइया रेंग गइल मन में चोरी-चोरी, फूटि चलल अधरन से मद में मातल होरी, जिया में उछाह क अँजोर भइल।'' एह गीत में जिनगी के उछाह के एगो रंग लउकत बा, लेकिन बहुत उछहत ना। जिनगी के दबाव के भी एगो आपन रंग होला। ऊ रंग एहिजा बा। एहिजा लरकोर आ एहवात के साथे-साथ कनखियन में बोलत गोरी लउकेली आ फागुन के बरजोरी आ फागुन के प्रभाव के समूचा रूप संकेत में उभरत बा।

कमलेश राय के गीत में सदिच्छावादी सुर भी कम नइखे। कवि दुनिया के लोग के खुशहाल देखल चाहत बा। लेकिन, दिक्कत ई बा कि एहिजा याने कि एह देश में आम आदमी के मन माफिक, ओकरा हित में बहुत कुछ होत नइखे। एहिजा सब कुछ छल-छन्द के दबाव में बा। कवि गीत रचल चाहत बा उछाह के, उमंग के, लेकिन रचि नइखे पावत। ऊ बार बार टूटन आ बिखराव के गीत रचे लागत बा। ऊ महसूस करत बा कि एह समय में उमंग-उछाह के

www.bhojpurisahityangan.com

कइसे गीत रचीं? एह से जहाँ कहीं भी ऊ उछाह-उमंग के कुछ लिखतो बा त ओहू में आकासे खिलत कवनो भाव नइखे आ पावत। कवि के गीत एह जबदल समय के साँच के उलट-पलट के कहे कोशिश के रूप में बा। कमलेश राय के नजर ओह जगह प जादे गइल बा जहँवा के लोग-बाग तंगी-तबाही में जी रहल बा। जन-जीवन करमोकरम बिखराव में बा। गाँव के जवन आपन परंपरागत रंग-ढंग रहल ह, ऊ बड़ी तेजी से बदलत जा रहल बा। सहज-सझियाँव के जगह प जटिलता आ व्यक्तिवाद पसरत जा रहल बा। कवि महसूस करत बा कि एह दौर में जवना तरह के विकास आ बदलाव आ रहल बा, ऊ बहुते घातक बा, अमानवीय आ अश्लील बा। लूट-झूठ आ ठगी-दलाली सफलता के सीढ़ी के रूप में देखल जा रहल बा। कवि एह बदलत हालात दुखी बा, अपना के दबाव में महसूस करत बा आ आपन दुख आ दबाव के गा-गा के, लोगन में बाँट-चूट के अपना के त मुक्त करे के कोशिश करते बा, संगे-साथे सभे के। लोकतंत्र के अपराधीकरण, राजनीतिक भ्रष्टाचार, गाँव आ गवई संस्कृति के बिखराव, उपभोक्ता संस्कृति के पसार, नवहा लोग में घर करत निराशावादी-समझौतावादी प्रवृत्ति, अपना के आ अपना शक्ति-सावँग के पहचाने से परे परि गइला के लेके कवि-चिंता जवन बा, तवन एह संग्रह के गीतन में मुख्य रूप से उभरल बा। कबो भारतेंदु भारत भाई लोग के एकजुट होके रोवे के नेवतले रहलें कि इहाँ अब भारत दुरदसा न देखी जाई। कमलेश राय के ई संग्रह आ अउर कुछ जवन एह तरह के संग्रह बा, देश के गत-दुरगत प सोचे-बिचारे के चिन्ता के विस्तारित रूप कहल जा सकेला। दुख के माने होला कि कम-से-कम ओकरा के उठावल जा सके। लेकिन दुख जब उठावे से बेसी हो जाए त का होला के रूप में एह संग्रह के लेवे के चाहीं।

''बीच बजारे कबिरा रोई'' में अमेरिकी साम्राज्यवाद के फइलाव के चलते जन-जीवन पर, खेती-बारी पर आम आदमी के मन पर जवन बुरा प्रभाव परी आ परत बा ओकर अभिव्यक्ति बा- ''देहि-देहि के गारि पसेना, खेत-खेत में बोई, जोत रही आपन, अनाज ओकरा मर्जी से होई, अन अछइते टूअर अस, लरिका रोटी के रोई।''ओकर असर एहू रूप में बा-

''सगरी राह बजारे जाई
बिक जाई अपनापन
एक कदम राखे खातिर
दुनिया देखी विज्ञापन
बिन जवाब के डगर-डगर
भटकी सवाल बुनियादी।''

एही में ऊ कहत बाड़न ''बीच बजारे कबिरा रोई, बाँचि-बाँचि के साखी।'' एह गीत में बीच बजार में बिना लुकाठी वाला कबीर बाड़न आ जवन बाड़न तवन रोअत बाड़न। ऐतिहासिक कालक्रम में 'कबीर' के हाथ के लुकाठी छूट गइल बा। आ ऊ समझ आ ललकारो कि ''जो घर जारे अपना चले हमारे साथ।'' एह गीत में प्रतिरोधी चेतना के क्षरण के करुण अभिव्यक्ति बा। एक तरफ जब्बर अमेरिकी साम्राज्यवाद आ दूसर तरफ बिखरल - बँटल प्रतिरोधी स्वर। बाकिर, प्रसंगवश एहिजा इहो कहे के मन बनत बा कि छोट-छोट जगहन से प्रतिरोध के जवन तरह-तरह के रूप आ स्वर एह दौर में उभरि के आइल आ रहल बा ओकरा के देखल जरूरी बा आ ओकरा भीतर से प्रतिरोध के संभावना के तलाश भी जरूरी बा।

'तोहरो बिहान दाँव पर' आ 'सींग अछते' दूनो एके भावबोध के गीत ह। एह में कवि अपना के सचेतक के भूमिका में रखले बा। एह दूनो गीत में 'सुगना' आ 'हिरना' रेखियाउठान- नवहा लोग के कहल गइल बा। एगो पाँख बाला आ एगो सींगवाला तमाम तरह के बल-बेवँत से भरपूर। दूनो खातिर ई समय बहुते खराब चल रहल बा। जवन जगह चाहीं नवहा लोग खातिर जतना प्रेम आ दुलार, रोजी-रोजगार- कुछो नइखे रहि गइल। करुणा आ व्यंग्य के अद्भुत मेल बा एह दूनो गीतन में-'तोहर असरा उजारि, छानल जात बा बजार, तोहरा हिचकी क लागल बाड़न गहँकी हजार, केकरा आगे जाके लोरवा चुअइबऽ हिरना।' शिवमंगल सिंह 'सुमन' के एगो कविता ह ''हम पंछी उन्मुक्त गगन के।'' एह कविता में कवि गुलामी आ आजादी के द्वन्द्व के चित्रण करत बा। एह में पंछी आपन बात अपने कहत बा। कवि अपना के अलोता क देले बा। कमलेश राय अपना गीत में अपना कवि के अलोता ना, एकदम सोझा रखले बाड़न।

सुमन जी के पंछी के मन में गुलामी के कुप्रभाव के बोध के साथे-साथे आजादी के प्रति ललक के

www.bhojpurisahityangan.com

भाव बा- एह गीत प चर्चा के क्रम में रामजियावन दास 'बावला' के एगो कविता के एगो प्रसंग इयाद आवत बा। हिरनी अपना बच्चा से बतावत बिया कि एही जंगल में हमार हिरन एक दिन मार देल गइलें आ केहू एह पर विचार ना कइल। हिरनी के बात में तार्किकता के साथ-साथे मार्मिकता भी बाटे। 'बावला' के हिरनी अपना 'गदेला' के समुझावत बिया आ कमलेश अपना 'सुगना' आ 'हिरना' के जवन अबहीं आल्हर बा, भा भुलाइल, 'अल्हेला' बा। लेकिन 'गदेला' त कतो से नइखे। कमलेश राय के गीत 'सब गाई कजरी-मल्हार' में जीवन, संस्कृति आ प्रकृति के विविधता के प्रति स्वागत- सतकार के भाव उभरत बा- स्वर्ण श्रृंखला के बन्धन में अपनी गति उड़ान सब भूले। बस सपनों में देख रहे हैं तरु की फुनगी पर के झूले।

कमलेश राय अपना 'सुगना' से कहत बाड़न, ओह सुगना से जवना के सुभाव में गुलामी रचत-बसत जा रहल बा, जे 'व्यवस्था' द्वारा 'अनुकूलित' होत जा रहल बा- ''पाँखि अछत तू बाड़ऽ, पाँखि बिना आँखि अछत तू बाड़ऽ, आँखि बिना पिंजरा भर बा, तोहरा पाँव के पसार लोहे क झिरिखिरी से जोहऽ, तू बयार तोहरो उड़ान दाँव पर आल्हर परान दाँव पर।'' सुमन जी के 'पंछी' के पासे कल्पना बा, उड़ान बा, आत्मबोध बा आ कमलेशजी के सुगना के पासे ई सब गायब बा। ऊ एकदम परथकू बा, हकबकाइल। समय ओकरा प्रति कतना संवेदनहीन बा, ओकरा खिलाफ कतना कुल्हि साजिश रचाइल बा, ई ओकरा के बतावे के परत बा। कमलेश जी बतावे के ई अधिकार आ दायित्व ओकरा के 'सुगना' आ 'हिरना' कहि के पवले बाड़न। ई दूनो प्रतीक ऊ 'लोकजीवन' से उठवले बाड़न। ऊ अपना 'सुगना' आ 'हिरना' के ओकरा 'अबोधपन' में ले जाके, ई दायित्व पवले आ निबहले बाड़न। बाकिर इहाँ ध्यान देवे के बात बा कि 'लोकजीवन' अपना 'हिरना' आ 'सुगना' के दुसले कबो जरूर बा, लेकिन दुतकरले कबो नइखे। ओकरा प्रति सहानुभूति के भाव हमेशा रखले बा। एह गीत में अइसन लागत बा कि कवि सहानुभूति के, सहिष्णुता के आपन हाथ अपना बगली में डालि के रखले बा। कवि के स्वर शिकायती जादे हो गइल बा। परिस्थिति के जटिलता एह गीतन में टूटत नइखे लउकत। युवा समुदाय के ओकरा स्वाभाविक टूटन, पीड़ा आ आक्रोश से एकदम अलगा देवे जइसन एगो बात, तनी घुमा-फिरा के ही सही, जरूर उठि सकत बा।

''जइसे फुलवरिया के रंग-रंग फुलवा, बगिया के करे गुलजार, रंग-रंग बोली बानी रंग-रंग लोगवा, धरती क हमरा सिंगार।'' द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी के एगो कविता ह 'हम सब सुमन एक उपवन के' ओकर एगो बन्द एह तरे बा-''रंग-रंग के रूप हमारे अलग-अलग हैं क्यारी-क्यारी, लेकिन हम सबसे मिलकर ही इस उपवन की शोभा सारी।'' कमलेश राय के गीत निश्चित रूप से अपना समय से संवाद के नतीजा ह। इहाँ ई अपेक्षा जरूर बनत बा कि कवि जिनगी के अउर अनेक क्षेत्रन के तरफ भी ध्यान देवे।

❁❁❁

कवि/लेखक लोगन से निहोरा

(1) रचना मौलिक अ सामयिक होखे के चाही।
(2) रचना के टाइप कई के भोजपुरी वार्ता के ई-मेल में भेजाई।
(3) जातियता, सम्प्रदायिक्ता युक्त रचना के न सकारल जाई।
(4) रचना के साथे आपन पासपोर्ट साइज फोटो भी भेजब।
(5) कवनो रचना सम्पादक मण्डल के स्वीकृति के बादे छापल जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

लोरिकायन कथा

चनवा

- अवध बिहारी मितवा

(गतांक से आगे)

...शाम होत होत लोरिक केबारात सुहवल नगर पहुँचल। सोन नदी के किनारे बसल पहाड़ी पर राजा बामरी के विशाल किला रहे। किला से सटल चौड़ा समतल मैदान रहे जहाँ शम्भू सागर नाम के विराट सरोवर रहे। चारों ओर सुन्दर बाग-बगइचा, फुलवारी रहे। सरोवर आ बाग केबीच में समय-समय पर उत्सव होखत रहे। लोरिक केबारात शम्भू सागर पोखरा केमैदान में टिकान कइले रहे। तम्बू-कनात परे लागल आ भोजन-व्यवस्था के तैयारी होखे लागल। मंजिल पर पहुँचि के बरियात बीर खुश हो गइल रहन। अपना-अपना हिसाब से डेरा पड़ि गइल। जवान कसरत आ व्यायाम करे लगलन स। लोरिक उस्ताद अजई से कहलस - ''ए मिता, इहाँ तोहार ससुरार ह, जान पहिचान बा। सवाल ई बा कि रसद-पताई कम हो गइल बा, कौनो बड़ बनिया से तत्काल सम्पर्क साधे के होई। खान-पान के प्रबंध जरूरी बा। विचार करिके ही बागी होखे केबा, सामान मांगला प इनकारो भी करि सकेला।'' ई बात के चौधुरी भी सुनि लिहलन। आ कहलन - ''अरे केहू बनिया बराई से उधार होई त पाछे दियाई। बनिया बा त एतबार करबे करी, चल रे अजड्या हम चलत बानी।'' कहि केदूनो लोग हँसे लागले। काहे से कि चौधुरी पोरे-पोर बीर रस से भरल रहलन।

लोरिक कहलस - ''बाबूजी, बनिया दोकान पर ही लोहा मत लगा दीहब।'' चौधुरी कहलन - ''ना हो, लड़ाई आ सगाई त संगे बा, बनिया से का मतलब।'' अजई आ चौधुरी नगर सेठ माहिराम कीहाँ पहुँचलन। सबसे परिचय भईल, राम-सलाम भइल। रसद-सामान लेवे केबात सुनि के सेठ चिहुँकि गइल - 'एतना ढेर सामान, पचास हजार-लाखन लोगन खातिर होई, बात बुझात नइखे। एतना में त गोदाम खाली हो जाई। ई बतकही ह कि मजाक?' अजई बतवलन कि मजाक ना, ई साँच ह। सेठ माहीराम के अचरज भइल कि एतना रंगदारी काहें, का ह अजई, कारन का बा? अजई बतवलस ''कि गौरागढ़ से सुहवल में बारात आइल बा। राजा बामरी के राजकुमारी सत्या मदैनी के शादी होई आ संगे-संगे सुहवल नगर के तमाम जुबतियन खातिर भी दुलहा आइल बाड़न। अबकी सुहवल के उद्धार होई।''हं।'' सेठ माहीराम झनझना गइल 'ना बरिच्छा, ना तिलक, एकाएक बरियात आ गइल! ना भगब, हमरे से मजाक करे के मिलल। अजई समझवलस - 'मजाक ना, साँच ह। सीधा से होई त ठीक, ना त मोल लागी।' सेठ कहलस - 'हँ, मोल त लागी, दाम भी चाहीं। चौधुरी कहलन - 'दाम ना त सेंतिहा तोहसे थोड़े माँगल जात बा। आ दाम कम होई त उधार ना लगईबा का? सुनले बानी कि गौरागढ़ केसोभन महाजन आदि से तोहार सम्पर्कभी बा। नाव-जहाज से माल-सामान के आवाजाही भी होला। तोहरा लगे सामान बा त देबही के परी। गौरागढ़ के लोगन के इनकार सुने के आदत नइखे।' चौधरी के कड़क बात सुनिकेसेठ माहिराम घबड़ा गइल। ओकरा बुझाइबे ना करे कि का कहे। अजई समझवलस - 'हर शर्त पर बियाह होई। तोहरो बेटी त उमरदराज भइल आ कुँवारे बिया। सोच-विचार ल। डेराये के नइखे, पाई-पाई चुकता होई।' गौरागढ़ से केहू के डर नइखे। हमार पुरान नाता-रिश्ता बा। एक ओर पहाड़ आ सरोवर केलीला में पड़ल नौकर-चाकरन के बोलवलन। सामान के व्यवस्था खातिर गाड़ी आदि जुटावल गइल। बीर नौजवानन केरसद दियावल गइल। बैल-गाड़ीवान लौटि के अइलन। सब लोग खा-पी के सूति गइल। सत्या मदैनी के भी शम्भू सागर पोखरा पर जुटल हुजूम के खबर भइल। ओकर गुप्तचर खबर लिहलन। लोरिक दल केजमावड़ा देखि केगुप्तचर भी चौकन्ना हो गईलन। सबेरे पोखरा पर स्नान-पूजा खातिर राजकुमारी के आवे के खबरि भइल। अजई देखलस आ लोरिक के चेतवलस- 'देख लोरिक, जुबतियन में जे सबसे

www.bhojpurisahityangan.com

आगे बाड़ी, उहे राजकुमारी सत्या हई, चिन्हि ल।' लोरिक देखलस त देखते रहि गइल। अधा गइल। जइसन भइया ओइसन भौजी। विधना गजबे जोड़ी बनवले बाड़न। राजकुमारी केदेख के ई अनुमान लगावल जा सकेला कि भवानी पार्वती अइसने होइहुन। साक्षात् देवी केरूप में प्रकट हो गइल बाड़ी। सौंदर्य के दैवीय स्वरूप-साक्षात् श्रद्धा। राजकुमारी सरोवर के मैदान में अनजान नौजवानन के भीड़, दंड-बैठक कसरत आ हथियारन के अभ्यास करत अउर उन्हन केविशाल-विकराल शरीर देखि केघबरा गइल। मन में सम्भावित खतरा के अनुमान हो गइल। सखियन केसंकेत दिहलस कि पूजा करिके वापस चले के होई। शादी-विवाह से वंचित सखी-समाज की आंखिन में आशा-उल्लास केचमक झिलमिलाए लागल। सुघर-सुगठित जुवकन के सुन्दर रूप, बल, शक्ति देखत रहली। सखियन केसाथे राजकुमारी मंदिर में प्रवेश कइलस। घंटा-घड़ियाल, शंख बाजल। धूप, अगरबत्ती चन्दन आ फूलन के सुगंध वातावरण में फैलि गइल।

लोरिक अजई से पुछलस- 'ए मिता, मंदिर से लौटत केबेर हम राजकुमारी से सलामी परिचय क लीं का?' अजई मुस्करा के हुँकार भरि दिहलस। अजई एक ठो योजना बनवले रहे कि पचास की गिनती में सुन्दर बाँकेनौजवानन केटीम झाड़ी में छिपा देले रहे ताकि सखियन से देखा-देखी आ तनी सा बात-कहाव हो जाय। ओही समय सखियन के टोली मंदिर से निकल के महल की ओर चलि दिहलस। 'भौजी के सादर नमस्कार। हम बलिया बसुधा केगौरागढ़ के लोरिक हँई। बड़का भइया संवरू केतोहसे बियाह करे बदे बारात लेके आइल बानी।' लोरिक एक साँस में बोलि गइल। राजकुमारी एगो सुन्दर बीर नौजवान केढिठाई देखि केअचकचा गइल। बिना बियाह ई शरारती हरकत करे वाला गजबे साहसी बा, विश्वासी बा। खुशी आ खीझ के संगम भइल। तबले अजई प्रकट भइल 'हम अजई हई, हमरा के त राजकुमारी चिन्हते बाड़ी।' बीर लोरिक जे कहलन ह, ऊ सत्य बा। राजकुमारी कहली- 'ई हरकत ठीक नइखे।' कहि के चलि दिहलसि। ओने नौजवानन केटीम सखियन केघेरि के मजाकिया बोलबाजी करत ई बतवलस कि अब एको लइकी सुहवल केकुँवार ना रहिहन स। राजकुमारी केसाथ सबकेबियाह होई। हमनी सब सादर आइल बानी जा। सखियन में खुशी केलहर दौड़ि गइल। जबाब में खिसियाहट भरल मुस्कराहट। सत्या मदैनी के संकेत पर सखियन केटोली तत्काल चलि दिहलस। सुहवल राजमहल में दुतियन द्वारा खबरि पहुंच गइल।

गुस्सा, उन्माद के हलचल राजा बामरी के भइल। पोखरा केभीड़ के 'शादी-बियाह' वाला इरादा आ इन्तजाम सहित तैयारी के ब्योरा सुनि के पगला गइल। निहायत क्रूर शासक बामरी केबलशाली सत्ता केचुनौती देवे वाला कौन पैदा हो गइल ! अरे! मतिभ्रष्ट दिमाग, बामरी के खिलाफत करे वाली सोच ! ई सेना सहित चढ़ाई बा कि शादी खातिर बारात आगमन ! बामरी के आँख से ज्वालामुखी फूटे लागल। चेहरा फौलादी कड़ा हो गइल, जइसे आसमानी बिजली कड़कल। बामरी गरजल - ''बेटा झिंगुरन ! बलशाली, जाँबाज सैनिकन सहित जाके मार-काट रौदि द। बारात लेके जवन बदमाश गोप छोकरा लोरिक आइल बा, ओके बान्हि के ले आव''। झिंगुरन हुँकार भरलस - 'बाबूजी सरकार के आज्ञा के तत्काल पालन होई। बामरी बोलल- 'हम कौनो से काहे डरीं डराई रे! हमार छह-छह गो बलवान बेटा। जेकर दस हाथी से बेसी जोर वाला दुर्दान्त बेटा राव गजभील होखे, बाघ से बेसी ताकत जेकर विक्रान्त बेटा सिंह झिंगुरन होखे, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव जइसन शक्ति वाला जेकर कुशेल्हा वगैरह बेटा होखन स, ओसे बेसी ताकतवर केबा रे? गुण्डा, मवाली, मनबढ़न के औकात बा बामरी सरकार से टकराए के! इज्जत पर डकैती डाले के ई पहिली शरारत के तहस-नहस करि देवे के होई।'' झिंगुरन सेना लेकेपोखरा पर पहुँचि गइल आ ललकरलस- ''केबा लोरिक? आवे सामने!' बीर लोरिक ओह समय दूसरी ओर विचार-विमर्श करे गइल रहे, एह मौका पर उहाँ ना रहे। अपनी गोल से अजई झिंगुरिया से निपटे खातिर वीर देवसी के भेजलस।

देवसी कहलस कि- 'हम देखत बानी।' देवसी तलवार आ गदा साधे चलावे में माहिर रहे। बड़ा जोग नौजवान रहे। झिंगुरन बहुत फुर्तीला रहे। ऊ लगातार झटका आ चकमा देखावत दू गो खतरनाक हमला कइलस। वीर देवसी पैंतरा मारि के दूनों बेर बचि गइल। देवसी के वार से पहिले तिसरा झटका

www.bhojpurisahityangan.com

आ गइल। एह बेर देवसी के जान त बचि गइल बाकिर जाँघ में तेगा के घाव लागल आ ऊ गिर गइल। झिंगुरन दिवाना जइसन चिघरल, अरे ई त गिरि गइल रे! अब कौन आई, आवऽ, आवऽस, तोहनों केआज बुझा जाई। कायर लफंगा! अजई अपना गोल में तकलस कि भंट्टा चमार लड़े खातिर उठि खड़ा भइल। ऊ तलवार केधनी रहे। पैंतरा मारि के आगे बढ़ि गइल। दुसरका वार रोकि लिहलन। भंट्टा झिंगुरन के तलवार से उलझि गइल। तत्काल तीसरा वार झिंगुरन कइलस। भंट्टा केजान बचि गइल मगर जाँघ घाही हो गइल। ओही समय बीर लोरिक आइल आ हाथ में बिजुलिया तेगा लेकेखड़ा हो गइल। कोमल, मलय-कान्त किशोर लोरिक केदेखि के झिंगुरन प्रभावित भइल।

लोरिक कहलस - ''बड़ा खराब स्वभाव बा सुहवल वालन के। अरे सौभाग्य से तोहरी सब केबहिन-बेटी के उद्धार करे खातिर आइल बानी आ बाराती सभके दुश्मन लेखा व्यवहार करत बाड़स! पाहुन के पूजा कइल जाला। झिंगुरन चिलाइल - 'आपन नाम बताव रे बबुआ ! तोर उमर खेले-खाये वाली बा, कइसे एह जंग में उतरि गइले? तोर बोली बड़ा तीत बा!' लोरिक जबाब दिहलस - 'हमार नाम कुँवर लोरिक, गौरा बलिया बसुधा वाला ह।' झिंगुरन हँसि के बोलल - 'कुँ कुँवर लोरिक, कुँवर उग्रपाल के कि महिपाल के?'लोरिक बोलल- ''कुँचर गोपाल के। बतियाव मति, वार कर।''

सुनते झिंगुरन तलवार चलवलस। आसमान में उड़ि के लोरिक बाँचे लागल। झिंगुरन के दुसरका, तिसरका वार लोरिक बचा गइल। झिंगुरन खिसिया के चौथा वार मुंगदर फेंकि के कइलस। पैंतरा मारि केलोरिक ओहू से बचि गइल। झिंगुरन के बिस्वास रहे कि मुंगदर के वार ब्रह्मास्त्र होला, ओहू से ई बचि गइल। लोरिक बोलल - 'चल, गीदड़ साला झिंगुरिया, पाँचवा वार भी कर ले।'लोरिक के बात सुनिके झिंगुरन उछल मारि के आसमान में उड़ल आ तलवार-भाला से साथे-साथ हमला कइलस। लोरिक जगह पर कन्नी काटि केनिकल गइल। लोरिक दुलत्ती के मरलस। झिंगुरन गेंदा जइसे बारह हाथ दूर फेंका गइल। लोरिक बोलल - 'उठि जा, महल में जा आ अपना घमण्डी आ निर्लज्ज बाप से बता दे कि खुशी से बियाह क केविदाई कर दे, ना त अंजाम का होई, ई बता दिहे। सुहवल के हरामखोर भुइँया भूपाल बामरी के।' झिंगुरन गरजल - 'हमसे लड़ाई कर, हमरा पर अब तू वार कर। हमरो वार देख।' लोरिक मुसकुरायल - 'तोहार अरमान पूरा करि देत बानी, कुलकलंकी लतखोर! बहिन-बेटी केकुँवार राखि केइज्जत कमात बाड़स। हम का वार करीं, एक ही बेर में बिदा हो जइबऽ। एक ही वार करब, लेकिन तोहरो वार के जवाब देइब। झिंगुरन एक साथ भाला फेंकि के मारलस आ झपटि के तलवार से जोरदार वार कइलस। लोरिक पैंतरा मारि केबचि गइल आ झटपट बिजुलिया खाँड़े से झिंगुरन के गर्दन काटि दिहलस। लोरिक के जय-जयकार लागे लागल। सुहवल में कोहराम मचि गइल।

क्रमशः जारी

अवधबिहारी मितवा - नगरा, बलिया

❁❁❁

गीत

- अवध बिहारी मितवा



हमारी सौत भइली
श्याम के बंसुरिया ना
हरि के ओंठ पै विराजै
हम बोलिलां ना ही लाजै
छेड़े मन चाही धुनिया लगरिया ना।
करे दे ना कौनो बात
रहे हरदम साथ
जाये देवै नाहीं उनकी
कगरिया ना।।
करे रात के ठिठोली
बोले बिरहा के बोली
तब छोड़ि भागीं निदिया सेजरिया ना।।
सौत डाह ना सहाला
मोहन माधव नंदलाला
मौज बन जाये मितवा बदरिया ना।।

www.bhojpurisahityangan.com

आदमी आ आदमी के जीवन

- गिरिजा शंकर यादव



आदमी के आपन ई एगो कठिनाई बा कि ऊ जेवन बा-तेवन कि ऊ जिनगी के अपनी बस में कइल चाहेला। इहवें से ओकर संघर्ष शुरू हो जाला। आदमी के मन में ई भाव जागेला कि हमनी कऽ कबो बूढ़ ना होइती जाँ। लेकिन अइसन कबो भइल नइखे.। आदमी के जीवन ओह नदी की तरह बा जेवना में पानी हमेशा बहत रहेला। ई ना कि ओह पत्थर की तरह की ऊ स्थिर एक जगह पड़ल रहेला।

जीवन के समझे खातिर नदी के चलेके पड़ी, आदमी जब जीवन के बस में कइल चाहेला, तब ओकरे हाथ से जीवन दूर होखे लागेला। जे मुठ्ठी बन्द राखेला, ओकरा हाथ से पानी चू जाला। जे हथेली खोल देला, ओकरा हाथ में पूरी नदी आ जाले। आदमी जब एह दुनिया में आवेला तऽ ऊ हर वस्तु पर, हर समान पर आपन नाम लिखल चाहेला। ऊ कहेला कि ई हमार ह, ई हमार प्यार ह, ई हमार उपजावल ह। लेकिन रउवा सब सोचीं बिचार करीं कि आसमान कबो केहुक भइल बा? नदी कबो एक किनार पर लागलि बा? ए सवालन के जवाब बा-नाही, नाही, कबो नाही।

रउवा सब नदी के देखीं सब, ऊ अपने खातिर ना बहेले। ऊ कबो ना कहेले कि हम सबका ले बड़ हँयी। ऊ पर्वत से निकलिके चट्टान से टकरात रहेले । खेत में लागल फसलन के सींचत रहेले। अन्त में ऊ समुद्र में जाके मिल जाले। अपनी ए सगरी राह में नदी कबो ना कहलसि कि अब हम सीहरि गइल बानी। थकि गइल बानी, अब हम रुकब, थकान मिटाइब। लेकिन आदमी तऽ राह में कठिनाई देखि के रूकि जाला। लेकिन नदी कठिनाई आइला पर आपन धारा बदल देले । कबोऽ झरना बनि जाले आ कबो धारा बनि जाले एही के बुद्धिमानी कहल जाला।

आदमी के साथ में एगो ई कठिनाई बा कि ऊऽ जीनगी के आपना बस में राखल चाहेला। इहेवें से संघर्ष शुरू हो जाला। आदमी सोचेला कि लोग ओही तरह से रहे, जेवना तरह से हम उनका के देखल चाहतनी। आदमी चाहेला की प्रेम ना बदले, आदमी बूढ़ ना होखे। लेकिन अइसन कबो होला नाहीं। जीवन जेवन बा, एगो नदी की तरह हऽ। जब एगो बढ़हन वृक्ष (पेड़) तनिके कठोर हो के खड़ा हो जाला, ते ऊ आँधी-पानी में ढहि जाला। लेकिन छोट-छोट पौधा, घास-फूस झुक जाले, त ऊऽ बचि जाले। नदी कबहूँ मुड़िके, पिछे घुमिके आपन धार के ना देखेले। ऊऽ हमेशा आगे बढ़त रहेले। एही से ओकर पानी साफ-सुथरा रहेला। लेकिन आदमी बीतल बातन के लेके ढोवत रहेला। एही से ओकर मन मइल हो जाला।

आदमी क मन ओह पानी की पोखरी की तरह बा, जेवन कबो शान्त ना रहे, स्थिर ना रहे। ओकरा में ओकर चाहत वाली हवा चलत रहेले । एही से ऊ अपनी असली रूप के ना देखि पावेले। जब पोखरी कऽ पानी स्थिर होला, शान्त होला, तऽ ओमें आसमान लउके लागेला। अगर आदमी जीवन के समझल चाहता तऽ नदी के पास में जायेके पड़ी। देखे के पड़ी कि नदी कऽ पानी कइसे बहत बा, रूकत नइखे, कवनो शिकायत नइखे करत, कवनों घोषणा नइखे करत। लेकिन ऊ, आपन रास्ता

www.bhojpurisahityangan.com

बनावत चलत हवे। बुद्धिमान आदमी जीवन से लड़ाई ना कऽ के ओकरा साथ-साथ चलत रहेला। भूख लागे त खाना खा ले। जब दुःख, आफत, बिपति आवे त आवे दे। जे आवेला से जाला, एसे घबड़ाइल ना जाला। जे चलि जाला, ऊ फेरू कवनों ना कवनों रूप में लौटेला। नदी हर पल बदलत रहेले। फिर भी ऊ नदी ही रहेले। आदमी भी एह नदी की तरह होला।

आदमी लड़कपन वाला आदमी ना रहिजाला, त फिर ऊ केकरा के बचावे के प्रयास करेला। जे अपना के स्थाई मानेला ऊ सबसे अधिक डेरा के जीवन जीयत रहेला। जे बदलाव के परिवर्तन के मानेला, ओकर उद्धार हो जाला, सुधार हो जाला, मुक्त हो जाला। उद्धार आ मोक्ष कवनों बहुत दूर नइखे। ऊऽ त ओही घरी जन्म लेलेला, जेवना घरी आदमी जीवन के अपना बस में कइला के बात छोड़ि देला। तब आदमी के मालूम होई कि प्रकृति अपना अस्तिव से हमरा के ऊपर उठवले बा। ओही तरह से ऊपर उठवले बा जेवना तरह से नदी पेड़-पौधन के पतई के अपना पानी के ऊपर बहाके ले जात बा। लेकिन पतई नदी से ना पुछेले कि समुद्र अबहीं केतना दूर बा। ऊ पतई केवल बहत चलि जाले। शायद जीवन क सबसे बड़ रहस्य इहे ह।

हम लोगन के बदलाव (परिवर्तन) स्वीकार करे के चाहीं। जीवन के मुठ्ठी में कैद कऽ के रखल कऽ कोशिश कईल सबसे बड़ा डर हउवे। जे नदी की तरह बहल सीख लेला, बदलाव (परिवर्तन) स्वीकार कऽ लेला, ऊऽ भीतर से मजबूत, शान्त आऽ सच में जीवित हो जाला। अस्तित्व प्रकृति सदा-सदा ओही के सहारा देले, जे कठोर नाहीं बल्कि पानी की तरह सहज, सरल, बिनयशील रहला के साथे-साथे आगे बढ़त रहेला।



❁❁❁

तिरंगा चोली

- राम कुमार गिरी (चम्पराणी)

गोड़ लागी पंईया परी,सईया हाथ जोरी ।
एगो मंगाई दी राजा तीन रंगवा
के चीर चोली ।।----टेक
उपर में होखे पिया रंगवा केसरिया,
बिचवा में उजर रंग होखे चुनरिया।
चक्र चलत बीच में ,निचे हरी-हरी ।।
एगो मंगाई दी --------2
मंगल पाण्डेय के लिखल होखे बोली,
आजाद इलाहाबाद में ,चलत होखे गोली ।
खुदी राम, भगत सिंह, चढल होखे सूली ।।
एगो मंगाई दी-------2
अस्सी के उमरिया में भईले जवान हो ।
अंग्रेज का सिपहिया से युद्ध घमासान हो।
गंगा में चढावस भूंजा ,जब बांह में लागल गोली ।।
एगो मंगाई दी -------2
आजाद हिंद फौज के निकलत होखे टोली ।
नेता जी सुभाष बाबू चढल होखस घोड़ी ।
सभे केहु बोलत होखे जय हिन्द के बोली।।
एगो मंगाई दी ------2
आरी-पारी लिखल होखे इंकलाब के बोली,
लक्ष्मी बाई, राणा प्रताप,शिवा जी के टोली।
बिचे अंचरी पर जालियां वाला में ,चलत होखे गोली
।। एगो मंगाई दी ------2
पीठ पर अम्बेडकर जी लिखत संविधान हो।
राजेन्द्र बाबू दुनिया में महान हो ।
छतिया पर गांधी बाबा, आधा पहिरे धोती।।
एगो मंगाई दी ---2
राम कुमार लिखस रोजे आजादी के बतिया।
घर पड़े मठिया अउर थाना केसरिया।
आन्दोलन सुरु कईले बापू ,चम्पारण के ओरी ।।
एगो मंगाई दी राजा ----
तीन रंगवा के ---

www.bhojpurisahityangan.com

समाचार

भोजपुरी भवन नाम वापस हो - बलिया क भाषाई अस्मिता के सम्मान हो

(जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय में भोजपुरी के साथ न्याय क माँग)

बलिया। बलिया खाली उत्तर प्रदेश के एगो जिला ना ह , ई ह भोजपुरी भाषा , लोकसंस्कृति आ जन चेतना के ऐतिहासिक भूमि । एह क्षेत्र में स्थापित चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय से भोजपुरी समाज के ई स्वाभाविक अपेक्षा बा कि ऊ भोजपुरी भाषा , साहित्य आ संस्कृति के संरक्षण आ विकास के प्रमुख केन्द्र बने। विश्वविद्यालय के अभिलेख में परिसर में एगो भवन के नाम हजारी प्रसाद अकादमिक (भोजपुरी भवन) के रूप में रहल । लेकिन 2023 में भोजपुरी भवन हटा दिहल गइल । सवाल ई बा कि भोजपुरी की माटी में विश्वविद्यालय जेकर जिम्मेदारी बा लोकभाषा के बढ़ावा दिह ल ओही के रवैया अइसन । जब पूरा देशगुलाम रहे, 19 अगस्त 1942 के बलिया में स्वतंत्र सरकार के घोषणा भोजपुरी भाषा में भइल । चित्तू पांडेय के एह ऐतिहासिक भूमि पर , भोजपुरी भाषा के उपेक्षा गंभीर मसला बा । एही के ले के प्रगतिशील भोजपुरी समाज की तरफ से महासचिव रवीन्द्र नाथ यादव आ एडवोकेट लखुराम यादव कुलपति प्रो0 नरेंद्र कुमार शुक्ल के एगो ज्ञापन दिहले । एही से संबंधित ज्ञापन जिलाधिकारी बलिया के भी दिहल गइल जवन कुलाधिपति ध राज्यपाल के सम्बोधित रहे।

प्रमुख माँग :

1. 'भोजपुरी भवन' के नाम पुनः बहाल कइल जाय ।
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी के सम्मान में अलग से अकादमिक केन्द्र बनावल जा ।
3. विश्वविद्यालय में स्वतंत्र ' भोजपुरी अध्ययन केन्द्र /विभाग' बनावल जाय ।
4. भोजपुरी भाषा आ साहित्य में स्नातक , परास्नातक आ शोध के समुचित व्यवस्था कइल जाय ।
5. भोजपुरी लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, लोकइतिहास आ मौखिक परम्परा के डिजिटल अभिलेखागार बनावल जाय ।
6. भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति के राष्ट्रीय स्तर के अध्ययन अनुसंधान केन्द्र के रूप में विश्वविद्यालय के विकसित कइल जाय । 7- भवन के नाम परिवर्तन के प्रक्रिया आ ओकर निर्णय के प्रशासनिक आधार के सार्वजनिक कइल जाय । राज्यपाल से हस्तक्षेप की मांग खातिर कलेक्ट्रेट परिसर में जोरदार प्रदर्शन की साथ नारा बुलंद भइल ।



एह धरना-प्रदर्शन की कार्यक्रम में मुख्य रूप से महासचिव रवीन्द्र नाथ यादव , प्रभारी प्रवीण कुमार सिंह, संरक्षक डा० भोला प्रसाद/आग्नेय', कु रेखा कवियित्री, फतेहचंद बेचौन, युवा सचिव कुंदन सिंह, फेडरेशन सचिव ओमप्रकाश, जिलासचिव शिवनाथ, विनोद कुमार यादव राज नारायण यादव, परमा नन्द आदि लोग भाग लिहल ।

www.bhojpurisahityangan.com

समाचार

भोजन देवे वाला भूखा फिर कइसन आजादी !



मऊ । प्रगतिशील भोजपुरी समाज सदस्यता अभियान के दरम्यान सदस्य लोगन के शिक्षित प्रशिक्षित करे खातिर धवरिया साथ में कार्यशाला के आयोजन भइल । संयोजन कइले प्रगतिशील भोजपुरी समाज के प्रभारी आ Pss के संगठन सचिव प्रवीण कुमार सिंह । कार्यक्रम के संबोधित करत आचार्य पुण्येशानंद चीफ सेक्रेटरी PU दिल्ली सेक्टर, कहली कि आज दुनिया के आम आदमी दै नंदिन जीवन के ले के कराह रहल बा भारत खासकर भोजपुरी क्षेत्र के हाल अउरी बेहाल बा । कवनो रास्ता सूझत नइखे । अइसना में प्राउत के समाज आन्दोलन ही दुनिया खातिर एगो आउर खाली एगो सहारा बा ।

पहिले समाज के ओकरी सामाजिक आर्थिक विशेषता की आधार पर वर्गीकरण फिर आत्म निर्भरता खातिर नीति, योजना, कार्यक्रम के संचालन । एही से बनी आपन तंत्र यानी स्वतंत्र । भोजपुरी समाज अइसने एगो इकाई ह । सामाजिक भावना के भूमि पर उतारि के हर मनई के सही अर्थ में आजादी के दियावल इहे ह समाज आंदोलन । अपना सम्बोधन में भोजपुरी समाज के महासचिव रवीन्द्र नाथ यादव बतवली कि ईक्षेत्र कृषि प्रधान बा । कृषि आज के टाइम में घाटा के सउदा बा। एह पर निर्भर किसान आ मजदूर आज त्राहिमाम कर रहल बा । जरूरत बा कृषि के उद्योग क दरजा दिहला के आ एह पर आधारित सहकारी, गैर सहकारी उद्योग की माध्यम से शत प्रतिशत रोजगार अउरी स्वावलम्बन के । प्रभारी भोजपुरी समाज प्रवीन कुमार सिंह कहली कि धनी भोजपुरी माटी के पूत के गरीबी दूर करे खातिर प्रगतिशील भोजपुरी समाज के सदस्य बनिके आन्दोलन करही के पड़ी दोसर कवनो रास्ता नइखे ।

विधि सचिव कुँवर राजेश सिंह के कहनाम रहे कि समाज के भोजन देबे वाला भूखा बा, घर बनावे वाला मजदूर बेघर बा, देश के रीढ़ युवा बेरोजगार बा, दिशा देबे वाला बुद्धिजीवी दिशाहीन बा , तिकड़मी आ भ्रष्ट पूँजीपती आ नेता मालोमाल बा । इ एकदम विधि विरुद्ध बा ।

कार्यक्रम के जिला साचिव राणा सिंह संगठन सचिव सोनू राजभर, केन्द्रीय पदाधिकारी रमेश राज भर, गाजीपुर जिला सचिव विनोद यादव आदि लोग संबोधित कइल । एहमौका पर मुख्य रूप से प्रधुम्न नारायण, अरविंद सिंह, आदित्य , मातवर सिंह , राम करन यादव, रामप्रकाश , संजीव , संजय वर्नवाल, जयप्रकाश आदि लोग रहे। संचालन राहुल कुमार देव कइले । हजारन की तादात में आइल महिला-पुरुष लोगन खातिर धन्यवाद ज्ञापन डीएस आजमगढ़ कइलीं ।

www.bhojpurisahityangan.com

समाचार

भोजपुरी आन्दोलन बनाम असली आजादी



आजमगढ़ । प्रगतिशील भोजपुरी समाज की ओर से चल रहल सदस्यता अभियान आ जन जागरण अभियान के क्रम में 15 अगस्त के आनंदमार्ग स्कूल रैदो पुर कालोनी के मनोरंजन हा ल में 'आजादी बनाम भोजपुरी आन्दोलन' विषयक परिचर्चा के आयोजन भइल । कार्यक्रम के संबोधित करत महासचिव भोजपुरी समाज रवीन्द्र नाथ जी कहली कि स्वतंत्रता के मतलब होला आपन तंत्र के अंगीकार कइल । अर्थात स्वावलम्बन , आत्मनिर्भरता , आपन व्यवस्था । परतंत्रता के मतलब भइल दोसरा के तंत्र । दोसरा की व्यवस्था पर निर्भर भइल । अर्थात गुलामी । आगे उहाँ का कहली कि हमनी के कहीं से भी स्वतंत्र नइखी जा। एही से जरूरत बा आत्मनिर्भरता खातिर भोजपुरी आंदोलन के जवना में आपन माटी , आपन जल , आपन जंगल , आपन पर्यावरण , आपन श्रम , आपन संस्कृति , आपन बोली आपन अस्मिता पर आधारित आपन तंत्र अपनी सहमति आ सौजन्य से अपनी जरूरत के बखूबी पूरा करे । इहे त स्वतंत्र के पहिचान ह जवना के दूसर शब्द में लोकतंत्र यानी लोगन के तंत्र जे इहाँके रहे वाला बा ओकर व्यवस्था ओकरा खातिर आ फिर पूरा समाज खातिर । अपना बाति के बिस्तार देत उहाँ का कहली कि भोजपुरी के समाज आंदोलन के बिना ,लोकतंत्र के मर्यादा के बचावे खातिर दोसर कवनो तरीका नइखे । प्राउटिस्ट यूनिवर्सल के चीफ सेक्रेटरी आचार्य पुण्येषानन्द जी भारतवर्ष के चउवालिसो समाज के आपन संसाधन , आपन संस्कृति ,आपन श्रम आ सहयोग पर आधारित स्वाभिमान आ स्वतंत्रता के हिफाजत खातिर समाज आन्दोलन की भूमिका पर चर्चा करत आजादी खातिर एक बार फिर से नईसोच आ संघर्ष के ऐलान कइलीं। PSS के आंदोलन सचिव प्रवीण कुमार देव आजादी की जश्न के औपचारिक बतावत एक बार फिर से पूँजीवाद जनित अंधविश्वास, ढ़ोंग , पाखंड , भ्रष्टाचार , अन्याय, शोषण आदि के मटियामेट करके असली आजादी खातिर लड़े की घोषणा कीं साथे प्रगतिशील भोजपुरी समाज के सदस्य बने के आहवान कइलें।

कार्यक्रम में दुर्गविजय , तारक, रामाश्रय , प्रसून राजन , रामायन रामचंद्र, राममिलन, रोशन शिवपूजन , कमलेश जिउती , राजेश ,ला लबाबू श लालबिहारी , मनोज , मातवर, मयंक, परमेश्वर, श्रीकान्त, विनोद, देवब्रत, धर्म वीर, दिनेश आदि लोग भाग लिहल । अध्यक्षता लालसा प्रसाद आ संचालन राहुल देव कइले ।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी राज्य बनावल जाई, भ्रष्टाचार मिटावल जाई।
रोटी, कपड़ा, घर, दवाई - शिक्षा, काम, दियावल जाई॥



भोजपुर प्रदेश
काशीराज

प्रगतिशील भोजपुरी समाज (केन्द्रीय) द्वारा प्रस्तावित

प्रगतिशील भोजपुरी समाज का ओर से जनहित में जारी

www.bhojpurisahityangan.com

RNI No.- 9928/65

ANDSLITE ®

Solar LED Home Lighting I Solar LED Lantern I LED Bulbs I LED Torches



ADD SUN TO your LIFE

Andslite is dedicated to brighten up your lives. For years, we've been creating effective ways to harness solar energy to provide you cost-effective electricity. Another effort in this course are Andslite provide quality and economical products.

UNIQUE FEATURES

- Energy efficient lighting products
- Strong ABS body & PC glass
- High power focused torch lights for long distance coverage
- Long backup rechargeable Study lights
- Solar lanterns and emergency lights for lighting homes & offices, ets.
- More than 50 LTD lighting products with 1 year warranty*



Manufactures of :

❁ **LED** Solar Home Lights and Lanterns ❁ **LED** Study Ligts
❁ **LED** Torch Lights & Head Lights ❁ LEDAC Bulbs & USB Laptop Light ❁ **Solar** Modules (3 Wp to 300 Wp)

ANDSLITE

AN ISO 9001-2008 CERTIFIED COMPANY

Scan to watch our fiim

Registered Office : 103, 2nd Floor, FIF, Patparganj Industrial Area, Delhi - 110092, INDIA I Tel.: + 91-11-22156913 I Fax : +91-11-42141253
Manufacturing Unit : Plot No. 1D-47, 48, 49, 50, 51, Sector - 7, IIE, SIDCUL, Haridwar - 249403 (UK), INDIA
Tel : +91-1334-239231, +91-9997739011 I Fax : +91-1334-239823
Mob -1334-239231, +91-9997739011 I Fax : +91-1334-239823
www.andslite.com I andslite.led@gmail.com I Call : 1800 11 6913 (Toll Free)

Like Us on Facebook
facebook.com/AndslitePvtLtd